

W. 11-11-200

Handwritten: 1873-1874

ASHA K. KHANNA

854

१५ नमानावाय
 यवकुन्दमनीतविवक्षायायति ह
 त्यकुं ४ सर्वात्मानमग्न्यामिन्दिय
 ॥ १४ ॥ सर्वरूपाय विदे। नित्यानन्दमयी
 पनात्तत्रावैयमायदिव्योमधि दत्तनी
 मिहविदितलाकेमुखदनिर्वाणलक्ष्मी
 पटी ॥ ॥ अथादिनावायलयामादा
 यत्रिसूत्रपुंकेलक्षजाववाहनलक्ष्मी
 कृतियरूविधानेनिलिखता ॥ तत्रादोदाह
 लक्ष्मी ॥ माहृत ४ पितृ ४ पुत्र ४ पुत्रः
 कृत्वाजितन्दिय ४ सर्वांगमानीमायरू
 ४ सर्वज्ञासुार्थतत्त्ववि ॥ यत्रायकावनि
 रता ॥ अथपूजादितत्यव ४ ॥ अमाद्यववः
 त ४ ॥ अमावदवदार्थयोगग ४ ॥ यागमा
 गर्जमसीधायीदवताहृदयगम ४ ॥ ॥ ॥
 त्यादियुलसमानागुवसागमसीयत ४ ॥
 गुवमाममनपुर्वक ॥ गुर्ववायानिमन
 मलुलादिकावय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मि गत्वामलुलपुर्वक ॥ निर्विघ्नरुल
 सीयिद्धि मलुलकवर्णपुर्ण ॥ ॥
 गुवपाश्रिमानन यजमानपुर्वाननीसि
 त्वा ॥ यजमानत ॥ आचम्य ॥ सूर्यार्थय
 ध्यराजनी ॥ यजमानस्यादिनावायलया
 यादोयविसूत्रपुंकेलक्षजाववाहनलक्ष्मी
 कृतियरूगुवमामनुनिमित्यर्थगुव
 वरुंदमायनीतम ४ पुर्वीतम ४ ॥ यामाया
 न्यनयादाद्य ॥ यन ४ वि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 पुनितिका १० ॥ तामया ॥ दीनवन्दनाकृत

यक ॥ १५ ॥ अथवालाह ॥ १५ ॥ अथादि ॥
 यजमानस्याति गुवपादाद्यनम ४ ॥ ॥
 तथेवहकार्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मले ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 व्याकुदनद्वयदीप ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 त्ववति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मसृष्टथात्तवआयकलनपवनकत्तनरु
 त्वयरूमान ४ ॥ यातान्तिमरुत्तममपेदि
 गयति ४ ॥ सर्वदयामथर्व सर्वज्ञानपदा
 तावतिदितनमिर्नभामितस्मयुगा ॥ ॥ ॥
 अथपुमलुलाकारे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तत्त्वदेदसितियन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जगत्कदि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नयादय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कृत्वावसाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मलुललपिर् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 उमधकटरुमदत ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तस्यादाप्रविता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 लपिता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कर्तृरुत ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 भाययन्तरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 काकवसूत्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यत्तवयतमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नयविलिनया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यतविति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कतुलिवसचदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पवीता नुदन रुतपक्वान्न नवय धूपदी
 पदापथ ॥ दक्षिणवर्तुणीं धृत्वा दी
 वादकः सप्तधुवतिकादक्ष १० यन्नेनाह
 तरुलपुष्पादिनीखनिधाय ॥ ॐ अथवा
 लाह ॥ ॐ अथादि ॥ यजमानमिति ॥
 पुनराममनुननिमित्तार्थः अथपुनरुल
 कालाय ॐ दमर्षतमानम ॥ स्वाहा ॥ ॐ
 दक्षिणवर्तुणीं यः सप्तधुवत्नादिपूजितं
 तदर्थं यष्टुहोमं मधुलक्ष्मणमायुषा ४
 मूलमनुषाया ॥ दक्षिण ॥ ॐ मनाहोत
 यतिषा ॥ स्वाहा ॥ ॐ मधुलायनमस्तु यैः
 वर्तत्वाधिपायवा ॥ ह्रुव ४ स्व ४ स्वतृपाय
 विश्वतृपायतनम ॥ १ ॥ संफसागवयर्थ
 नः संफदीपसमन्विता अथपुनरुल
 काली मधुलक्ष्मणतमाह ॥ २ ॥ यदुवम
 समीवम्य कर्तव्यसागवततः तन्मन्त्राः
 भामविम्वन् मनावम्यनैमाम्नीनमाम्यद
 ॥ ३ ॥ यथैव दारमहाविद्या मध्यापुत्रन्तु
 धामका गन्धपुष्पसमस्त्यर्थं तन्नाहं म
 धुलीनम ॥ ४ ॥ विश्वेद्यायाचिर्तत्त्वम
 हजानन्दलक्ष्मीं ह्यानक्रियात्ममाव
 र्त्तं विदुषमधुलीनम ॥ ५ ॥ यस्यादि
 नयान्नास्तिनमः स्वातर्तुवर्जितं अथपु
 नरुल काली मधुलीनतमाह ॥ ६ ॥
 अविकावायधुद्वय नित्यायपवमात्म
 नः प्रततायतनासक्तिं यूर्कतमधुलीनम ४

॥॥ अवेमधुलकं कृत्वा अष्टाङ्गद्वयतद्व
 तो। गुणपादाङ्गमयं। लिख्यमुपधिमान
 ने॥६॥ ॐ तिगुणमधुलकम् ॥ ॥
 यन४ गुण सुतिकावय॥७॥ अखधुमधु
 लाकारं चार्कयत यवायव। तत्पदं दर्शितं
 यन। तस्मै श्रीगुणवतनमः॥१॥ अकथामधु
 तत्त्व३ वाद्यनातीत। गायत्रीतकृतयनमी
 पार्क। तस्मै श्रीगुणवतनमः॥२॥ अज्ञानति
 मिर्वाधस्य ज्ञानां ज्ञनयलाकया। वद्वन
 नीवित्तिथन। तस्मै श्रीगुणवतनमः॥३॥ अना
 दिधाममीयार। व्याधिर्धर्मैकदतवा। नमः
 श्रीज्ञानवेद्याय। ज्ञानोपधीविधायिन॥४॥
 इवैकवागिथादीदी। ह्यैकत्वामलगयी।
 अकथ्याज्ञानसीदति। तस्मै श्रीगुणवतनमः॥
 ५॥ ज्ञानहाकि समानुटे। तत्त्वमालाविरु
 षली। रुकि मूकि यदातारं। गुर्वैवदयथा
 हवि॥६॥ अगुर्वगुणतर्वैव। यथा न्यगुव
 डातर॥ अन्धपिकर्मसाध्या। विमुच
 र्कनमा म्यद॥७॥ गुणवक्ता गुणविष्णु। गु
 णवधमहध्वनः। गुणदवजगत्सर्वं। तस्मै
 श्रीगुणवतनमः॥८॥ पादपीपुषमादनका
 यतवद्विदुलमा। विष्कारं दर्शितं यन। तस्मै
 श्रीगुणवतनमः॥९॥ ययययसमस्यन्तं।
 ययसर्वद्वयं जगत्। अस्मिन्यतिष्ठितं स
 र्वं। तस्मै श्रीगुणवतनमः॥१०॥ आह्लापमा
 दकृमथतसिद्धारुवा म्यद। नामयहन
 स्वामीय। आलीवदिददागुम॥११॥ अख

धुमधुलाकाली। शान्तयर्कनरुसुली।
 अखवहुसमाख्यातं। नयवत्वनमावय॥
 १२॥ यथाशिवस्मथाविद्या। यथाविद्यास्म
 थागुन। शिवविद्यागुण॥ अ० पूजयन्तः
 दसीरुली॥१३॥ नास्मि गुणयवादेवा। नास्मि
 गुणयवागति॥ नास्मि गुणयव॥ अ० ना
 स्मि वधुयवागुव॥१४॥ सिद्धिगनाथं स्तु
 गुर्वं पदम्य। खमाहमा। मयेपिदीपयुप
 नमानमस्या। मियदपदव। तवराववुप
 रुवकदकली॥१५॥ गुणयवाम्यमाजं
 पाकलु कडिकामगं। एवस्तुवायलिष्यनु
 रुकि मूकि मवाप्रया॥ ॐ तिगुणमुति ॥

यजमानस्य हस्तद्वयन। महीपुष्टा॥ ॐ
 कायगुडि४ गवर्णमसु ॥ ॐ वाकगुडि
 ४ गवर्णमसु ॥ ॐ चिरुगुडि४ गवर्णम
 ससु ॥ ॐ कायवाकचिरुगुडि४ गवर्णम
 ससु ॥ ॐ त्वेगतियर्वैरुतानी। मीम्बितवीव
 नावव। अन्धध्वनं। रुतानी। दृष्टावैप
 वमध्वनः॥ कर्मनामनसावाया। तद्वनाः
 न्यागतिर्मम। मनुहीनकियाहीन। रुकि
 हीनकाथेवव। अरुतवायहीनव। तन्प
 थयवमध्वन॥ ॥ ततामधुलविमर्जनं
 ॥ मधुलसुपय्य। तामूलदक्षिणशिष्या
 रुमनधृत्वा गुर्वदद० वाय॥ अग्निस्तु
 यतदिन॥ ॐ अ० आदि॥ ॐ रुगवनत्वय
 सादन। यकार्थमर्चितं तवा। अदिमिदि

यदददि. युव विष्णु नमोऽस्तु ॥ आम्
 दितामियस्त्वाथ सोमनः साधकं तव ।
 यस्मिन्दिनं ममावायं तदिने विजयीतु
 व ॥ गुरु इति सततं यः प्रसन्नो रोगो
 न भूयाः कथां सुविधिं विधर्मं भोतमस्तु
 युव वद ॥ मधुलास्ति तस्य विसु युव व
 दया ॥ ॐ ति पठित्वा ॥ ॥ ततो युव ॥
 यजमाना रिषकं दद ॥ ॐ द वस्यत्वा ॥
 वन्दन ॥ ॐ यदयका ॥ सिन्दुवा ॥ ॐ त्वं अ
 विष्टदा ॥ आशीर्वाददातव्यं ॥ ॐ पुर्कः
 त्वापुर्क ॥ ॐ ॐ द ० रुति ॥ ॥ ॐ तिल
 दाहमविधानं युव मामनुनमः सुलाचं
 न विधिः समाप्तः ॥ ० ॥

गताऽक्षर्याऽदिव्याचर्ये ॥ अगमाकवि
धिना ॥ ॥ ततागलयागदिकायाकवक
ठितविधाननगलनार्थमीतायकर्मनि
विध्नार्थ ॥ ॥ ततायवादकमाहः
अर्द्धकुर्यात् ॥ अथाममलसिद्धार्थ
मह अर्द्धवकावय ॥ हायुश्चयजमान
अथागकर्मसमापित ॥ सूतकादिनि
वृत्तिस्यात् ॥ कार्यायवादक ॥ ॐ तिय
वादक ॥

ततश्च गत्या द्वाव अग्निं कुरुतुमिच्छाध
न॥ रुमिखननं विधिवत्क॥ आवा
थानं सूर्यार्चयामा॥ अर्घ्याय यजने॥
वलिदापय॥ ॐ कौंठं रुतं वपवमरु

[illegible]

॥ वाक्क ॥ पुत्रा ॥ यजमानादिधक ॥
चन्दनाद्याः ॥ वृद्धिददभा ॥ सुं लोकाहाम
विधानरुमिखननविधिः समाकः ॥

गताः इति कुं पादविधाने ॥ आचार्यान्
सूय्याद्यादि पुननमस्कावन्नासाद्यया
पुत्रा ॥ कल ॥ अर्चनी ॥ धूप दीप जाप
मार्गार्क ॥ रुमाद्यादिवाक्क ॥ पुत्रनी ॥
ॐ ह्ययम्पयः ॥ वदीपाद ॥ ॐ ह्य ॥ क
ममलया ॥ द ॥ ॐ ह्य ॥ कल ॥ द ॥ दिग्या
द ॥ ॐ ह्य ॥ निर्माचनवलि ॥ अग्नि लाहव
दा ॥ ॥ जलस्नान ॥ पक्षमृत स्नान ॥
ॐ ह्यस्यमखचन्दननवामावरु स्वस्मिर्क
लिख ॥ चन्दनादि सिद्धय यज्ञायवीत
क पण्यनयु जय ॥ पठ ॥ गनपूजा ॥ ॐ
ॐ म ॥ नन्दाय नमः ॥ ॐ नारिभविर्कः
विज्ञानीया यमपयि तिर्क य ॥ आनन्द
नन्दोवा ॥ ॐ मरुग ॥ मोरुग ॥ ययस ॥
ज्यायीय ॥ धमासि विमिगाजापति
सित ॥ ॐ ३ रुद्राय नमः ॥ ॐ रुद्राभा
मिगद्रुता रुद्रावाति ॥ सरुगरुद्रा अर्च
न ॥ रुद्रावत यमस यर्क मनेरु ॥ ॐ ह्य
वर्क ॥ यनासमत्स सीस ॥ ॐ रुद्रा
यनमः ॥ ॐ यनासमत्स सासदावस्मि
नातनहिह विमदता ॥ वनमात अरि
सिहि ॥ ॐ विकायनमः ॥ ॐ लिवा
रुववी ॥ अ ॥ पुत्रवदाई ॥ पुत्र

ॐ वसुखदम् ॥ म ॥ ययीषवाहन ॥ ॐ
पूज्येनमः ॥ ॐ निवारुवपुजा ॥ मा
नयीष्य ममिग ॥ मायावापुथिवीः
अरिभा विमातवि दीमावनम्यति ॥ ॐ
दादिला कपालपूजने ॥ वलि ॥ धूप दी
प रुलादिधक ॥ अर्चति यति ॥ ॥

विष्णुकर्मापूजनी ॥ ॐ विष्णुकर्मा ॥ ॐ द
मासर्तनमः ॥ ययीषनमः ॥ चन्दन यज्ञाय
वीत पय ॥ चन्दननसिलि रुम स्वस्मि
कीलिख ॥ ॐ विष्णुकर्मा विमना
दिहोयाधता विधानापवमारुसदक ॥
गमामिहानिसमिषा मदनि ॥ ययामफ
मृषानपनयु कमा ॥ ॐ धूप दीप ॥ मा ॥
ॐ विष्णुकर्मानम सुखी सुखिकर्तुनमा
नमभर्तक मरुल रुमाय सर्वसत्त्वानर्क
पित ॥ ॐ ह्य ॥ शमृकि की विष्णुकर्मा रुमस
मयय ॥ द ॥ ॐ स ॥ ॥

गतामृ ॥ वाक्क ॥ कर्मावय्य ॥ पादरुमिग
त्वा ॥ वरु ॥ मी ॥ ॐ ददयाय नमः ॥ पु
त्र ॥ ॐ अस्वाय रुद्र ॥ कुरते ॥ ॐ कववा
यर्क ॥ समीकवर्क ॥ ॐ कववायर्क ॥ लय
ने ॥ अर्चयावादकना ॥ य ॥ ॐ ॥ आ ॥ यया
दिमध्या ॥ पाद सुनय ॥ ॐ ॥ पुनददि
ॐ वरु स्वस्मि कीलिख ॥ आ ॥ ययादिमध्या
र्क ॥ तस्यापवि वादिह्यप ॥ ॥ सतधुवज

तयदीपश्चदिकनिष्पद्य ॥ ॥
 सुखदायिणिपुनः ॥ वाक् ८४ सुः
 सिवादीप ॥ ७१ ॥ ७३ नन्दाय नमः ॥ ७४ न
 निमविह ॥ ॥ सिवदाय ॥ ७५ नन्दन
 न्दिनिपासाद ॥ त्वामगस्त्ययामाह ॥ पा
 सादतिष्ठसिद्धय ॥ यावच्चन्द्राकांतावर्क ॥
 आय ८ कामसिधिरनन्द ॥ दहिवापि विदहि
 ना ॥ अस्मिन्कासदाकाया ॥ पासादयः
 नतस्तया ॥ मयि सुख ॥ १ ॥ ७६ रुद्राय न
 मः ॥ ७७ रुद्रानाग्नि ॥ वाक् ८ ॥ रुद्राय न
 च्चदारुड ॥ ताकानीकनकास्यपि ॥ आय
 दाकामदादवि ॥ आयदावसुदारुवर्ग ॥ म
 यि सुखति ॥ २ ॥ ७८ रुद्राय नमः ॥ ७९ रु
 नासमस्तया ॥ वाक् ८ ॥ ८० रुद्राय नमः ॥ ८१ रु
 दा ॥ तिष्ठस्वपिर्मया ॥ निर्यज्याय रु
 र्यव ॥ स्वामिनारुवराग्नेवि ॥ मयि सुख
 ति ॥ ३ ॥ ८२ विकायेनमः ॥ ८३ सिवारुवः
 विष्ट ॥ ८४ विकविकदायध्रु सिद्धिम्
 क्रियदधु ॥ सर्वदासर्वदसस्तु ॥ तिष्ठा
 सिन्नीशवृषिनी ॥ मयि सुख ॥ ४ ॥ ८५ पू
 र्णाय नमः ॥ ८६ सिवारुवयजाश्या ॥ वाक्
 ८ ॥ ८७ पू ॥ पूर्णमहाविद्य ॥ सर्वसिद्धादलद
 र्ण ॥ सर्वसिद्धिभवा ॥ कवर्षागिवस ८
 मः ॥ ८८ यावतीयावायुधितीयावचसफ
 सिन्धवावितसिन्धवा ॥ तावत्तमिन्दतयर्दमु
 ऊर्गृह्णामादिर्त ॥ ८९ मयि सुखिदियर्द

मयिदक्षामयिकु ८४ ॥ दम्भसिधिविना
 आतिवायहवृक्ष ८५ ॥ अमायह ८६ ॥ मयि
 सुखति सुख ८७ ॥ मयि गच्छति गच्छति ८८ ॥ वि
 सुखति वि सुख ८९ ॥ मयि तिष्ठति तिष्ठति ९० ॥
 मूलावायन ९१ ॥ अग्निपुत्रपुत्रद्विदशदिग
 कलेषु पादस्तु ९२ ॥ कमावायन ९३ ॥ कि
 रुदनकममपुलपादस्तु ९४ ॥ कमायन ९५ ॥
 उमनाहतिपतिष्ठा ॥ ॥ कलेषु स
 मीपगत्वा ९६ ॥ वाक् ८ ॥ ९७ दान ॥ पादस्तु
 मियजमानकले ९८ ॥ दकनसिद्धय ९९ ॥
 वन्दनसिद्धय १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥
 पादस्तु १०४ ॥ विधि समाप्त ॥ ० ॥

अथ पूर्व सिद्धि वसु मूलावायु कमावा
 ययजमानानीन्द्रावकमास्त्राभापवासी ॥ नि
 ल्यना १०५ ॥ यथाविधानतया दकनत
 रुन्दस्तु १०६ ॥ कानय १०७ ॥ ॥

अथ निर्माचुनार्गिकावय १०८ ॥ सी ॥ अथ वि
 निशाधि न्यायागमपुत्रगत्वा १०९ ॥ निहाम
 समाचय ११० ॥ नूतनराधुमयि कर्तुं कत्वा
 ॥ काशह १११ ॥ अनकताधर्वकत्वा ॥ कलेषु
 दातिष्ठरुद्रपत्नर्व ॥ गलेषु रुद्रयपाला
 दीना ११२ ॥ वन्दनयहोपवीतयुष्य ११३ ॥
 मूलावायन ११४ ॥ सुयार्थि ११५ ॥ राजर्न ॥
 न्यासावयवायुजातयुजा ११६ ॥ कुरु ११७ ॥

[illegible]

* ॐ ३ ला हवृष्टुयस्वाहा ॥ ॐ अस्मायम
 मृत्तिकायमग्निरयश्चमयवृताश्चमणि
 कताश्चमवनस्यतिश्चमहिवन्धश्चमश्रु
 यश्चमलाहश्चमहा ॥ ॐ अश्चमययश्चमयह
 नकलीमी ॥ ॥ ॐ ३ ववायस्वाहा ॥ ॐ
 शुभ्रकयजामा ॥ ॥ ॐ ३ दातिम्वरदास
 मिधायस्वाहा ॥ ॐ समिधाय अग्निवधिम
 माहानडम्बयगुंशो गृहीत। तफधुः
 मीपविष्टं द्वाययक्त्यायश्चमयजन्त
 दवा ॥ ॥ ॐ वृत्तवीजायस्वाहा ॥ ॐ या
 गर्पागुणगधवा दसर्वतत्वादिषा आव
 ३४। समुनियवसमवाविदी ॥ ॥
 मर्द्धमिष्टं नृन ॥ ॥ ततः ४ कलशव
 लिपूजनं ॥ ॐ अस्माय रुद्र ॥ ॐ ३ द्रुग
 यालायनमः ॥ ॐ नमावहं शय ॥ ॐ
 असींखातास ॥ ॐ विश्वतश्चन्द्रवृता ॥
 स्मृतवलि ॥ द्रुगवलि ॥ शक्तिवलिपूज
 नं ॥ ततः कलनसीपूज ॥ ॥ ॐ श्री ४ भ
 न्निवकैर्नृविद ॥ ॐ आवद्वनवाक्कला
 ॥ ततादशदिगुल्लिखितवदिकुलेश्वरिका
 वलिपात्राय विनियोग ॥ अग्निविसर्ज
 न ॥ ॐ यक्षयक्षगच्छति ॥ वलिविसर्ज
 नकृत्वा ॥ यथा स्मृतादिपत्र ॥ कलशप
 लवदातिमृद्वेणमधुयादिसिन्धुय ॥
 अग्निकुलकलशदकैर्मुनद्विपत्र ॥
 दयावाययजमानस्तानैकृत्वा ॥ गय

वत्सापनेनकात्रय॥
सर्वायमाजिकान्दातमृशुलानक्षत्राज्या
उगद्वष्टमृश्रायरुद्रावरदार्षद्विदिनि
मध्यान्कस्त्वमस्तुभनिधया॥००॥

मृत्ताचार्यो न जायते कार्यत ॥ कमाचार्यो
न काममदुल्लस्य पातने ॥ वज्रपूजने ॥
यथा विधानतमदुल्लस्य कार्यत ॥ मूलनपू

आवाय्यद्वययजमानः॥ हविषीराजय
 ॥ मधुप्रागोमुलात्रयादित्यतिष्ठयः॥
 यश्चरागिनागन्ता अहानागन्तयेवच
 सर्वकामसमृद्धार्थकावयदधिवामने॥
 इति अधिवामनविधिः॥ ॥

गतामधुपालीकावविधि॥ वटदुम्वल
मध्वर्क यिलदीतावठाकुमान। विदिग
कदलीदाव पताकादहादिकर्म॥ हुंदा
यधायमापुर्वे वकामायेयमेयव। यक्क
उम्वरुलाराति ददि। ऐश्वरककुर्क ॥
नेमत्याधुमरायाकी वानुध्याधुलीत
था। वायव्याहविर्तवधुर्मा मयातम। थ
च्यत॥ हुंभन्याधुक्क वक्क वक्कस्मान
यकीरिता। हविर्तमध्वविष्णोय पञ्चव
धुंश्रद्धक॥ यध्वपन्नवमतस्याडाज
यगीयूनमती॥ अश्वत्थवटवटकश्वव

वन्द्यदलनिद्र॥ यक्षसूयततः॥ कृष्णोद्वि
गावृक्षमनकी॥ धवनेकनकाकावि॥ कुमान
कार्तिनैयन॥ ॥ यक्षसूयकुशलरूना
मधुपिवद्यथा॥ ॥ अक्षतदादादल
द्विर्वा॥ एकाग्रकाश॥ दुस्वानकायउसपा
उवसीतगोय॥ केशाकवद्रुदिगयोनि
यश्चक्रेय्यगुठियातिमौखनैव्युगत॥ ॥

ततः कलशविधानं ॥ पीतवृक्षं नवा स
र्वं स्मृत् न स्मृत् न यथा द्विर्न ॥ लिखित्वा यदि
धनं न पश्चात्ता जीयन्त यन ॥ आधारे व
न्धहारिर्वा देहं वा कायथरु ॥ १० ॥ कल
शपीष्टा का ला ४ यश्च वत्ता न्यसीयता ४
यश्च पल्लवपूष्पस्या विद्रुदृष्टि ममन्ति
ता ४ यता काचु वसीयका वाधवाय विसी
स्मिता ॥ रुतत धुलमेषु ४ शवावेव य
सहित ॥ चन्दनं चैव सिन्दूरं दृष्टि उ
द्गायतीतर्क ॥ द्विपञ्चदसि मयूकं वसुवे
वगलयन्त ४ ॥ गमय मयूकं यमाद्धं दूर्वा
कृतमरुषली ॥ पूषामला ममायूकं व
लिङ्गं जावनादिकं ॥ लाहमश्चि कृताध्व
वेचकमध्याय विस्मृतं ॥ सूवर्णं वा अतः व
क्ते ४ यश्च वत्ता न्यपूषिर्वे ४ ॥ नानानेव यव
मूनि यश्चान्यरितेनानि च ॥ धूपदीपाद
तादीनि सामया विरुतायथा ॥ कलशस्म
ष्टिनि वलिङ्गं जावनादिश्च स्मृत् न स्मृत् न नि

था जय ॥ अन्दनमिदं यत्कायवत्त पृथ
समलेखत्वा ॥ हस्तिकलेषावायविधिः ॥

ॐ नमो नावाय ॥ य ॥ ततः ४ पातस्नानादि
नित्यकर्मकावय ॥ यरुमगुपनेमय
दिशिताय ॥ यजमानन ॥ ॐ अयादि ॥
यजमानस्यादिनावाय ॥ पासादायमि
वर्षुकलेशधवावनलकोकृतियरु
मिमित्यर्थस्यार्थनमः ॥ ॐ मोहाधका
वति ॥ पृथीनमः ॥ ॥ मूलाकार्यमति
जादिपादार्थ ॥ ॥ आवायन ॥ पुनम
स्कारे न्यासायपार्यपूजा ॥ आत्मपूजा ॥
वलिद्वयदद ॥

॥ हयकादि ॥ अहिताहादि ॥ वक्र
॥ दिमाह कावलि ॥ ॐ क्रौनवसिहाय
वलिगृह २ स्वाहा ॥ नवसिहवलि ॥ ॥
विश्वम्भनवलि ॥ ॐ विश्वम्भनायकुन्द
मयापषाधूपदीपपूजावलिगृह २ सर्व
विधिवावय २ यरुमगु २ क्रौनमसाहा
॥ वद ॥ ॐ गजनीला ॥ ॐ नमो वरुध
या ॥ ॐ जम्बुजम्बिक ॥ ॐ हयतयस्वा
हा ॥ ॐ घृतघृतपावान ॥ ॐ विश्वर
कृता ॥ ॐ पात्रीदि ॥ स्वाहा ॥ धूप दी
प आदिसाये ॥ ॥ निबोर्णनिर्विकला

ति ॥ जम्बुजवलि विमर्जते ॥ नानसिहव
लिमगुपेयामय ॥ विश्वम्भनवलि स्म
नक्षिप ॥ ॐ तिवलि पूजनेमगुपवाय ॥

आवायन न्यायिकावय ॥ वीहिवजसः
वर्षयधृत्वा ॥ द्वावसे ॥ पुनपादय ॥ ॐ अ
का ॥ शानमः ॥ दिशमक्षिप ॥ ॐ ग
जायतयनमः ॥ ॐ दम्बा ॥ लिका ॥ ॐ स
स्वयेनमः ॥ दक्ष ॥ ॐ द्वावधियनमः ॥
मे ॥ ॐ अयायेनमः ॥ दक्ष ॥ ॐ विज
यायनमः ॥ वामा ॥ ॐ दहयेनमः ॥ दह
ली ॥ मूलनावलाय ॥ ॐ द्वाकाधन ॥
नतानावायमदया शुचवीहिवजसर्ष
यदेयय ॥ यरुमगुपेयविश्वददपा
दार्थ ॥ ॥ ॐ पालसीसुतायवदुति
दियाकविक्रमा ॥ विश्वकलावयवृवा
गनम्भुत्तयाहया ॥ ॐ वीहयधमति ॥

दहल्यामभुकलेशपूजय ॥ ॐ अम्बा
यकुन्दमासर्जनमः ॥ ध्यान ॥ यद्मासर्नेक
वक्राव ॥ हमेवधुसूयोवना ॥ सयहस
धतायदीवाभतर्जनिविजम ॥ निर्विघ्न
यरुकायाध ॥ तर्जनीध्यायतसदा ॥ ॐ व
क्राहर्त ॥ स्वाय ॥ ॐ तर्जनीहससी ॥
हमभुपमहाकर्म ॥ सर्वविधिदयाधव
जम्बुसूहि नमो ॥ सुत ॥ ॐ त्रिजम्बु

तस्य दानयागविधिः ॥

मधुयमश्च सन्नि जावर्षु ॥ (धातवीः
दातवी ॥ मूलाचार्यं कामाचार्यं पूज
नादि यत्तिरंठ डोहाम् कूटविय ॥ जावर्षु
अथदादि ५ कामाचार्यं ॥

यज्ञमानस (यदि वाक्कलस्य रुमैष्ट
हीत्वा य (०) ॥ पूजनी ॥ ॐ अथदायन
मः ॥ अग्नि (गगायनमः ॥ ॐ मामदव
ताय गायत्री शुद्धमनमः ॥ ॐ अथद
यदायनांका गायत्री शुद्धदवता ॥ अ
ग्नि (गारुडविपन्दा सन्नि कामानखरु
वा ॥ पूर्ववदीक्या ॥ ॐ रुवामि ॥

यज्ञर्वदीवाक्कल पूजनी ॥ ॐ यज्ञर्वदा
यनमः ॥ ॐ रुवदा ज (गगायनमः ॥
यज्ञदवता रुद्रशुद्धमनमः ॥ रुद्र
यहली ॥ ॐ यज्ञर्वदकाटलांका जेसु
रुवदवता ॥ रुवदा जसुविपन्दा
सन्नि कामाचार्यं रुव ॥ ॐ रुवामि ॥ यति
वर्नी ॥ दक्षिणसुय ॥

मामवदीवाक्कल पूजनी ॥ ॐ मामवदा
यनमः ॥ ॐ काश्चय (गगायनमः ॥
ॐ रुद्रदवता यज्ञगती शुद्धमनमः ॥

* रुद्रयहली ॥ ॐ मामवद सुविज्ञाः
जगती ॥ कां देवता ॥ काश्चय उविप
न्दा सन्नि कामाचार्यं रुव ॥ ॐ रुवामि ॥
यतिवर्नी ॥ यतिमस्तुय ॥

अथर्ववदीवाक्कल पूजनी ॥
ॐ अथर्ववदायनमः ॥ ॐ वदानस्यः
(गगायनमः ॥ ॐ रुद्रदवता यज्ञन
रूपचन्द्रमनमः ॥ रुद्रयहली ॥ ॐ अ
थर्ववदवकांका वनसुद्रुद्धदवता ॥
वतानस्य उविपन्दा सन्नि कामाचार्यं
रुव ॥ ॐ रुवामीति ॥ ॐ रुवस्तुय ॥

कामाचार्यं पूजनी ॥ ॐ कामाचार्यं मू
रुयनमः ॥ रुद्रयहली ॥ ॐ मनुविप
समायतः सर्वविघ्नविमर्दकः ॥ दव
दया कथं गका गन्ना वायं मना क
य ॥ ॐ रुवानीति यतिवर्नी ॥ ॐ रुति

मूलाचार्यं पूजनी ॥ ॐ मूलाचार्यं मू
रुयनमः ॥ रुद्रयहली ॥ ॐ मूलाचार्यं
काश्चय विद्वान्वयवरी रुव ॥ अन्
यहायविपन्दा हातारुवममा धव ॥ ॐ
रुवानीति यतिवर्नी ॥ ॐ रुतिमूलाचार्यं ॥

ततः पदद्विषकमः ॥ ॐ वासुविप

गयवक्त्र (८) तमः ॥ तया दोषं यम्युजय
 ॥ तमश्चतुर्विधं पुनः ॥ अष्टद
 लीसूर्यमपुलीयवस्तु ॥ पूर्वनिनाय
 वि० ॥ न्यास ॥ ॐ उच्चैः ॥ अनामनाय नमः
 ॥ ध्यान ॥ ॐ ध्यायदसु उच्चैः सूर्यः लोकः
 पालाय ध्यानि ॥ गिवर्कं ध्यावदनी वि
 नर्गविहता ननी ॥ ॐ ध्यायविधमा नृदं य
 मम (८) सदा यज ॥ यथा शक्ति ॥ गोवा
 दनादिपद्मविम्वमडा ॥ पाद्यादि धूप दी
 प ॥ षष्ठ ॥ सामायन भगिनवयहरे ॥
 ॐ न्दाय नभतिला कपालन पूजय ॥
 जय ॥ स्तुति ॥ ॐ उदयावतिका य प्र ८ः
 नाभि विवर्धत ॥ गुरुभय ॥ समुवचुताम
 नयदिवनिता कर्तुं पूजय ॥ ॐ तिसूर्य ॥

यजमाननयपरा ऊनी कावय ॥ ॐ सि
 द्विबसुक्रियावभ्रति ॥ ॥ दयावाय
 वदी वाक् ८॥ दिव्य ८ पूषा ऊनी समर्थ ॥

तता अतिरि ८ स ददया वाय यजमाना
 दवा ॥ यगमय ॥ ८ स्मां अलीव द्वा ॥ आः
 ह्रीं यार्थय ॥ ॐ रुगवन त्वत्पमा दनक
 माधमर्चि तमया ॥ अदिमिद्विपदं ददि
 पुर्वजन्म नमामहे ॥ विष्णु सामादाय वि
 सवर्धु कलनध जाववाहन निमित्यर्थः

मा ह्रीं सन्ना रुव ॥ ॐ या ह्रीं पार्थय ॥

तताय हूम धुपने मया दिशि यक्क गवासा
 धय ॥ पीतवृ ॥ नितनवकाष्ट विलिषा ॥
 लाजा कपनी ॥ दधिपु पूर्वता हूर्य ॥ गम
 र्जददि ॥ (८) ननु यय ८ पश्चिमता हूर्य ॥
 तथेवा रुवत ॥ ॐ गमय लिंग मित्या हून
 मयपय कजनी वायव्य गमय स्तुत्याः
 त्रीं ननु क ८॥ दक ॥ तास्य पार्थिताम
 (८) मिमय दधि पूर्वक ॥ दक सन विधाय
 ति दध्याद्या च पृथक् पृथक् ॥ ॥ गममू
 भकयली दद्या दमुष्टो द्दनु गमय ॥ दीली
 मफयली दद्या दधिपु पलम चत ॥ चतम
 कयली हूर्य पलम कक ८॥ दक ॥ यक्क ग
 वानाम तत्पमा ८ ॥ गमवर्धु वि ८॥ गम
 मूर्गनी लवधु या ८ दध्याया गमय हव
 तास्य वधु यथा ८ ॥ (८) ताया दधिपु चत
 कपिलाया चतुर्थ ८ सहाया कना ननी ॥
 अशाव सर्ववधुनी कपिलका पलस्यता ॥

मूलानां यनि ॥ अथा
 दि ॥ सुवनम स्तावः
 न्यासाय पाप पूजा
 आय ८ दीवक ८॥ य
 लि लाजा ८ चततिः
 लसुथा ॥ द्वायव

प्रथमं पुनर् ॥ ॐ समस्त भूतानि ॥ ॥

आग्नेदी स्तुपनी ॥ ॐ आग्नेदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

यशस्वदी स्तुपनी ॥ ॐ यशस्वदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

सामवदी स्तुपनी ॥ ॐ सामवदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

मया धर्ममयविश्वतया ॥ यस्मै कवयि
दध्मनि विजित्स्व यकमधुलं ॥ ॐ माम
वदायकं यय गोयाय नृदवता यज
गती सुन्दसनमः ॥ हस्तार्च चन्दनयः
ह्लापवीत ययी ॥ सुवर्णं वज्रतमदिका
धरदग्ना पुनर् ॥ ॐ अग्नेदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

अथर्वदी स्तुपनी ॥ ॐ अथर्वदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

यासादपुनर् ॥ अथर्वदी यनमः ॥
आमनादि ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ
ग्नेदी यनमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं वरुणा
क्रममालासूयस्कृती वरुणा
हस्तः ॥ आग्नेदी यनमः ॥ ॐ अ

[illegible][illegible]

यनमः॥ उं गन्धदावाधर्मा निरु ॥ ॥
 उं सध्यायनमः॥ उं उं मावदा ॥ उं दू
 र्वायनमः॥ उं का अका अगा उं यक
 सू गायनमः॥ उं वद्धाहनी ॥ उं वद्धायन
 मः॥ उं खिजविष्टदा ॥ वन्दनादिवलि ॥
 उं अयाप्रविजयायैव जगदकृतयग
 सुधा ॥ रागीवधीयकाविन्दीनदायदेदि
 नीसत ॥ वैक ॥ उं पूवविक्कीय ॥ उं न्दायादि
 गदवता ॥ यताकाधजकु ॥ सर्वदता
 दिमिस्तिता ॥ तान्नमामि यमसा ॥ यमोः
 रुनदावमागिता ॥ तसर्वसनुदवत्याः
 वलि ॥ उं दू ॥ उं ममदा ॥ उं म यतिषा रुव
 उं यतय ॥ अ ॥ धूप दीप जाय साग ॥
 महावीर्यामहाकाय ॥ उदयनिमहाः
 गिबि ॥ विटपायरूनामानि ॥ सर्वदत
 नभा ॥ सुत ॥ दतदानतगन्धर्वा यद
 नादसयन्नग ॥ सर्वममाध्वरक्ष ॥
 वद्धा कर्वनुमसदा ॥ अयश्चयहीतव
 वद्धनीय ॥ सर्वोपिद ॥ विनियानितय
 द्वादिदवन्ति ॥ त ॥ उं न्द सर्व ॥ वद्धाकव
 सुसुदिशिदिगेष ॥ अगगन्धदि ॥
 उं तिपूर्वद्वावाचनविधि ॥ ॥

गता दक्षि ॥ द्वावाचन ॥ दक्षि ॥ द्वावाः
 यनमः॥ न्यामार्धपायपूजा ॥ उं गत्वा

यामि ॥ मय दली ॥ उं उं देविम् ॥
 उं स्थानाय ॥ उं उदम्वरदतावः
 अयनमः॥ उं वत्ताविष्टमा ॥ उं उं रु
 ददावायनमः॥ उं द्वावादवी ॥ ॥
 उं व ॥ अयनमः॥ ध्यान ॥ उं व ॥ अतसि
 यष्या ॥ भक्तवक्त्रविशयनी ॥ द ॥ उं क ॥
 गदा वक्त्र ॥ यमसुं वैविमदनी ॥ उं उं वा
 वती ॥ धन ॥ साग ॥ अतशापययैका
 लदलीनूप ॥ अरिती ॥ विष्टमवविनाया
 य ॥ व ॥ मुक्तिनमा ॥ सुत ॥ ॥ यव ॥
 यनमः॥ ध्यान ॥ उं यव ॥ वक्तवक्त्र
 द ॥ अ ॥ उं क ॥ सीस्तिती ॥ ख ॥ उं क ॥
 न ॥ धन ॥ विष्ट ॥ यमदके ॥ उं द ॥ व ॥
 दतसा ॥ साग ॥ उं द ॥ अ ॥ यमसा ॥ सीनी
 ख ॥ उं क ॥ द ॥ विष्ट ॥ यतीका
 ली ॥ यव ॥ अयनमा ॥ सुत ॥ ॥ उं य ॥
 वदायनमः॥ ध्यान ॥ उं सुत ॥ व ॥ य ॥
 व ॥ द ॥ व ॥ उं क ॥ सा ॥ रुती ॥ अ ॥ द ॥ मा ॥ ला ॥
 द ॥ पीती ॥ वा ॥ अ ॥ धन ॥ अरिती ॥ उं उं ध ॥
 उं यतायग यनमः॥ ध्यान ॥ उं द ॥ म ॥ व ॥
 निरुददी ॥ अ ॥ य ॥ विष्ट ॥ न ॥ सुधा ॥ ग ॥ दा ॥ व
 क ॥ ध ॥ व ॥ रु ॥ अ ॥ ता ॥ या ॥ विष्ट ॥ ति ॥ सा ॥ व ॥ ॥
 अ ॥ द ॥ वा ॥ जा ॥ ॥ उं व ॥ ध ॥ यनमः ॥
 उं उं द ॥ ध ॥ सा ॥ य ॥ ॥ उं र ॥ ह ॥ सा ॥ य ॥ यनमः ॥
 ॥ उं र ॥ ह ॥ सा ॥ य ॥ अ ॥ ति ॥ ॥ उं नि ॥ र्मा ॥ र्मा ॥ दा ॥ य

धिविना॥ॐ वटवृक्षतावत्प्रयत्नमः॥
 ॐ वत्ताविमृक्ष॥ॐ म कर्मदावायन
 मः॥ॐ दावादवी॥ॐ धायेनमः॥
 ध्यात॥ॐ वकवक्रामयीतामी यद्वस्तु
 मवतुर्लुङ्गायाः॥ॐ कृष्णकवर्कवध
 योऽपानिप्रदायिनी॥ॐ विश्वधुर्कवीर्या
 मार्या॥ॐ यातवर्षुवर्षुर्द्वि सर्वालीका
 लहृषिता॥ सर्वपानिकर्वादवी धाये
 वेवनमाऽस्तुत॥ ॥ॐ विधायेनमः॥
 ध्यात॥ॐ कमलामनयवर्षुर्द्वि धासू
 उगदारुया॥ विधायीर्ककुमाः॥ॐ द
 वीयष्टिप्रदायिनी॥ॐ दिवाता॥ॐ य॥
 मकलस्तुमखासीनावर्षुर्द्वि धासू
 या॥ कृकृमायष्टिदादवी विधायीयनमा
 ऽस्तुत॥ ॥ॐ सामवदायनमः॥ ध्यात॥
 ॐ वाल्लस्यार्थयमामाम यश्चिभषुविरा
 वयशायष्टककृषिदधाय अक्षमालाक
 मधुर्ल॥ॐ अग्रग्राया॥ ॥ॐ दायवयू
 गयनमः॥ ध्यात॥ॐ मर्कटवर्षुर्द्वि
 गदा अंकुशध्वनिर्द्वि यद्वर्षुर्द्वि द
 यवाधियर्ति सर्वश॥ॐ अक्षवाजा ॥
 ॐ पुकायनमः॥ॐ अन्नात्यवि॥ॐ न
 नैधवायनमः॥ॐ नन्नादवी॥ॐ गधु
 येनमः॥ॐ समप्रदानमना अश्वत्थ
 नृवक्ष्णुर्द्विधिविद्वान्मण्डवन्त॥ हतीय

स्वायम्भुवामयस्कः
 महिषावधनः ॥ ॐ काशिके नमः ॥ ॐ
 नदीत्यः ॥ ॐ वक्राणमः ॥ ॐ द्यु
 यालायनमः ॥ दहली ॥ ॐ गान्धर्व
 ॥ ॐ ॐ कथनमः ॥ गृध्राख्यः ॥
 ॐ गणपतयनमः ॥ ॐ गणनीत्या ॥ ॐ
 सनत्तयेनमः ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ महाल
 न्धनमः ॥ ॐ प्राश्नत ॥ ॐ इन्दुमिलिक ॥
 ॐ द्वांसः कपिलायनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ उ
 दयादित्यमीकाशी प्रिङ्गुभूलाय
 नी ॥ वयुर्जमदानांगी ॥ पद्माञ्जल्यः ॥
 रितः ॥ गिरिवस्तुर्गुणीयः ॥ मकारुणः
 हृषितः ॥ गिरिमाल्यधरं ध्याय ॥ कपिल
 वकुनायक ॥ ॐ ॐ वावरीधन ॥ ॥
 ॐ ब्रह्मवर्णाय पादगुरुस्वायं जलाधियत
 यनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ नागयागधरं हृष्ट
 लाय श्रितिविग्रह ॥ गणकधरं ध्याय
 ह्वर्णमकरासनी ॥ ॐ ॐ ममवर्ण ॥
 भार्गव ॥ वनर्ण ॥ गधवर्ण ॥ जिष्णू ॥ यागद
 भा महाबल ॥ सर्वालीकवर्ण ॥ यक ॥ य
 धिमदिग्यतनमः ॥ ॐ द्वांसः अंतमारु
 गवर्ण ॥ यज्ञा यनमः ॥ ॐ यज्ञायनमः
 ॥ ॐ वैकुण्ठायनमः ॥ ॐ विश्रुवनमः ॥
 ॐ गैर्वकुर्ध्वजायनमः ॥ ॐ गृष्माः
 कमिन्द ॥ ॐ यज्ञवायनमः ॥ ॐ श्वत्सुप

कताक वदवाचनं ॥ ॐ उक्तवदवाच
 नमः ॥ न्यासादि ॥ ॐ तत्त्वायामि ॥ अत्य
 द्वाली ॥ ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॐ शानायथिवि
 ना ॥ ॐ प्रददुक्तवदवाचनं ॥ यनमः ॥ ॐ व
 त्वाविष्टम् ॥ ॐ श्रीपदवाचनमः ॥

ॐ ह्रीं वादवि ॥ ॐ विश्वभनायनमः ॥ ॥
 ध्यान ॥ ॐ वक्राक्षं श्यामवर्णं च विश्वः
 कृतं कर्मसिद्धिं । गदावक्रासिं खड्ग
 ॐ ह्रीं सिद्धिं कृतं ॥ ॐ पुनर्विष्णुः ॥
 स्मार्तः ॥ ॐ श्यामवर्णं महाकायं गदावक्रा
 सिद्धिं विष्णुः ॥ ॐ ह्रीं सिद्धिं पदातारं विश्व
 भर्तृनमामहे ॥ ॐ ह्रीं गणपालायनमः ॥
 ध्यानं ॥ वक्राक्षं कपिलं शुद्धं शूलखड्ग
 श्रद्धाविर्गं । खड्गाक्षं धर्मशोभं यमकृतं
 यक्षसिद्धिदं ॥ ॐ विश्वावराट् ॥ स्मार्तः ॥
 गितं यक्षि कलौ बोधं नीलाक्षं नमः परं
 ॥ यक्षसिद्धिं पदातारं ह्रीं गणपालनमः ॥
 स्मृतं ॥ ॐ अथर्ववदायनमः ॥ ध्यान ॥ अथ
 वक्राक्षं खड्गलक्ष्मिं वलपूषः
 कृतं कर्म ॥ ॐ वक्राक्षं विश्वं ॥ ॐ ह्रीं
 वादवि ॥ ॐ कलिं युगं यनमः ॥ ध्यान ॥
 ॐ कलिं कर्कशं लवणं खड्गं कर्म
 कर्म । मणिं खड्गं धर्मं कलौ मूर्तिं वि
 श्वं यथं ॥ ॐ अथर्वं ॥ ॐ वादवनमः ॥
 ॐ कयानं चिन्म ॥ ॐ कर्मवनमः ॥ ॐ क
 र्कशं नमः ॥ ॐ सर्वस्वथेनमः ॥ ॐ
 महाशक्तिं ॥ ॐ वक्राक्षं यनमः ॥ ॐ स
 मदाक्षं मधुमी उदावदया ॥ ॐ सनाममृ
 तत्वमानं ॥ ॐ तस्य नामं युष्मै यदस्मिद
 किं क्ता दवनाममृतस्य नारि ॥ ॥

[illegible]

तत्तानेसत्यद्वयार्चने॥ॐ नेसत्यद्वय
नमः॥ न्यासादि॥ॐ तत्त्वा यामि॥ अस्तु

[illegible]

ततावायवादावाचने॥ॐ वायवादावा
 यनम॥ न्यामादि॥ ॥ॐ तत्वायामि॥
 अथ दली॥ॐ देविष्णु॥ॐ स्थानाय
 धिवा॥ॐ वेककृदकतावलयनम॥
 ॐ वत्ताविष्णु॥ॐ युष्टिदावायनम॥
 ॐ दावादेवि॥ ॥ॐ युवायवाधुदरुमा
 ययवनाधियतयनम॥ ध्यान॥ॐ आपी
 तरुवितकृय विलालधुदधविणी॥ या
 लरुतकुरुतानी हविषसु ममीवर्ण ॥
 ॐ तववाय॥ आ पी॥ॐ वायवाययवधु
 धुदरुमा मदावल॥ सर्वपाणाम
 काश्वेव वायवदनमाऽस्तु॥ॐ उयव
 दायनम॥ॐ दवायमृत्वायरुद॥ॐ
 साधवायनम॥ॐ गवृजयनम॥ ॥
 ॐ गलायतयनम॥ॐ गलनत्वा॥ॐ म
 यस्वयनम॥ॐ पावकान॥ॐ महाल
 क्ष्मीन॥ॐ श्रीधनलक्ष्मी॥ॐ सर्वतयध
 जायनम॥ॐ अस्माकमिन्द्र॥ॐ यज्ञवा
 यनम॥ॐ अश्वमृपवाग॥ॐ दृगय
 नम॥ॐ रुद्रस्यतकृदि॥ तिरुजा॥ॐ
 यरुदक्षस्यिज॥ॐ गमयायनम॥
 ॐ गन्धदावा॥ॐ दूर्वायनम॥ॐ काष्ठा
 काष्ठागा॥ॐ सपेयायनम॥ॐ ॐ मा
 नृदा॥ॐ यथैस्त्रुगायनम॥ॐ वक्षा
 रुत॥ॐ वक्षायनम॥ॐ त्वीदविष्टदा
 यन्दनादि॥ वलि॥ॐ सपतिष्ठा रुवा॥

ॐ यतप॥ धूप दीप जाप स्मरण॥
 ॐ अथ कर्यरू॥ॐ तिवायवादावाचने॥

तत॥ॐ शानदावाचने॥ॐ शानदा
 वायनम॥ न्यामादि॥ॐ तत्वायामिधः
 अथ दली॥ॐ देविष्णु॥ॐ स्थानाय
 धिवा॥ॐ (धुताकृदकतावलयनम॥
 ॐ वत्ताविष्णु॥ॐ रुद्रिदावायनम॥
 ॐ दावादेवि॥ ॥ॐ दूर्वायनायविष्णु
 लरुमायवृद्धताधियतयनम॥ ध्यान॥
 ॐ शानेवेषरावृट् विष्णुलक्ष्मीलक्ष्मी
 विष्णुगवृत्तावदोतक वन्दे सोलितः
 विलायने॥ॐ तमीशने॥ स्मरण॥ॐ ॐ
 शने अगतानाथं शुभं धूलधरुवागः
 द्वाजराधव॥ श्रीमान् रुद्रस्य यनमानम
 ॥ॐ उयवदायनम॥ॐ विष्णुवनम॥
 ॐ श्रीमृत्वायरुद॥ॐ गलायतयनम
 ॥ॐ गलनत्वा॥ॐ सवस्वयनम॥ ॥
 ॐ पावकान॥ॐ महालक्ष्मीनम॥ॐ श्री
 धन॥ॐ सपतिष्ठ जायनम॥ॐ अ
 स्माकमिन्द्र॥ॐ यज्ञवायनम॥ॐ अश्व
 मृप॥ॐ दृगयनम॥ॐ रुद्रस्यतकृ॥
 तिरुजा॥ॐ यरुदक्षस्यिज॥ॐ गम
 यायनम॥ॐ गन्धदावा॥ॐ दूर्वायन
 म॥ॐ काष्ठाकाष्ठागा॥ॐ सपेयायनम
 ॥ॐ ॐ मानृदा॥ॐ यथैस्त्रुगायनम॥

ॐ वक्राहनी ॥ ॐ वक्रायेनमः ॥ ॐ वक्रा
विष्टदा ॥ ॐ यतयेनमः ॥ धूप दीप आ
या ॥ स्नाय ॥ ॐ श्रीयैव ॥ ॐ तीक्ष्णद्वाराचन ॥

गताः द्वाराचनी ॥ ॐ अर्द्धद्वारायनमः
॥ न्यामादि ॥ ॐ तत्त्वायामीति ॥ अश्वत्थ
ली ॥ ॐ ॐ देविश्रु ॥ ॐ स्थानायुधिवि ॥
ॐ अश्वत्थद्वारायनमः ॥ ॐ वक्रा
विष्टदा ॥ ॐ पृथ्वीद्वारायनमः ॥ ॐ द्वा
दशी ॥ ॐ अनन्तायवक्रदस्मायनाः
गधिपतयनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ अनन्तैय
पुलीकादौ रुद्रदशजतेयती विष्टदा
मपतीकादी कुमात्रुटपयुजय ॥ ॐ
गालियदावि ॥ स्नाय ॥ ॐ अश्वत्थ
धवत्तन ॥ ॐ मन्त्ररुद्रमधुरी ॥ कुमात्र
नममास्वय नमस्वयकपालय ॥ ॐ द्वा
मः ॥ धन अश्वत्थरुद्र ॥ ॐ विविक्ताय
नमः ॥ ॐ गलपतयनमः ॥ ॐ गल
नीत्वा ॥ ॐ सबस्येनमः ॥ ॐ पावकान
ॐ महालक्ष्मीनमः ॥ ॐ धीश्वर ॥ ॐ धृ
यनमः ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ यज्ञवाय
नमः ॥ ॐ अश्वत्थपथा ॥ ॐ ॐ गाय
नमः ॥ ॐ वृद्धस्यतकुदि ॥ तिष्ठ ॥ ॐ य
वृद्धस्य ॥ ॐ गमयायनमः ॥ ॐ गन्ध
वा ॥ ॐ दूर्वायनमः ॥ ॐ काष्ठाकाष्ठा ॥
ॐ सर्वपायनमः ॥ ॐ ॐ मारुदा ॥ ॐ यैव

सुशायनमः ॥ ॐ वक्राहनी ॥ ॐ वक्रा
येनमः ॥ ॐ वक्राविष्टदा ॥ विन्दनादिव
लि ॥ ॐ सुप्रतिष्ठाकृता ॥ ॐ यतयेन ॥
धूप दीप आय स्नाय ॥ अश्वत्थयज्ञत
वक्रदशीय ॥ ॐ यैव द्वाराचनी ॥

गताः द्वाराचनी ॥ ॐ ॐ द्वारायनमः
न्यामादि ॥ ॐ तत्त्वायामीति ॥ अश्वत्थ
ली ॥ ॐ ॐ देविश्रु ॥ ॐ स्थानायुधिविना ॥ ॐ
वट्टद्वारायनमः ॥ ॐ वक्राविष्ट
दा ॥ ॐ सुमन्त्रद्वारायनमः ॥ ॐ द्वा
दशी ॥ ॐ ॐ ॐ द्वायकमधुलरुद्रस्माय
स्वगधिपतयनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ पीनीपी
तिष्ठुर्वीर्द्ध वक्रादीवयुजतने ॥ हंसया
नश्चविश्वार्थ दशुद्रकमधुली ॥ ॐ
वक्रयहानी ॥ स्नाय ॥ ॐ यज्ञयानिश्चु
मूर्ति मूर्द्धि स्मृतेनिवासित ॥ स्मृष्टिक
कामिकानि ॥ तस्मै वक्रनमा सुता ॥ ॐ
द्रोमः ॥ ॐ अश्वत्थयज्ञरुद्र ॥ ॐ गवर्द्ध
नायनमः ॥ ॐ धावकयनमः ॥ ॐ गलप
तयनमः ॥ ॐ गलनीत्वा ॥ ॐ सबस्येन
मः ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ महालक्ष्मीनमः ॥
ॐ धीश्वर ॥ ॐ आयनमः ॥ ॐ अस्माकमि
न्द्र ॥ ॐ यज्ञवायनमः ॥ ॐ अश्वत्थपथा ॥
ॐ वृद्धायनमः ॥ ॐ वृद्धस्यतकुदि ॥
तिष्ठ ॥ ॐ यवृद्धस्य ॥ ॐ दूर्वायनमः ॥

ततोद्धारपूजान्कलशउमर्त ॥ यज
माननजसुवर्द्धनीं गृहीत्वा ॥ अविद्धि
नयथाधारी मूलावायधृतशिवकुरा
नृगमिनी । लाकपालज्ज्वाहीश्वरय
ॐ यददि ७ कमलजामथ ॥ ॐ हारु
लाकपाला । स्वायधसन्नद्वारुवतश
नक्षार्थउमर्तकुरु धारयाउमर्तश्वरी ।
जावाथावावयत्वा ॐ सर्वविधिनिवा
रणीना । धामहृश्वरीयकी । रीर्यकर्म
समालरु ॥ यासादकि यतवदाया
वत्कार्यकृतमति ॥ ॥ वाक् ॥ ॐ यरुस
नक्षार्थय । विघ्नार्ताधसनायव ॥ यू
र्यसमाहवसे श्व सन्नद्वैतयताहृयो ॥

तथा श्रवणाय गृहीत्वा ॥ पूर्वकलशमव
य ॥ ॐ जयायेनमः ॥ ॐ विजयायेनः
मः ॥ ॐ ॐ न्दायेनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ सहस्र
दीपकान्तरावकाहसायवाकृष्णकाम
रसकीर्तिद्वयदत्तमः ॥ ॐ
गतावमिन्द्र ॥ स्तुति ॥ ॐ ॐ न्दसूत्रपति ॥
वत्तदाहसावल ॥ सर्वयज्ञाधिपादवा
नकवाकनमास्तुता ॥ अङ्गदी ॥ ॥

अभिकलक्षार्चन॥ॐ श्रीगणेशाय नमः॥
 ध्याता॥ॐ विष्णुसूक्तं ॥ १ ॥
 अ० वा० ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 पार्थिव॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥
 श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥
 श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

मिदवनमास्तुत॥ अगगन्धादि॥ ॥

यमकललक्ष्मिर्न॥ उं यधुयनम॥
उं यधुयनम॥ उं यमायनम॥
ध्यान॥ उं लुंघत्पीनायम॥ कायाद
पुहस्मारुयकव॥ नकहृत्पागरुह
स्मा मदिस्म यद्वतवान्॥ उं यमनदहं॥
स्मा य॥ उं दधुहस्मायमादवा॥ धर्माः
(धर्मा) मदावल॥ त्वाध्वान्वाहयिष्या
मिधर्मवाजनमास्तुत॥ अगगन्धादि॥

नताने अत्यकललक्ष्मिर्न॥ उं धैयैनेम॥
उं विधैयैनेम॥ उं नैमत्यायनम॥
ध्यान॥ उं दधुवाननकहृत्कुक्षीनेम
तिर्विकृतानन॥ यष्टितखभ्रहृस्मधनी
लारुवाहसावृत्त॥ उं यनदवी॥ स्मा
य॥ उं सर्वपताप्रिय॥ धैव नैमत्यानिव
वियह॥ खभ्रहृस्मा मदावीवा॥ नाद
सायनमास्तुत॥ अगगन्धादि ॥

तत॥ यधिमकललक्ष्मिर्न॥ उं धैयैनेम
॥ उं विधैयैनेम॥ उं वनल्लयनम॥
ध्यान॥ उं मकनसुगित॥ सोम्य॥ पागद
स्मा मदावल॥ सर्वालीकालसीयका॥
यधिमदिकवनम॥ उं लुंघमीमवर्त्त॥

स्मा यै॥ उं नागयाभक्तकानित्यै उल्ल
नो आमदावल॥ नमिमाश्चैवविष्याता
नागवाडानमास्तुत॥ अगगन्धादि ॥

नतावायवकललक्ष्मिर्न॥ उं वायवनम
॥ ध्यान॥ उं पीनागेवाधवाधम॥ क
श्चित्त्रुधवात्मन॥ नकादोलीववास
मृगसुधैकीधडी॥ उं तववायवदह॥
स्मा य॥ उं सर्वयाभक्तकानित्यै सर्वहो
वायदवता॥ ध्वजहृस्मा मदावीवा॥ वाय
दवनमास्तुत॥ अगगन्धादि ॥ ७ ॥

नतारुवकललक्ष्मिर्न॥ उं विश्वभूनाय
नम॥ उं दधुपालायनम॥ उं कव
लायनम॥ ध्यान॥ उं मधसिक्तायन॥
सोम्य॥ पीतायद्वरतायली॥ धनभाव
नद॥ काया लानारुवणमधित॥ उं क
विदेगज॥ स्मा य॥ उं नदगलीयैव सर्व
र्षी यद्वयाजयकीर्तिता॥ गदायालिध्या
दव॥ कवदायनमास्तुत॥ अगगन्धादि ॥

लुंघानकललक्ष्मिर्न॥ उं लुंघानायन
म॥ ध्यान॥ उं यद्वसूयाजरीपूली
रघसुसि विरुधित॥ लुंघानमाहृद
वर्त्त॥ लोकपालादिवाहव॥ उं तमीगने

ॐ द्वांद्वमाला यनमः॥

ध्यान॥ उ व व नापि श्रक्तं ॥ अथ पि श्रु
 पि श्रु लाचनं ॥ द ध्रुवमवतद्वज्र पि
 ल श्रु कपालिनं ॥ उ श्रु मीत्याता ॥ भाग्य ॥
 उ न वासनममास्तु य वायवामभमीस्त्रि
 ताशमवयदममास्तु य श्रु गपालनमा
 शुभ ॥ अ व ग न्मादि ॥ हुंति द्वाकल ॥

पश्चिमस्था रुचवा मु कलः ॥ चूर्न ॥ ॐ वासु
वनमः ॥ आवाहनं ॥ ध्यानं ॥ ॐ पीतव
धुव उवाह वधुव कुक जासने ॥ हं मयान
विजा हं मदाभाला कम धुर्ल ॥ ॐ आव
कन ॥ स्था ॥ ॐ पीतवधु महादीर्घ व
धुवाह धु ॥ रुनी ॥ प्रस कवा दसु रीच
वासु वक्रनभा ॥ सुत ॥ अगगस्वादि ॥

[illegible]

ना॥ विष्णुभक्तकवीदत्ताश्रममूर्तिनमा
इत्युक्ता॥ अथगन्धदि॥ ॐ तिअम्रकल॥

[illegible]

ॐ सत्यं धर्मं कल्याणं ॥ १ ॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥ २ ॥
ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ यद्यन्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ
ॐ अनिरुद्धाय नमः ॥ ५ ॥ ध्यानं ॥
ॐ सत्यादीनामथ ध्यानं समासादवधारय
याद्विष्णुं श्रीमद्भक्त्यै नित्यविन्दुमताकृ
तिं ॥ वन्दारुयहसुखं ध्यानामीलितलाच

नी। गितको। एयवमनी मकादामाद्य
 लेकरी॥ गितचन्दनलिका इ गितयष
 विरुषिते॥ उद्धरु मनुनाथस्य वक्रव
 कस्तुर्तमाव॥ यद्वासननापविष्टे यम
 नवदने द्विजा नवीविधितथाध्याय दाम
 दवीवदुद्धी॥ लीखपद्मधरेव ववदारु
 यदविष्टे॥ यलन कृतदुर्प नसितनाति
 वावली॥ ध्यायत्संकर्षणं देवं पश्यमीमं
 वरुत॥ धीर्तव्यकवधुर्न कमलायातला
 वने॥ गवद्गणसीका इ अतिवर्द्धमावद्धि
 रु। वामदवसमा॥ सर्वे दुजासुवलीक
 ने। उयविष्टासु। धेवत वक्रवधुमजयव
 ससुवकुटिक॥ पुखीनी वृषमधिनृपव॥
 उं उवविष्टा॥ वलि नेवद्यादि॥ सुति॥ उं स
 त्यायवा सदवाय नम॥ मीकर्मलयाव। पश्य
 म्नायनिवद्याय दुष्टी रुगवतनम॥ अगगन्ध॥

लम्बादिकलस्युजनी॥ उं लम्बो नम॥ उं वि
 यतम॥ उं वधुयनम॥ उं पुवधुयनम॥
 उं जयायनम॥ उं विजयायनम॥ ध्यान
 ॥ वरुलास्याविमलाली मन्वाकामासयोव
 नी॥ हसवधुर्दुमी सुता पीनान्नतयथाधवा
 वावुसर्वा इमीधु मन्वा रुवधमलुता॥ स
 दाया मयकरी॥ जा वामग्राहलकात्रिता ॥

* बालशुभनधामि। एका योतत्याध्या
 म्बुयो। गजोर्द गवकदस्मा स्नाययन्मो
 वयध्वत॥ उं ध्यायतलक्ष्मी॥ वलिनेव
 यादि॥ सुति॥ उं लक्ष्मी ध्यायतथावधु
 पुवधुयजयातथा। विजयावमहाद
 वी नमस्मा स्नातमानम॥ अगगन्धदि॥

पूर्वस्यदक्षि। एगवुडकलस्युजनी॥ उं उ
 ह्वेनतयायनम॥ ध्यान॥ उं वक्रवधु
 महापाली रुमीधु कटिलावने। उवच्चा
 मीकना कारे यदमधुलमलुते॥ मेः
 सवधुव उं विष्ट गधुवकुपधुदवीन
 वदुर्वाक वध्यामी पाशक रुजगनने॥
 मीसवद कर्णदक्षी दीर्घतानीरुयान
 के॥ स्वमूडालीकता॥ सर्वे द्विदुजाध
 वकुलुता॥ ध्यायतथा॥ यवधुकावा॥ सु
 यकारिर्विवाजिता॥ वतली वृत्तमन्वाः
 एध् ध्यानमर्क मयामना॥ उं सप। धुमि
 गनुत्मा॥ सुति॥ उं वेनतयामहात्मा इयो
 कास्योपात्मजयद्विवा॥ विष्टुवाहयमि
 धीरसो नमस्सुधुयदि। ए॥ अगगन्ध॥

गतामृत्युद्वयकलस्युजनी॥ उं मृत्युः
 जयायनम॥ ध्यान॥ उं वधुसिदक्षिर्त

दवे हिमकन्दसैनिर्क। एकवकुंदि
 नगुञ्ज ययुर्दुःखमहध्वज॥ विष्णुलाक्ष
 धर्मेदवे वराकलशध्वजि॥ वामावर्से
 स्मितादवी द्विदुडा कलशध्वज॥ हमा
 रुवराहयाज्ञी। श्वताम्वविहृषिता॥
 उवाचुर्गोश्वरं ध्यायन्मन्त्रपापपनाशनी
 ॥ श्रीवर्कयजामह॥ नैवद्यादि॥ स्माय॥
 ॐ अमृतीशमहेशाय विष्णुर्लक्ष्मिध्वमना
 यत्र॥ यवायवस्वपुपाय नमस्तु ययला
 यन॥ अगगन्धादि॥ ॐ तिमृत्युञ्जय॥

आदित्यकलशध्वजनी॥ ॐ आदित्याय न
 मः॥ ध्यान॥ ॐ वक्रपद्मसमासीने सफ
 ध्वजधवाहनी वक्रवर्धुसतजा ज्ञेदाति
 मीकसमयर्क। एकास्त्रीसमखेदवे स
 नालाङ्ककवद्वयी॥ एवंचित्तयतरुनी
 सर्वपापपनाशनी॥ ॐ आरुक्ष्मन्॥ नैवः
 द्यादि॥ मुनि॥ ॐ सहस्रीधुमहातर्ज मणि
 कुण्डलमाधुरी। कुर्यपादि॥ ४ समीपीशा ४
 कवर्ववन्नविग्रह। सनालयगुवाजीव वि
 द्युक्कध्वकवकुमा॥ अगगन्धादि॥

ततानागवाजपूजनी॥ ॐ ज्ञेववलायनम
 ४ ध्यान॥ ॐ नागयागधर्वदृष्टे वलायः

द्युतिविग्रह। ललाधवर्धन्यायी वनूहाम
 कवासनी॥ अनभावासुकीयेव तद्वकः
 कौटिकसुथा पद्ममहापद्मश्चैव शैव
 पालकलिकसुथा॥ ॐ वनूलाशार्क रुन॥
 स्माय॥ ॐ नागपाशमर्कनित्ये जलवार्ज
 महावली निर्मग्नाश्चैव विद्यार्ग नागवाः
 जनमोमोहे॥ मुनि॥ ॥ यद्ययद्वलायू
 र्जनी॥ ॐ ज्ञेयदायनमः॥ ध्यान॥ ॐ महाव
 धव। लक्ष्मिधवा यद्ववाजामहद्विकः॥ यः
 द्वाकाटीपरीवावा यद्वसीधनसैनयूतः॥
 महावैरुवसीपना दवपादाच्चनवतः॥ ॐ
 अग्रमृच्छवद॥ ॐ ज्ञेयद्वल्लेनमः॥ ध्या
 न॥ ॐ यद्वलीयद्वकन्यार्किं ४ पविवागिनिवि
 ग्रहा। महारुगावसीयका यद्वदवीपमि
 दिदा॥ ॐ यालायक॥ स्माय॥ ॐ यद्वध्व
 प्रमनाः सो यद्वलीसहसीयूतः॥ सर्वविरु
 वरुलाया नमस्तु यद्वयद्वली॥

ततः ४ बालश्रीपूजनी॥ ॐ ध्यायिथनमः॥
 ध्यान॥ ॐ पद्मापविस्मितादवी नीलायलद
 लयरु॥ सिद्धवपद्मसाव कान्तिसेरुन
 सीस्मिता॥ ॐ धीश्वतलक्ष्मी॥ ॐ जीलक्ष्म
 मः॥ ध्यान॥ ॐ पद्मासनस्मितादवी शुद्धसै
 स्मृतिवसीनिरा। अकदर्यालहसावध

नक्षत्रवपदा ॥ ॐ पावकान् सर्व ॥ रुक्म
वयादि ॥ स्मृता ॥ ॐ शीलक्ष्मीदेवदतीव स
र्वमपह्निदायिनी ॥ सर्वकामप्रदादवी न
मस्तुत्यानमानमः ॥ ॐ ति शीलक्ष्मीपूजा ॥

उपादिकल ॥ चर्चनी ॥ ॐ सर्वस्य ॥ कल ॥
स्थानमः ॥ ॐ अजिष्ठकल ॥ ॥

गमयलि क्षर्चनी ॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥
आवाहनादिध्यान ॥ ॐ शिवय ॥ कामयलि
शिवसर्वरूपिणी ॥ वक्रगुचापितीदर्वः
माययितुवनश्वर ॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥
स्मृता ॥ ॐ हिमवतनिर्द्वीप ॥ गङ्गाक्षर
धारिणी ॥ सर्वपापहृत् ॥ शिवदेवदतीव स
र्वमपह्निदायिनी ॥ ॐ ति गमयलि क्ष्मपूजा ॥ ॥

तत्सुखिलाचर्चनी ॥ न्यास ॥

ततोऽपि वशा किं कलशमर्चनं ॥ न्यासः ॥
ॐ आ धा वज्र कथनमः ॥ ८ ॥ मन्त्रोऽस
नायनमः ॥ ध्यानः ॥ ॐ शुद्धमूर्तिकसीका
नी गन्धोऽसनीसीसिती। वरुणं जैदिन
जैव। विश्ववापीनमीश्वरं ॥ गदावक्रा
र्द्धरुक्माया। पाश्चात्त्यश्चक्रासुरो। अ
धकवासी विधुर्त। सद्यपिद्वनासनं ॥
ॐ पद्मासनायनमः ॥ ध्यानः ॥ ॐ वामप
द्मालयादवी। वरुणं रुक्मासुथीवना। स
र्वलीकावसीयुक्ता। यैकवक्रासु। शार
ना। अर्द्धदण्डकमुष्ण। उर्द्धवपुः
काङ्करी। प्रतानिधमविता। ध्यायन्मूर्ति
नाथदुविषयी ॥ मूलमन्त्रोऽप्युजनी ॥
ॐ ह्रस्वैकमुष्णयपुर्ववक्रायनमः ॥ ॐ ह्रस्व
नवासीदायदक्षिणवक्रायनमः ॥ ॐ ह्रस्व
कपिलायपश्चिमवक्रायनमः ॥ ॐ ह्रस्व
वनादायुर्द्धवक्रायनमः ॥ ॐ ह्रस्व
रुसंलक्ष्मीनमः ॥ ॐ ह्रस्व ० ह्रस्वदायेन
मः ॥ ॐ ह्रस्वमन्त्रपाश्चात्त्यन्यायनमः ॥
ॐ ह्रस्वमन्त्रमानावायनायविष्णुत्मनो
स्वाहा ॥ ॥ गकि कलशमर्चनं ॥ मूल
मन्त्रोऽप्युजनी ॥ ॐ विमलायेनमः ॥ ॐ
उत्कर्षणेनमः ॥ ॐ ह्रस्वनेनमः ॥ ॐ कि
यायेनमः ॥ ॐ योगनेनमः ॥ ॐ प

क्रायनमः॥ॐ सत्यायनमः॥ॐ बु
 लानायनमः॥ॐ अनूपदायनमः॥
 ॐ वरुणलक्ष्मी नमः॥ॐ कांक्षी लक्ष्मी
 वासुदेवाय नमः॥ॐ पूनषाकमाय
 लक्ष्मी सहायनमः॥ मूलषष्ठः ॥
 यद॥ नक्षत्र॥ यागा॥ वाणि॥ तिथि ॥
 असुविदं जीवी॥ॐ सदस्यभाषा॥ॐ
 ग्रायतलक्ष्मी॥ मयुता॥ॐ वाक्कलमः॥
 ॐ दधिकाप्रा॥ॐ या॥ रुलिनी ॥
 गता॥ॐ गतानां त्वा॥ॐ नमागताया
 ॥ॐ नमामतर्पयत॥ वलि॥ॐ नमाव
 दू॥ॐ असीया॥ॐ अश्ववायदधि ॥
 गिग्रास॥ॐ आयी॥ गता॥ दग्नी॥ॐ यय
 याना॥ॐ यदस्तु न्द॥ॐ यातवदसं
 लूया॥ॐ अर्द्धमासाप॥ॐ अग्र॥ य
 द॥ॐ बुद्ध्यात्माप॥ॐ नक्षत्र॥ ॥
 ॐ या॥ गता॥ गता॥ॐ का॥ गता॥ गता॥ॐ सु
 पर्वपा॥ॐ आवादवा॥ॐ अश्वस्तु
 पवा॥ॐ संप्रवक्तुनासि॥ॐ अक्षराजा॥
 क्रमकन॥ॐ समित॥ ॥ॐ सिधनमूढ॥
 ॐ ग्रायतलक्ष्मी॥ॐ या॥ रुलिनी ॥
 ॐ अनूपदा॥ॐ धुनसिधुर्वा॥ॐ तजा

सिधुका॥ॐ स्वस्तिना॥ॐ उति॥ॐ म
 नाक्षतियति॥ॐ जाय॥ स्ताय॥ॐ विश्व
 श्रुतिरुवपू॥ॐ कमलजावेक॥ॐ याव
 कजौदा॥ प्राप्येदवसनवत्तविनसह
 पावलां लक्ष्मी॥ विद्यापक्षजदपर्लमः
 लिमयंकुर्मं सथा॥ॐ गदा॥ॐ सीवकवसु
 निवित्रतमिदं विश्व॥ॐ सदायदु॥ ॥
 ॐ तिकलक्ष्मी चन विधि॥ ॥

अथ आह्वयार्थयगा यथैदं कथयन्
 न आह्वयदीयतां प्रका॥ ॥ दमाप
 ॥ॐॐॐ दायालाकपालाय रुगल
 रुयता दानवदीयमस्मा अस्माद्यह
 पूनदीवलिमतलदादवदवीपस
 नेशानानाविधिप्रसा होममद्वितयदा
 मन्त्रमदाविलापा अतस्त्वं दमार्थं शु
 नृगलरुवतां यहूमीपुर्णमस्तु॥ ॥ व
 उर्दिदायप्रादयनी॥ॐ उलाकया निरु
 निस्तवनालियनानिच॥ वक्ता विश्वनि
 वल्लभ॥ वक्ता कवन्तुमसदा॥ अजगन्नादि॥
 वायवागलायतिपूजा॥ॐ गतानां त्वा॥

ततः कर्मावाधनयथाविधानन
कममलुलपूजनं ॥ वन्दनादिप्रति
ष्ठा ॥ आपस्नाय ॥ ग्राममन्त्रा ॥ ॐ शशा
लाकपाला ॐ मां सुखित्यादीनां देवा
गलानामग्निकाया प्रसन्नारुवा ॥ ॐ त्या
क्षीप्रार्थय ॥ लाकपालिष ॥ पृथीक्षिप ॥

तथायजमानन कृषिमावाहनी ॥ ॥
नेमस्य दानायेनिर्मन्त्रनवलि अग्निना
हवदादि कृत्वा ॥ ॥ खभ्रमाहितान
अच्छिनजलधालया कृषुषुदक्षिणा कृ
त्य दानवाभसिंहासनाय विस्मृतय ॥
ॐ दमासन पादार्घ्यं हस्तार्घ्यं चन्दन
जक्षायतीतयष्य सर्वमूषदावमपरी
कितं ॥ ॥ आचार्यनपथ ॥ ॐ व
दितावलयरुस्य ग्रहविनिनिवावली
समस्तयरुजाया मलीकृत्ययहाता ॥
नवराजतिथ्यवदकारुवविधिनिवा
वली ॥ नाल्प्रवमसु ॥ ॐ तिपार्थिवाहनी ॥
आचार्यकृषुसमीपंगत्वा ॥ सर्ववाक्
लानरिवादयगावद्धीजलिनाक्षीप्रार्थ
य ॥ ॐ अग्न्यदह्ययज्ञवेद सामवदत्त
थर्वता ॥ उरुसाधकश्च न कर्मतायु

य ८

नृसर्जन ॥ क्रियाकर्मविधाने च स्वल्प
विकृतमहता ॥ सिंहासनमसाधारं
कथामिषु वक्ष्ये ॥ नमामि यधान
क्षेत्राक्षीददतसत्त्ववी ॥ ॥
सर्ववाक् ॥ ॐ ८ प्रतिवचनं ॥ आवाहय
उरुनमस्कारं कृत्वा सिंहासनमावाहय ॥

ततामूलावांनष ॐ न न्याम ॥ ॥
हृत्तुष्टि ॥ ॐ ८ याम ॥ ॥ अर्घ्यपा
प्रपूजा ॥ आपदीवकृष्णयातिदधि
सार्धं सतलुली ॥ तिलसिद्धार्थकीदूर्वा
वाद्यपाथप्रदायय ॥ ॥
कृषुस्त्रपनी ॥ ॐ अग्निमग्निहविमग्नि
सदाहवतु ॥ विद्वन्निहवावाहनी पू
वप्रिहय ॥ ॥ भखलाहस्त्रपनी ॥ ॐ
भजभखपरायतसूपूयपूजनवापता ॥ अ
स्याथपूयकार्यगर्हमादहिन ८ पूमा
ना ॥ ॥ कृषुस्थालीरुनी ॥ ॐ अग्निपूर्व
रिविविरिविशोतृतनवृत ॥ सदवा
हविष्यति ॥ ॥ कृषुस्थपूर्वभनका
॥ ॐ सफ ॥ ॐ यानपूजनं ॥ ॥
ॐ हलाकायगभयगीच्छद अग्निदवता
थनम ॥ ॐ ८ वलाकायडम्बिकच्छन्द

वायुदेवताय नमः॥ ॐ स्वस्ति काय
अनूपचक्रन्द आदित्यदेवताय नमः॥
ॐ महस्तीकाय हरुती चन्द्रवरुणस्यति
देवताय नमः॥ ॐ जनस्तीकाय पकि
चन्द्रवनरुणदेवताय नमः॥ ॐ तपस्ती
काय हरुप्रचक्रन्द बुद्धदेवताय नमः॥
ॐ सत्यस्तीकाय जगती चन्द्रविष्णुदेवा
य नमः॥ ॥ ॐ अतमाय नमः॥ ॐ रुद्र
देवाय नमः॥ ॐ विश्वामित्राय नमः॥
ॐ अमदग्नय नमः॥ ॐ वसिष्ठाय नमः॥
ॐ काश्यपाय नमः॥ ॐ अश्विनय नमः॥
ॐ यामिषीगिनि॥ ॥ शिवपूजनी॥ ॐ नमः
॥ रुद्राय॥ ॥ शोपानावाहनी॥ ॐ च
त्वारिंशत्॥ पूषदात्री॥ ॐ तिलोपानविधि॥

ॐ या डाघची॥ यरु सीरावनिबीक्षाही॥
 ॐ महीॐ न्द्रावडाहसुति॥ ह्यानखअंगु
 दीत्वा॥ गलापत्यादिवर्लिदापथ॥ ॥
 ॐ गलानीत्वागलापति॥ गलापति॥ ॥
 ॐ नभावरुभय॥ द्रुवर्लि॥
 ॐ ज्ञातवदस॥ द्रुवर्लि॥ ॥ धूपदी
 पजापस्कार्य॥ ॐ निर्वर्लि॥ ॥ अमुमनु
 लावलिविसर्जनी॥ ॥

अग्निक्लृप्तमृषादशसंस्कारं ॥ ॥
 ॐ ह्रीं सः हृदयाय नमः ॥ निमीदली ॥
 ॐ पृष्ठमित्राक्षिभ्यः ददमविताय दिवा
 मनुमसा जायन्ता ॥ यषु विष्णु विष्णुदयाः
 यस्तु यषु विष्णु वनमाविवसतु ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं
 सः अस्त्राय रुद्र ॥ ॐ अथाहिंसा ॥ सिक्कनी ॥
 २ ॥ ॐ ह्रीं सः अस्त्राय रुद्र ॥ ता उत ॥ ३ ॥
 ॐ ह्रीं सः कवचाय ह्रीं ॥ अथ दली ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं सः अस्त्राय रुद्र ॥ खननं ॥ ॐ यद्वा
 दवह उतति ॥ कृष्णनपविसमूहनी ॥ ५ ॥
 ॐ ह्रीं सः शिखायै वीषट ॥ दुर्धनी ॥ ६ ॥
 ॐ ह्रीं सः हृदयाय नमः ॥ पूर्वली ॥ ७ ॥
 ॐ ह्रीं सः शिवसंस्वाहा ॥ समीकवली ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं सः कवचाय ह्रीं ॥ अथ दली ॥ ९ ॥
 ॐ ह्रीं सः अस्त्राय रुद्र ॥ कूटली ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं सः कवचाय ह्रीं ॥ ॐ मानस्माकतनय
 ति ॥ उपलयनी ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं सः कवचाय ह्रीं
 ॐ त्वीमृति ॥ सीमार्कनी ॥ १२ ॥ ॥ ॐ तत्त्वा
 यामीति ॥ अर्धपात्रादकन अथ दली ॥ ॐ
 ३ सोरुनकलाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं सः (लो
 रुनकलाय नमः ॥ पूर्व ॥ ॐ ह्रीं सः सरुद
 कलाय नमः ॥ दक्षिणा ॥ ॐ ह्रीं सः सूक
 र्माकलाय नमः ॥ पश्चिम ॥ ॐ ह्रीं सः सो

पूजनी ॥ ॥ अथ पाठ कथादाग्निं कृत्वा
 शनिर्मन्त्रनी ॥ ॐ वक्षोह नीवगहनति ॥
 ॐ अथ वाचति वलिपदाने ॥ यवगिला
 कतन कथादाकृतिरयं ३ ॥ ॐ कथाद
 मययस्वाहा ॥ घृतश्च ॥ ॐ कथादमग्निं
 परिहृत्वा मिद्वयमवा शीगच्छद्विषवाहं
 । कथादाग्निं संपवित्यश्च ॥ उपसर्गनी
 ॥ अर्घपाथादकनात्मसिंघनी ॥ ॐ ॐ हे
 वायमितवा जातवदोदवस्थादवीवह
 उपजानी ॥ उपसर्गनी ॥ ॥ अर्घपा
 थादकनात्मसिंघनी ॥ न्यास ॥ ॐ श्रीं ह
 दयाय नमः ॥ घ ॐ ग ॥ गमय श्री ॥ ॐ वे
 श्मानवाय विद्महे अनन्ताश्चिताय धीम
 ह ॥ तन्नावद्भिपुथादयात् ॥ ॐ वां श्रीं व
 द्भिषतनाय स्वाहा ॥ ॥ ॐ अग्निं सवि
 त्वमानति पूजय ॥ धनमुद्रा ॥ रूत
 ३० व वेन्दव अतिवके कृतानलयय
 स्वात्मानं विश्रमय मूर्तिं श्वात्वा ॥ यानो
 लक्ष्मीं विविनय ॥ वीर्यं यो वद्विषक
 लयय ॥ ॥ ततोऽग्निं गृहीत्वा कर्तुं जा
 मय ॥ ॐ अथ अग्निं नृष सामयेति ॥ ॥
 विपुदक्षिणा कृत्य ॥ यजमानस्यादिना

गायत्र्या सादापविस्वर्गु कलशधराव
 वाहनलक्षाकृतियरुनिमित्तार्थ अग्नि
 स्थापनसमूर्तममु ॥ ॐ मयिष्टद्रामाय
 मि ॥ ॥ ॐ ह्रीं लीं क्रीं श्रीं मीं कीं क्रीं
 त्रुमसकाश्चिध ०० ॥ स्वाहा भूधाम ॥
 मूलननावायलागर्गगतीसम ॥ सर्ववा
 क्र ०४ स्वस्तिवाचनं प ० ॥ ॐ अग्निं स्थाप

ॐ मर्माहितवर्मा ॥ वालाग्निवद्वल
 र्थं ॐ न्वननपुच्छय ॥ ॐ पृथादिविपृष्ट
 ति ॥ वद्विपूजनी ॥ मूलमत्रुला ॥ कर्तव्यक
 लाप्रदाने ॥ ॥ ततोऽहवातनी ॥ पूर्वदिक्
 ॐ सायदायब्दमासनीनमः ॥ ॐ यश
 र्वदायब्दमासनीनमः ॥ ॐ सामवदाय
 ॐ दमासनीनमः ॥ ॐ अथर्ववदायनमः ॥
 ॐ अग्निमीठयवाहितति ॥ पूर्वशुद्धवा
 तनी ॥ समिधपवित्रीनिधयपुत्यकी ॥ ॥
 ॐ ॐ घत्वाति ॥ दक्षिणा अहवातनी ॥
 ॐ अग्निं आया ॥ पश्चिम अहवातनी ॥
 ॐ शिन्नादवी ॥ उरुव अहवातनी ॥
 ॐ सायदाय अग्निं गवाय सामदवता
 यगायत्रीकुन्दसनमः ॥ ॐ यशर्वदाय

[illegible]

ॐ बुद्ध (१) दमासननमः ॥ ॐ प्रदीप
 दमासननमः ॥ ॐ दिव्यगर्भतिबुद्ध
 सन ॥ ॐ बुद्धविश्रुतिप्रदीपसर्ग ॥ आः
 त्मासन ॥ ॐ तिबवासर्ग ॥ ॥ ततः प्रदी
 तश्रुद्धर्ग ॥ ॐ दवस्यति ॥ ॐ प्रत्यक्ष
 ० वक्षति ॥ यतर्पण ॥ ॐ मूनगितामीति ॥
 क्राशनसिमाकून ॥ ॥ आकाशवाविष्म
 प्रदीपपूर्वर्ग ॥ ॐ आकाशिसंमयाकुव
 ॥ बुद्धाय प्रदीपवन्दनजक्षायवीतपथ
 नपूजन ॥ ॐ बुद्ध (१) नमः ॥ ॐ प्रजाप
 तयनमः ॥ ॐ श्रुतिकर्तृनमः ॥ ॐ बुद्ध
 यक्षानी ॥ ॥ प्रदीपपूजन ॥ ॐ प्रदीपः
 तायनमः ॥ ॐ श्रुत्यानमः ॥ ॐ द्रव्य
 यनमः ॥ ॐ विश्रुवनमः ॥ ॐ अयापन
 यनमः ॥ ॐ वीतिपदवि ॥ ॥
 ॐ आबुद्धिबुद्ध (१) मकुण्डदक्षिणव
 द्धासुपनी ॥ तालपमाकासद्वयसहित
 न ॥ ॐ विश्रुवराटमसीति ॥ क्राश्रुद्ध
 प्रदीपसुपनी ॥ ॥ बुद्धाय प्रदीपपूर्व
 तपूजन ॥ ॐ बुद्ध (१) नमः ॥ ॐ प्रजाप
 तयनमः ॥ ॐ श्रुतिकर्तृनमः ॥ ॐ वः

ॐ आदित्योवास्त्रासि विष्णुर्वध्यासूर्यात्वादध
 नत्वीवद्वापावयध्यामि ॥ तधुलनिलीक
 ॐ अग्नस्मन्वसिवाया विसर्जनी ॥ तधुलय
 रुली ॥ ॐ दवतीतयत्वाग्न्यामि वरुणावासि
 तानस्ययः सन्वदवत्या हविः ॥ तधुलीरुहीत्वा
 ॐ समीधससमाध ॥ ॐ द्रव्यलतधुलीनिधाय
 हविः रुदहि रुविः रुदहि ॥ मणलयरुली ॥
 ॐ कृकृटोसिमधुजिह्व ॐ धमूर्जमावदत्त
 यावय ० सीधा ० सीधार्त ॥ कूटनी ॥ ॥
 ॐ अषावर्षरुदमसि ॥ सूर्ययरुली ॥ ॐ पुति
 त्वावर्षरुदवयु ॥ तधुलीसूर्यनिधाय ॥ ॥
 ॐ यत्रायुत ० वक्षः ॥ यत्रायुता अत्रायः ॥
 यत्राटनी ॥ ॐ अपहता अस्मान् वक्षः ॥ यत्रायु
 नकुः ॥ तधुलीनिक्षपनी ॥ मृत्वा ॥ ॐ दता
 वः सविताहिवल्धपाणिपतिगृह्णात्वच्छिद
 णपाणिना ॥ ॥ तधुलायुदली ॥ ॐ दवस्य
 ० शुन्धध्व ॥ किश्चिरुधुलीक्षिपगा ॥ तायाश्च
 क्षावगु ० तधुवनिधाय ॥ चन्दनादिपूजय
 गा ॐ गतमायनमः ॥ ॐ रुद्राजायनमः
 ॥ ॐ विष्णुमित्रायनमः ॥ ॐ अमदनय
 नमः ॥ ॐ वलिषायनमः ॥ ॐ कन्धपाय
 नमः ॥ ॐ अजयनमः ॥ ॐ श्रीनमारुगव
 तसीकर्षणाय श्रीनमः ॥ ॐ वक्राणनमः ॥

॥ ॐ विष्णुवनमः ॥ ॐ रुद्रायनमः ॥ ॐ पुना
 यानतवदति ॥ यविर्गृहीत्वा ॥ ॐ यत्वाक
 ति ॥ आशुस्मलीवनमः ॥ लीक (पुधिनय
 नी ॥ ॥ ॐ अपहता अस्मान् वक्षः ० निवः
 दिसदः ० यद्रूपानिपति मूर्धमाना अस्या
 ० मन्त्रस्वधयाचवन्ति यत्रापूत्रानिपूनाः
 यरुमन्त्राग्निर्होला कानपुमदात्यस्मा ०
 क्षति ॥ कालनावक्षतिर्न ॥ ॥ वक्षोर्थम
 गवयरुली ॥ ॐ तवादासिमृतीरुहवसा
 मन्दानमधसः ॥ अरिवषलजनिवष
 ल ॥ ॐ दंगारिर्हिवासाया ॥ ॥ ध्रुवदवा
 सिक्कथ ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ पुनर्पली ॥ ॐ
 गातावमिदु ॥ सीमाकनी ॥ ॐ अनसितासि
 ॐ ॐ धत्वाकृत्वा ॥ ॐ वाश्चवभाकनी ॥
 इविनाचरमाभाकनी ॥ ॐ सविदुश्चमि ॥
 कृणयग्भयहितानरुक्षा ० प्रवल्गमिम
 स्यदली ॥ ॥ ॐ सविदुर्वयसवति ॥
 आत्मास्यदली ॥ यविगान्नवहित आश्च
 र्ववलीसकवत ॥ ॥ यादलासीस्त्रावपूव
 वत ॥ ॐ यविगस्तुति ॥ उदकनापूवली ॥
 ॐ देवीवापतिगयाश्चवली ॥ ॐ यग्मा
 ॐ द्वावलातवर्कपूयस्त्रयमिदमरुः
 लाध्वरुहस्ययादिनास्तु ॥ नृदिगल

ययी॥ उं अग्नयत्वा यष्टिपादा मयि धामा
 स्त्री यष्टिपादामि॥ प्राद्वि (१) दकना स्याद
 ॥ उं वृश्चास्य खगल मयत्वा यष्टिपादाः
 मि वदिन मि वदिषत्वा शष्टिपादामि वदिन
 जि प्रस्य स्वा यष्टिपादामि॥ सर्वपाद ॥
 उं वषाह दव पुति सु नति॥ कृष्ण विपु दक्षिः
 ॥ कृत्य॥ उं अदित्ये वृन्दन मसि विष्णु स्तूपा
 स्तूष्मृद मत्वा स्तूष्म मि स्वा मस्तु दवत्वा रु
 पतय स्वाहा रुत न पतय स्वाहा रुतानी पतय
 स्वाहा॥ (१) षाद क यत्वा तनि धाय॥ ॥ सय वि
 र्व वरुन ख प्र प्र यत्वा तनि धाय॥ ॥ प्राद्वि
 ॥ दक्षिणात आय मुरु वत ॥ प्र कृष्ण वा च्चनी॥
 मूला यग्रनी॥ वन्दनादि पूजनी॥ उं वक्र (१)
 नमः॥ उं विष्णु वनमः॥ उं वृजय नमः॥ ॥
 आयस्व ली पूजनी॥ उं वक्र (१) नमः॥ उं वि
 ष्व वनमः॥ उं लक्ष्मी नमः॥ ॥
 उं ध्रुव सित्यूपय मत कृष्ण मादाय॥ ॥
 तत्ता इ मय दक्षि क्रिया मालरु ॥ उं यानिक
 ल्यनाय स्वाहा॥ दृष्टन॥ उं दय स्याथानि वसि
 रु प्रस्य नारि वसि मात्वा हि ० सीमा माहि ० सी
 उं गङ्गा धिनाय स्वाहा॥ उं गङ्गा अस्था घधीना
 गङ्गा वन स्यतीनी गङ्गा विष्णु स्य रुत स्या (१) ग
 शा नूपाम सि स्वाहा॥ ॥ उं पृथ्वी यत्वा
 हा॥ उं स्वस्ति पृथ म नूच व॥ ॥ उं सीमन्ता

नय स्वाहा॥ उं माहि रू तौ मा पृदा कृ नम
 रु आस्मा मानि च विदि॥ दृष्टस्य कल्या उ
 पसु तस्य पथ्य अम॥ ॥ उं जात कर्माय
 स्वाहा॥ उं काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतकः
 स्मै स्वा स्वाहा धीमा धीताय स्वाहा मनूय जाप
 तय स्वाहा विरु विरुताया दित्ये स्वाहा दिः
 ये मक्ष स्वाहा दित्ये सुमृधिका ये स्वाहा स
 नस्वत्ये स्वाहा॥ सनस्वत्ये पावका ये स्वाहा स
 नस्वत्ये रुतये स्वाहा पूष्ण स्वाहा पूष्ण यम
 थये स्वाहा पूष्ण नवधिका ये स्वाहा तव
 व स्वाहा तव वरुनीय पाये स्वाहा तव वरु
 नूपाय स्वाहा विष्णु वस्वाहा विष्णु वनिहपाय
 स्वाहा विष्णु वाणिपि विष्टाय स्वाहा॥ ॥
 उं सद्यस्तुत कना गाय स्वाहा॥ उं त्वमग्न य
 ति॥ ॥ उं नाम कवलय स्वाहा॥ उं प्राण
 य स्वाहा पा नाय स्वाहा दानाय स्वाहा चक्ष
 ष स्वाहा (१) गाय स्वाहा वा व स्वाहा मनम ००॥
 उं रुत प्रासनाय स्वाहा॥ उं या ४ रुतिनी या
 ४ रु॥ ॥ उं अन्न प्रास सैनाय स्वाहा॥ उं अन्न
 पतन॥ ॥ उं वृज कवलय स्वाहा॥ उं मूर्धा
 नी दिवा अरति पृथिव्या वेम्भन वमृत अजात
 मर्गि कवि ० सं यो म्रा ज न रितिय जनामा मा स न
 पाय ज न य न्क दवा ४॥ ॥ उं कर्ण रुदाय स्वा
 हा॥ उं रुद कर्ण रुति नृ नूयाम॥ ॥

पृथिवीसूर्यमात्माजगत्तत्त्वपञ्चस्वाहा
॥ ॐ अग्नयस्तृष्टिकृतसस्वाहा ॥ ॐ तिर्यज ॥

गतावदाकृतिं ॥ ॐ अग्नयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥
 ॐ पृथिवीस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ अन्नयस्वाहा
 ॥ ॐ दं ॥ ॐ पीतवर्णयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ
 वक्रलोस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ प्रजापतयस्वाहा
 ॥ ॐ दं ॥ ॐ सामयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ रुद्राक्ष्यस्वा
 हा ॥ ॐ दं ॥ ॐ लक्ष्म्यस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ वागीश्वरीश्व
 रीश्वस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ देवश्वस्वाहा ॥ ॐ दं ॥
 ॐ अश्विस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ प्रद्योतस्वाहा ॥ ॐ दं ॥
 ॐ मधयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ प्रह्लाथस्वाहा ॥ ॐ दं ॥
 ॐ धाम्नाथस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ मदमस्यतयस्वाहा ॥
 ॐ दं ॥ ॐ दं ॥ ॐ अनुमतयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ दं ॥
 ॥ १ ॥ ॐ यज्ञवर्चदायस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ अन्नविष्का
 यस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ वायवस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ त्व
 तवर्णयस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ प्रद्योत्यादि ॥ २ ॥
 ॐ सामवदायस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ सूर्यायस्वाहा ॥
 ॐ दं ॥ ॐ दिवस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ वक्रवर्णयस्वा
 हा ॥ ॐ दं ॥ ॐ प्रद्योतस्वाहादि ॥ ३ ॥ ॐ अथर्वव
 दायस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ दिव्यस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ
 ॐ नमस्वाहा ॥ ॐ दं ॥ ॐ रुद्रवर्णयस्वाहा ॥

ॐ दी॥ अर्चय स्वाहनि॥ ४॥ ॐ रु ४ स्वाहा॥
 ॐ दी॥ ॐ रुव ४ स्वाहा॥ ॐ दी॥ ॐ रु ४ स्वा
 हा॥ ॐ दी॥ ॐ रु रुव ४ रुव ४ स्वाहा॥ ॥
 ॐ तन्ना अग्रव नृणां स्य विद्वान्दव स्य रु अ
 न्रवया सिमीक्षा॥ यजिष्ठा वक्रितमसां शु
 चानां विष्णु द्वया॥ मिथुन मध्यम ॥ ॐ द
 मग्निषामासी॥ ॐ सत्त्वं अग्रवसारुसातीत
 दिक्षा अस्या उषसा चूक्षो॥ अत्र यश्च ॥ अत्र
 नृणां वरां ॥ विहीमृतीक० सह मन उ
 धि॥ ॐ दम ॥ अत्र नृणां स्या॥ ॐ अया अया अ
 स्य नरि ससि पांश्च सत्त्व मित्व मया अग्नि
 अया नाय रू वहा स्या नाधे हि रुष अ०
 स्वाहा॥ ॐ दमया अया॥ ॥ ॐ अतर्गती
 व नृणां थ सह सी य क्रिया पांश्च विततामः
 हानत रित्ना अय सविता थ विष्णु चिद्विष्णु
 थ रु म नृत ४ स्वर्काय स्वाहा॥ ॐ दी व नृणा
 याम विष्णु विष्णु व विष्णु स्या द व स्या म नृह्य
 ४ स्वर्काय ४॥ ॐ उ द रु मीव॥ ॐ ॐ दी व नृणा
 या दि स्या धि पत थ॥ ॐ ति प व व नृणा ह मी॥

ॐ ह्रुं वः स्वः वक्र (१) स्वाहा ॥ दक्षपञ्च
ययीवा ॥ तथेव वक्रा प्रहारा वदन्ना क

पाल, पूर्वदिकलक्षण, ऊयादि, यग, गंगदि
 ग्रहमेत्युज्जय, अश्वत्थामु, अश्विनाश
 दि, वक्राण्मादि, गणपुत्र, आगिनी, केशपा
 ल, सत्यादि॥ लक्ष्मादि, शनिक, पोष्टिक
 आगनुक॥ नागयक्षयक्षणा॥ गालक्षी, ग
 लपति, केशपाल, अश्वस्तुमादि, (गमयस
 कामात्री, (गमयलिङ्ग, शिवशक्ति, सुशि
 लि, काममण्डल, यिनायकपुत्र, वदिद्वाना
 नादि, सर्वथाष्टादशतिरुद्रयात॥ ॐ काम
 कामदधेधुद्धमिनायवन्ता यव॥ ॐ उद्याया
 शिखीपुष्पपुजायडाप्रधात्य॥ सीप्रवह
 तीपलातनिधाय॥ ॐ सफतश्रु (प्रतिष्टताद
 तियुष्म॥ ॐ तिष्टतादृतिदद्यात् ॥

ततातिलादृति कावथ॥ वीदिपात्रात्युद्ध
 ली॥ ॐ दवस्यत्वा॥ प्रतर्प्य ली॥ ॐ प्रत्युष्ट
 वक्षति॥ समार्जनी॥ ॐ अनतितासिसया
 यजमानतवीदिपात्रवीदिनिधाय॥ यवा
 दता, तिलमिर्घपक्षमृतसमिधक॥ समि
 धधरुलीपुष्पी, वक्रवस्त्राक्षमालिका॥ ना
 लिकलवित्वादिनिधाय॥ ततायजमाननयु
 वपुजनी॥ हस्तार्घ, वन्दन, ऊक्षापवीत, प

थी वशुलनीय अलीकन॥ कीकल॥
 कृणुलवकुलालाक्षितनरुतमूकटानि
 विदिपात्रधृत्वाप॥ ॐ॥ सर्वलीकाव
 सीयकीकीकलीमदिकानि च॥ कृणुला
 निमूकटानिगुन्ययप्रतिष्टकर्ता॥ वि
 श्रुयहूकनयसाममार्थसर्वसाधक॥
 तामुपायस्मितीवादि, गुन्ययप्रतिष्टकर्ता
 आयुः प्रायवकल्याणपुण्योयधनानि
 वा रुवतागुन्ययसादन, सर्वकार्यवसि
 दिदी॥ उपशोकथ॥ आचार्यलगुहोः
 त्वा॥ पूर्ववदलकावादिविधाननक्रमावा
 यपूजनी॥ ॥ ततामूलाचार्यन, मूलष
 उक्त्यास॥ वीदिपूजनी॥ ॐ ॐ द० हवि
 ति॥ गययात्रय॥ मूलमन्त्रनवा॥ कृसा
 दतजलनसंकल्प॥ यजमानस्यादिनावा
 यलपासादापविस्वर्षुकलक्षणधजाववा
 दनलकादृति यरुनिमित्तार्थ अग्रथवेः
 स्नानवायतिलादृति संकल्पसिद्धिमुख॥
 तताआदृति॥ महावाहतिपूर्वकतथे
 वा॥ वक्रा, पलात, वद, लाकपाल॥ ॐ॥
 यगपूवादि कलक्षण, ऊयादि वक्रा
 यादि॥ अश्विनाशदि॥ गंगदि॥ ग्रहमे

गणयुक्त्या गिना कृत्वा ल॥ अमु वासु
 ॥ सत्यादि॥ ल॥ अदि॥ गनु०, अभिनि कया
 शिका॥ अगनुका॥ नागयदयदका, गाल
 श्री गणयति दयपाल॥ अमु सुमादि, (म
 आस कामादी॥ (ममयलिङ्ग मृत्पूजय, नि
 वगकि, सुखुलि, कममधुल, यिनायक
 लु, आदिनायायल, वदिद्वाना अनादि॥ सर्व
 स्रमि स्ना कृतिश्रुया॥ यवतुरुवावथ
 दुक्तावदुक्तनुमदुध्व॥ तिलमाधववृषध
 उक्तवमिलितं कृत॥ समिधमूलपान्कच
 तपूतनस्वस्ववदनकृत॥ पूर्वतपू॥ ॥
 सर्वतुपुतिष्ठाकारय॥ ॐ पूजुं दधीति
 तिलाकृतिपूजु॥ ॐ तितिलाकृतिपूजु॥

एतसंस्कारया विनमया तसाधने वरसाध
 नयाय॥ अग्नि कृत्वा सत्रादमकुथालिसत॥
 आग्निदिगं दत्त धर्मनववृथ॥ ॥ साध
 यच्चवर्कपाकं दत्तार्थं शिष्याभववा॥ संस्कार
 रीतधुवादीनि, ष० अ० अ० कर्मपथ॥ धर्मा
 धर्मवचूना, (मो, प० वत्सूलसमृद्धव॥ मुखि
 कायववकन तपुलेतपवत्सुधा॥ दग्धः
 एतवरीयाकं, गकं लासहितपथ॥ आ
 वाक्क, धनमूडा॥ कृष्णसननकृत्वा दक्षिण
 स्तब्ध्या॥ गिरागकावय॥ कलगा, अग्निश्
 पविवावशुलपिनिष्यग, (नप्रासय॥ ॥

चउर्जुतवर्क, गंखचकगदाकिनी, क
 लुम, (अस्ति तीर्थाय, ददयार्कसमयर्क ॥
 ॐ तिवरविधि॥ ॥ ततादवस्यमूलम
 बुलसीखाकृति॥ गताद्वीगत, कृष्णयर्गमू
 लपान्कचतपूतनकृत्वा एतं श्रुया॥ ॥
 दग्धपाति॥ अभिनि कया शिका॥ दग्धवलि॥
 यवधायदि॥ ॥ तालिकलनेमयदाला
 (य, लाकापवाव, अग्नि लाहवदादिकं कृ
 त्वा॥ मूलावायदायय॥ ॥ युवावृषद, (म
 नजपित्वा, तत्तालिकलमा, कृष्णमबुल श
 रुया॥ ॥ वाक्क, लपूजा॥ आग्नि दन॥ अ
 नसं कल्प, एतदीयदक्षि वाहामी॥ ॐ सर्व
 वाचप॥ ०॥ अक्षरुवगत एताकृति ॥
 दग्धवलिहवर्ग॥ दक्षिण॥ वाचनजलीकल
 ग्ना, (यनिधाय॥ ॥ ततादिनपूजु॥ ॐ पूजुं
 दधीति॥ आसीसाप॥ ०॥ ॥ वाचनजलेनय
 जमानादिषर्क॥ चन्दनाशीर्वादिदद॥ ॥
 पुनत्रासादिसंख्याकृति॥ ॥ यजमाननव
 उर्ध्वदीमूलावायापूष्यदायय॥ वाक्क, ल० ८
 स्वमिवाचप॥ ०॥ ॥ विहितावृद्धिना
 लिकलप्रीरुतवृक वस्त्रपूवय॥ ॥
 नागीवर्मावायन आगमाकविधिनावलि
 दया॥ ॐ तिलकदहामविधानप्रथमदि
 नस्याग्नि स्तूपनविधि॥ ॥
 ततायवदुनिप्रातस्नानादिनित्यकर्म॥

[illegible]

व्योमपात्रे निक्षिप्य ॥ मूलाधार्यो नमः ॥
 सूर्यार्घ्यं गुणमस्तु नमः ॥ सार्धपात्राच्च नमः ॥
 वलिप्रदानं ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो वरुणाय
 ॥ ॐ हरीं हतपात्रानां ॥ ॐ विश्वतस्तु ॥ ॐ श्री
 नानियरु ॥ ॐ ८८ अमुयरु ॥ वहिदि
 य ॥ मधुपप्रदं किं कर्म ॥ ॥ पूर्वादिः
 कलपुजने ॥ ॐ अस्तु ॥ ॐ श्री ८
 लूतुं मुद्रां मुद्रां मुद्रां लोकापालमन्त्रं पुजने ॥
 ॐ श्री ८ हृदयाय नमः ॥ ॐ ३ दावसमूदाय
 नमः ॥ ॐ समूदायमि मधुमा ॥ ॐ ददवदयाः
 ० सुनाममृतत्वमानं ॥ हतस्यनामगुर्ध्वयद
 सिजिद्धादवानाममृतस्यनारि ॥ १ ॥ ॐ ति
 पूर्व ॥ ॥ ॐ श्रीवाधुवायनमः ॥ ॐ पयः ॥
 धिर्वापयडाधधारि ॥ २ ॥ श्री ॥ ॥ ॐ दः
 धिसमूदायनमः ॥ ॐ समूदायतावागायस्वा
 हा अनाधुवायतावागायस्वाहा पविधुवायता
 वागायस्वाहा सिधिविधुवायतावागायस्वाहा
 अस्वयतायतावागास्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ तिददि ॥
 ॐ हतसमूदायनमः ॥ ॐ दवन्नमः ॥ ॐ वासु
 तियन्नाह ॥ तावत् ॥ ॐ हृदययता अहृत ॥
 ॥ ४ ॥ ॐ तिनैमत्य ॥ ॥ ॐ ३ सुत्रादनसम
 दायनमः ॥ ॐ समूदं अष्टासलिलस्यमधु
 नानाघनानां यत्तु नविधुना ॥ ॐ श्रीवावकी
 वृषक्रावनाह आयादवीविहमावदत्तु ॥ ५ ॥
 ॐ तिवावत् ॥ ॥ ॐ ददुदिकसमूदायन

म०॥ॐ दवस्यत्वा॥३॥ॐ तिवायथा॥ ॥
 ॐॐ दममदायनम०॥ॐ समुद्रत्वामृम
 नाश्रुननृनदाॐॐ (धदिवाश्रुनडवन
 हतीयत्वावजमितस्मिवा० समयामपस्म
 महिषावदन॥१॥ॐ त्यक्तवा॥ ॥ॐ सिंधु
 समुद्रायनम०॥ॐ समुद्रगच्छस्वाहानुविद्ध
 गच्छस्वाहादव० सवितावेगच्छस्वाहामिवाव
 न॥ॐ गच्छस्वाहाहातावेगच्छस्वाहाहृदायुमि
 गच्छस्वाहायावापृथिवीगच्छस्वाहायहंगच्छ
 स्वाहासामंगच्छस्वाहादिवीनरागच्छस्वाहाग्नि
 वेष्मनवेगच्छस्वाहामहामध्वजिद्विदिवन
 धूमागच्छउसूथीतिपृथिवीरुष्मनापृणस्वाः
 हा॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥ ॥ततापूर्वमूर्त्तिकापू
 जनी॥ॐ॥ अश्वकान्कवथकान्कविष्णुकान्कवस
 न्धवा॥ॐ॥ तामिववाहनकृष्णनगतवाहना।
 मूर्त्तिकवक्त्रदलायकाश्रपनाहिमवितामूर्त्ति
 कहरमपापीयुतायादुष्टतीर्तरी। त्वयाहृतन
 पापनसर्वपापेषमूच्यते॥ ॥ अ॥ (मोकषाय॥
 ॐ॥ यरूयहंगच्छति॥ ॥ दक्षि॥ (अयल्लव॥ॐ
 विश्वावराटम॥ ॥ नैऋत्यपद्मादय॥ॐ॥ पद्मा
 नमपद्म॥ ॥ वाव॥ अकम॥ॐ॥ नम०॥ गमुवा
 य॥ ॥ वायव्यदीवगवा॥ॐ॥ पय०॥ पृथिवी॥
 ॐ॥ दधिकाप्रा॥ॐ॥ तज्जासिपु॥ॐ॥ गन्धद्वारा
 दूरा॥ॐ॥ गमययी॥ ॥ उरु॥ वर्षीवामृत॥ॐ॥ प
 य०॥ पृथिवी॥ॐ॥ दधिकाप्रा॥ॐ॥ तज्जासिपु॥

ॐ॥ मधुवातासतायत॥ॐ॥ शिवानामामि॥ ॥
 ॐ॥ (गवदि॥ॐ॥ वीरुयश्रम॥ ॥ क॥ (अदकी॥
 ॐ॥ दवस्यत्वा॥ ॥ (ग०॥ (अदका॥ॐ॥ साकाना
 मिर्दुपतिगूलमिर्दुवृषायमानावृषरुमुवा
 षाट॥ अक्षिन्नपयसामनस्वतीवादवीरावती
 विश्वतयुति॥ ॥ सर्वोदकी॥ॐ॥ आयाहिहाम
 ॥ (अ०॥ॐ॥ या०॥ (अ०॥ पूर्वजातादवस्यमि
 यगंयवा॥ मननवदूनामह०॥ गतीधनानिमुफ
 च॥ ॥ रुसा॥ॐ॥ नावायनायविमह॥ लक्ष्मी
 सहितायधीमहि॥ तन्नाविष्णुपवादयात॥ ॥
 (अ०॥ पा०॥ॐ॥ दूपादिवम॥ ॥ शिव॥ (अ०॥
 ॐ॥ आमिर्दुविद॥ अ०॥ ग०॥ (अ०॥ॐ॥ तिपूजन॥

ततायजमानन॥ दवनिर्मचनी॥ॐ॥ बक्षाहनी
 ॥ वलिपूजनी॥ॐ॥ अश्ववायति॥ अग्निताहस
 युगवक्षा॥ ॥ तलावाहनी॥ ग्रामविलासन॥
 ॐ॥ का०॥ॐ॥ का०॥ॐ॥ काल॥ॐ॥ दीर्घायत्वायव॥
 ॥ ॥ तत०॥ पूर्वदिक्कल॥ (अ०॥ दकी॥ शीखधृत्वादवस्ता
 नीकावथ०॥ यजमाननमूलाचार्यदायय०॥ ॥
 आचार्यनस्नानी॥ पृथमीपूर्वकल॥ (अ०॥ॐ॥ अश्या
 दि॥ॐ॥ समुद्रादुमिमिध०॥ मी०॥ उदावदूपा०॥ सुनाम
 मूलावमान०॥ एतस्यनामपुत्री॥ यदस्मिजिह्वा
 वानाममृतस्यनारि०॥ मूर्त्तिका॥ॐ॥ अश्वकान्कव
 थकान्क॥ ॥ ॥ अग्रथ॥ॐ॥ पय०॥ पृथिवीपय॥
 कषाय॥ॐ॥ यरूयहंगच्छयरूयतति॥ २॥

दक्षिणा॥ॐ समं दायत्वा वाताय स्वाहा समलिला
 यत्वा वाताय स्वाहा अनाधृष्टाय यत्वा वाताय स्वाहा
 यतिधृष्टाय यत्वा वाताय स्वाहा सिधिविष्टाय यत्वा वा
 ताय स्वाहा अस्वयत्वा यत्वा वाताय स्वाहा॥पल्ल
 व॥ॐ विश्वा नवाट॥३॥नेत्राय॥ॐ देव नमः
 वासुतिपुत्राहा तावत्पथः॥४॥सहस्रपुत्रा अङ्गुलः॥
 पद्मादयः॥ॐ पद्मानन॥४॥यश्चिभ॥ॐ सम
 र्दं अक्षः सलिलस्य मध्वनापनाना यन्नुनविष्वा
 ना॥ॐ ल्याया वज्रीरुषः कानवाट आषादवीनि
 रुमावदनु॥कश्म॥ॐ नमः॥१॥मृवाय॥१॥वा
 यय॥ॐ देवस्यत्वा सपु॥यश्च॥१॥यय॥१॥
 पृथिव्या॥ॐ दधिकाप्रा॥ॐ गङ्गा सिधुक्का॥ॐ
 गन्धदावा॥गययी॥३॥उरुव॥ॐ समं देवा
 नमना अस्मत्कृतवत्ता॥ॐ॥धदिवा अग्र उवः
 न॥॥हृती यत्वा वज्रसितस्त्रिवा॥०॥समया मूपस्कम
 हिषावदनु॥यश्च॥मृता॥ॐ यय॥१॥पृथिव्या॥ॐ
 दधिकाप्रा अ॥ॐ गङ्गा सिधुक्का॥ॐ मधूवा तासा
 ॥ॐ लिधानामा सिधुधि॥१॥ॐ॥गान॥ॐ सम
 र्दं गच्छ स्वाहा न विदं गच्छ स्वाहा दव॥०॥सविता री
 गच्छ स्वाहा मिषावन॥०॥गच्छ स्वाहा हाता गच्छ
 स्वाहा च॥०॥मिच्छ स्वाहा यावा पृथिवी गच्छ
 स्वाय री गच्छ स्वाहा मा मी गच्छ स्वाहा दिव्य नरु
 गच्छ स्वाहा ग्रीवैश्च नरै गच्छ स्वाहा मरुता मध्व
 यजुश्चिदित न धूमा गच्छ पुंस्यति पृथिवी
 रुसना पृष्ठ स्वाहा॥वाहि॥ॐ वीर्य यम॥॥

[illegible]

म॥ रुला रिषकी॥ उं नाजालिषकी॥ उं य४ रु
 लिनी॥ उं तिस्त्रानविधि४॥ ॥
 तता विन्धक मां पूजा॥ रुसाद्यचन्दनजला
 पवीत पूष्य धूप दीप दक्षिण भूजनमला
 लाया॥ ॥ तता ३ अंनप्रदाने॥ उं य४ अंनित
 न्नमन्यपयवनिपवितद्वषा वाचकवाचनादिवि॥
 वस्तुपविधाने॥ ॥ दवस्यमूलमवुं उजययवि
 खित्वा हृदयगर्भधवर्ण॥ ॥ कल (ग) स्वर्ण
 दवस्व रूपप्रतिमानववन्तादिकल (ग) पविनि
 धय॥ वन्दन सिद्धव जलापवीतमालापूष्य
 मगुल धूप दीप रुलालीकवर्णदद॥ रुला
 रिषकी॥ आबलि प्रतिष्ठा॥ उं मना हुति४॥ ॥
 उं उं देविश्रू॥ दवकल्पथ॥ ॥
 अं उं लदवास्तुयने॥ उं उलिखवक्रलस्यत॥
 दवायागवायाथनि अर्घयणदकनात्युदायित्वा॥
 लक्ष्म वायनवर्लि॥ यजमाननवाजाक्षपने॥
 वा क्रलोनस्वस्मिवाच्यप०॥ मृदङ्ग मृयादि
 मङ्गलीकावय० याजीरुत्वा॥ नगलीवास्वदिग
 वा स्वतालम्बा यरुमधुपम्बाजामय॥ ॥
 यरुमधुपनेमत्यद्वागयनिर्मङ्कनाद्यगिला
 हनेका॥ मगुलमावर्दि॥ अविच्छिन्नजलध
 नयादक्षिणपवित्रमण यरुमधुपपुर्वोरुव
 रुदयी० निधय॥ ॥ यासादिगयाकल
 गवर्ने॥ उं विश्वाववाटमसि॥ दवर्तनयास
 गयनयाकरावतायाय रुगानरुयकारा

वना॥ उं वा उं का उं अत्पराहनिपवयय
 यस्यवि॥ यवानाद्वर्षतनेमहभनसतनया॥
 पञ्चसूक्तवस्त्रथ॥ आकृतिवित्तनसाध
 थ॥ उं शिवतत्वायस्वाहा॥ उं नम४ गमुवा
 य॥ उं विद्यातत्वायस्वाहा॥ उं उं देविश्रूवि
 व॥ उं आत्मतत्वायस्वाहा॥ उं उं वक्रयज्ञानी॥
 यश्चतत्त्वगययीमूलमवुं ल (ग) धने॥ ॥

तता ४ सीखा कृति॥ दभापाटि॥ गनिकयोहि
 क॥ यवधन्यादि॥ पूर्ववद्विधाना नालिकली
 रुदया॥ दशवर्लि॥ वाक्रलपूजा॥ अन्नम
 कल्प॥ घृतदीपवृत्ति काहामि॥ उं सर्ववावय
 ०॥ वलिहवर्ण॥ दक्षिणदाने॥ वाचनेकः
 ग (य) निधय॥ ॥ ततादिनपुष्पि॥ उं पुष्पि
 दवीति॥ आसीमाप०॥ वाचनजलन यज
 नारिषकी वन्दनागार्वादीदद॥ ॥ पुनन्या
 मादि सीखा कृति॥ यजमाननचउर्वदिमुला
 वायानिपूष्यदापय॥ वाक्रल॥ ४ स्वस्मिवाच
 नेप०॥ ॥ वाहिपायीदिनालिकवर्ण रु
 लीपूलथ॥ कयीकर्मावायनि आगमाकावि
 विधिनावलिदया॥ ॥ उं तिलकहामविध
 नद्वितीयदिनस्यविधि४॥ ॥

तता ५ पवहुनिपातस्नानादिनित्यकर्म॥ नेम
 यद्वावा (य) यजमानन॥ उं अद्यादिसूर्यार्घ

कृत्वा॥पुष्पराजनी॥मूलाचार्यदय४पादय
काल्या॥वलिदयदत्ता॥मधुर्यगच्छ॥पूर्वव
यकालनसी॥गया॥अनदिद्यालकलभर्ज
नी॥सिंहासनायविस्तिता॥गुण॥आसाया
सादिपा॥अयाम्॥अर्घपात्रपूजात्मानैव ॥
कलभर्जनकुमलसर्वथा॥आदुर्ति॥यजमा
नयजमानी॥गितवन॥अधय॥पूर्वव॥ ॥

ततायथकर्मसमयदवद॥कि यामालरु॥
॥यश्च॥पूज्यवस्य॥यजमानादवसमीपग
च्छ॥॥ॐ॥यानिकल्पनायस्वाहा॥ॐ॥कृणुस्यथा
निवसि॥कृणुस्यतारिवसिमात्वाहि०सीमामा
हि०सीस्वाहा॥॥वृत्तन॥ ॥विष्णुमययी॥
ॐ॥अशुकल्पनायस्वाहा॥ॐ॥वसन्तनअशुनाः
दवावसवस्तुतासुता॥वधंतवगतजसाहवि
विद्ववथादध॥॥मूलनवीर्यप्रदाने॥ॐ॥वीर्य
प्रदानायस्वाहा॥ॐ॥वतामूर्धविजहातिथानि
यतिस्थादिय॥गङ्गाजलायुतावर्तुलीजहा
तिजमता॥अतनसत्यमिदियविपान०शु
क्रमन्धसवेदुस्यदियमिदयथा॥मूर्तिमधू॥
ॐ॥तिवीर्यप्रदाने॥ ॥ॐ॥३॥कववायह
स्वाहा॥ॐ॥वअविष्टदा॥ॐ॥तिवदा॥ॐ॥ग
हृदिनायस्वाहा॥ॐ॥गङ्गाअस्याधानीगङ्गा
वनसतीनी॥गङ्गाविश्वस्यरुतस्या॥अर्जुन

अपामसिस्वाहा॥ॐ॥तिगङ्गाधनी॥ ॥ॐ॥य
प्रवनायस्वाहा॥ॐ॥सुस्मिनॐ॥डाटद॥ॐ॥
तिर्य्यप्रवण॥ ॥ॐ॥सीमभानयनायस्वाहा
ॐ॥गिवानामामि॥ॐ॥तिसीमभानयने॥ ॥
ॐ॥जातकर्मयस्वाहा॥ॐ॥या॥अयस्वाहापा
पानायस्वाहा॥यानायस्वाहा॥यद्वधस्वाहा॥अ
जायस्वाहा॥वाधस्वामनसस्वाहा॥ॐ॥तिजात
कर्म॥ ॥यस्यीतयाकायगुहाल॥दिवच
मनी॥ॐ॥इयदादिव॥ॐ॥यावमनी॥ ॥
लाचनदद॥ॐ॥३॥कानयययायवदस्वाहा
ॐ॥तच्चद्वद्विदितप्राति॥ॐ॥तिलाचनदः
द॥ ॥मूलमन्त्राष्टमधूदापय॥ॐ॥
तजासिष्टुकम॥ ॥ॐ॥नाडीकुदनायस्वाः
ॐ॥यस्यतयस्त्रियगङ्गायस्यथानिहिनध
या॥अर्गमयद्रुतायस्यतस्मा॥समजीगम०
स्वाहा॥ॐ॥तिनाडीकुदने॥ ॥गमययीमनु
जहृदया॥ॐ॥अमयजातायनूदानसत्या
पुत्यजातानूदजातवद॥अधिनी॥इदि
सूमना॥अहर्तुवस्यममममिष्टिवनूष
डहो॥ॐ॥तिजातविधि॥ ॥यूगीरुल
तामूलमहोषध॥गुणलवनदाने॥ ॥
ततागमययीमनुजहृदया॥कल॥अदकन
सिष्टय॥ॐ॥आथा॥अस्मानमातव॥ॐ॥
यलिषकी॥ ॥ततात्तपनी॥ॐ॥उक्ति

बुद्ध्याऽप्यतदवयवैस्तस्मिन्महा। उपययत्तुमन्
 त४ सुतानवहुन्दुपाशुरुवायवा॥ ॐ ह्यः
 त्वनं॥ ॥ षष्ठीयाग॥ क्षत्र्यापरिषद्दीर्घ
 कमृत्पाशुदीर्घकालय॥ ॐ श्रीगुरुभक्तवत्स
 विष्णुवत्त्वाभामसातनूवमिविष्णुवत्त्वाति
 रथवातिथ्यममिविष्णुवत्त्वाभनायत्ताभामरु
 भविष्णुवत्त्वानागस्याषदविष्णुवत्त्वा॥ गद्दी
 पाशुवाञ्जनपदानं॥ ॐ समिद्धाञ्जनक
 दवमतीनीष्टतमग्नमधूमर्त्यन्वमानतावा
 जीवहृत्वाजिनंवाजिनंदवानावद्विषिय
 मासधर्म्ह॥ ॥ ॐ सद्यस्तुतकनामयस्वा
 हा॥ ॐ त्वमग्न्युक्ति॥ ॐ तिसद्यस्तुतक
 नासनं॥ ॥ ॐ निष्कुमनायस्वाहा॥ ॐ शु
 मनीनिषदनंयच्चपञ्चमससर्वत४। यच्चपः
 थायच्चयामिञ्जयाससर्वाताग्नपिदवध
 स्तु॥ ॐ तिसिष्कुमनं॥ ॥ ॐ नामकनगा
 यस्वाहा॥ ॥ ॐ यथादवस्यनामिलिखित्वा॥
 ॥ ॐ पासनं॥ ॐ कायस्वाहाकसोस्वाहाका
 कसोस्वाहास्वाहाधामाधातायस्वाहामनूय
 जायतयस्वाहाविर्हविस्त्रायादित्यस्वाहाः
 दित्येमञ्जस्वाहादित्यमृधिकायस्वाहास
 स्तव्ये०० सवस्त्वत्यपावकायस्वाहासवस्व
 त्येदहत्येस्वाहापूष्स्वाहापूष्पयथय

[illegible]

कृतम॥ शिखायै मध्वमाये नमः॥ ॐ कृतम॥
 कवचाय अनामिकाय नमः॥ ॐ कृतम॥ नया
 र्याकानिहाय नमः॥ ॥ वक्रुन्यास॥ ॐ कृतं क
 षाय पूर्वविक्राय नमः॥ ॐ कृतं कर्मिहाय दक्षि
 णवक्राय नमः॥ ॐ कृतं कपिलाय पश्चिमवक्रा
 य नमः॥ ॐ कृतं शीतनादाय उत्तरवक्राय नमः
 ॥ ॐ कृतं संज्ञवेलाय नमः॥ मध्व॥ ॥
 श्रीगन्यास॥ ॐ कृतं हृदयाय नमः॥ ॐ कृतम
 ॥ शिखरसंस्त्राहा॥ ॐ कृतम॥ शिखायै वषट्
 ॐ कृतम॥ कवचाय कृतं॥ ॐ कृतम॥ नया र्या
 वषट्॥ क० रुद्रदीपपरां अस्त्राय रुद्र ॥
 अनेनोद्योगेन पूजय ॥ अत्मपूजा॥ आस
 नी॥ ॐ कृतम॥ नानन्दाय नमः॥ ॐ ३ श्रीधर्मा
 य नमः॥ ॐ ३ श्रीरुद्राय नमः॥ ॐ ३ श्रीरूपा
 य नमः॥ ॐ ३ श्रीजयाय नमः॥ ॐ ३ ॐ वे
 वेनास्त्राय नमः॥ ॐ त्रिविक्राये नमः॥ ॐ ॐ
 त्रैलोक्याय नमः॥ ॐ ३ नानन्दाय नमः॥ ॐ
 श्रीधर्माय नमः॥ ॐ श्रीरुद्राय नमः॥ ॐ
 श्रीरूपाय नमः॥ ॐ ३ श्रीजयाय नमः॥
 ॐ ३ ॐ श्रीवेनास्त्राय नमः॥ ॐ त्रिविक्राये नमः
 ॥ ॐ ३ ॐ श्रीतैलोक्याय नमः॥ ॐ पूषुषुय
 नमः॥ ॐ ३ श्रीधनराजाय नमः॥ अनन्त॥
 दालार्जुवा॥ स्कन्दनालपद्मपद्मकणव
 कर्णिका॥ ॐ गुरुजसनाय नमः॥ ॥

ॐ शिवस्तु यनम॥ ॐ शिवस्तु धिपतय

नूदायनमः॥ॐ यातनूदा॥१॥ॐ क्षातत्वा
 यनमः॥ॐ क्षातत्वाधिपतयसर्वायनमः॥
 ॐ असीद्याता॥२॥ॐ वक्त्रिमूर्त्यनमः॥ॐ
 वक्त्रिमूर्त्याधिपतयपद्मपतयनमः॥ॐ स
 विद्या॥३॥ॐ यजमानमूर्त्यनमः॥ॐ यज
 मानमूर्त्याधिपतयउग्रयनमः॥ॐ यूनश्वा
 दित्या॥४॥ॐ अर्कमूर्त्यनमः॥ॐ अर्कः
 मूर्त्याधिपतयनूदायनमः॥ॐ तमीशान ॥
 ॥ॐ जलमूर्त्यनमः॥ॐ जलमूर्त्याधिपत
 यरुमायनमः॥ॐ अस्मिन्महः॥५॥ॐ वाः
 यमूर्त्यनमः॥ॐ वायुमूर्त्याधिपतयः
 नानायनमः॥ॐ तववायुहस्यत॥ ॥
 ॐ इन्द्रमूर्त्यनमः॥ॐ इन्द्रमूर्त्याधिपत
 यमहादेवायनमः॥ॐ नभावात्याय॥ ६ ॥
 ॐ खमूर्त्यनमः॥ॐ खमूर्त्याधिपतयरुमा
 यनमः॥ॐ नभास्वनीलयावाय॥ ७ ॥यावाः
 दितल्लाटान्॥ॐ वक्त्राधुमूर्त्यनमः॥ॐ
 वक्त्राधुमूर्त्याधिपतयपर्ववक्त्राधुनमः॥
 ॐ तिपक्षविंशति तत्वरुदयासनयमः॥

ततः षड्विंशतितत्त्वान्यासः ॥ ॐ पृथिवीतत्त्वा
त्वायनमः ॥ १ ॥ ॐ आपतत्त्वायनमः ॥ २ ॥
ॐ तज्जलतत्त्वायनमः ॥ ३ ॥ ॐ वायुतत्त्वायन
मः ॥ ४ ॥ ॐ आकाशतत्त्वायनमः ॥ ५ ॥ ॐ ग
न्धतत्त्वायनमः ॥ ६ ॥ पादादिपुष्पार्कनैः ॥

ॐ नमस्तत्त्वाय नमः॥ १॥ ॐ वृषतत्त्वाय नमः॥ २॥ ॐ पर्वततत्त्वाय नमः॥ ३॥ ॐ गद्यतत्त्वाय नमः॥ ४॥ ॐ शालतत्त्वाय नमः॥ ५॥ ॐ जिह्वातत्त्वाय नमः॥ ६॥ युञ्जति युञ्जति॥

ॐ चक्रतत्त्वाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ त्रिकतत्त्वाय
नमः ॥ १४ ॥ ॐ लम्बितत्त्वाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ
वाक्यतत्त्वाय नमः ॥ १६ ॥ ॐ पाणिनितत्त्वाय नमः ॥
१७ ॥ ॐ पादतत्त्वाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ गुणदि
नायार्ने विनमः ॥ ॥

ॐ पोयूतत्वाय नमः॥ १८॥ ॐ उपसूतत्वाय
नमः॥ १९॥ ॐ मनतत्वाय नमः॥ २०॥ ॐ वृद्धि
तत्वाय नमः॥ २१॥ ॐ अहंकारतत्वाय नमः॥
२२॥ ॐ प्रकृतितत्वाय नमः॥ २३॥ नाद्यादिद्वय
यान्ते॥ ॥ ॐ प्रवृत्ततत्वाय नमः॥ २४॥

ॐ वागवत्वाय नमः ॥ २७ ॥ ॐ नीतिवत्वाय नमः
॥ २८ ॥ ॐ कालवत्वाय नमः ॥ २९ ॥ ॐ कला
वत्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ मायावत्वाय नमः ॥ ३१
॥ ह्रदादितालमूलानि विन्यस्य ॥ ॥

ॐ विशाखतत्त्वाय नमः॥३१॥ ॐ सद्भवितत्त्वाय नमः॥३२॥ ॐ श्रीगुरुतत्त्वाय नमः॥३३॥ ॐ सदाशिवतत्त्वाय नमः॥३४॥ ॐ शक्तितत्त्वाय नमः॥३५॥ ॐ वरतत्त्वाय नमः॥३६॥ गाल मूलादिललातार्कः॥ ॐ तिषट्पिंडातिरुद्रदयास॥

[illegible]

ॐ नमः शिवाय ॥ ३४ ॥ ॐ भद्राय नमः ॥
ॐ नासाय नमः ॥ ३५ ॥ ॐ कान्ताय नमः ॥ ॥
ॐ वसि ॥ ३६ ॥ ॐ यज्ञाय नमः ॥ ॥ ३७ ॥
ॐ स्वधाय नमः ॥ वामदेवे ॥ ३८ ॥ ॥
ॐ निमिषे विनिमिषे कलायास ॥ ॥

[illegible]

五

उं कीं प्रोक्तीं हृषीकेशाय हृषीये नमः ॥
 वामग ॥ उं कीं प्रोक्तीं प्रपद्यतां रायं यदा
 येनमः ॥ उद्धृष्टं ॥ उं कीं प्रोक्तीं प्रदामादवा
 यलजायेनमः ॥ म ॥ ध ॥ उं कीं प्रोक्तीं उं
 वामदवायलयेनमः ॥ उद्धृष्टं ॥ उं कीं
 प्रोक्तीं उं सै कर्षणाय काल्येनमः ॥ अ ॥ ध ॥ द
 न ॥ उं कीं प्रोक्तीं श्रीपद्मनायपीत्येनमः ॥
 मुखरु ॥ उं कीं प्रोक्तीं श्री ८ श्रीनिवायः
 येनमः ॥ नासा ॥ य ॥ उं कीं प्रोक्तीं कं चक्रि
 नजयायेनमः ॥ दक्ष स्कंध ॥ उं कीं प्रोक्तीं खं
 गदिनविजयायेनमः ॥ दक्ष बाहो ॥ उं कीं प्रो
 क्तीं गंगाभिनिपरायेनमः ॥ दक्ष मणिर्ध ॥
 उं कीं प्रोक्तीं पंखजिनमयायेनमः ॥ दक्षिण
 हस्तीयुली ॥ उं कीं प्रोक्तीं दं नखिनचक्रयेन
 मः ॥ दक्ष हस्तीयुलिनख ॥ उं कीं प्रोक्तीं वं
 हलिनवायेनमः ॥ वाम स्कंध ॥ उं कीं प्रोक्तीं
 चक्रमंगलिनविलासिनेनमः ॥ वाम बाहो ॥ उं
 कीं प्रोक्तीं जं नूतिनजयायेनमः ॥ वाम शिव
 ॥ ध ॥ उं कीं प्रोक्तीं जं पागिनविवजायेनमः ॥
 वाम हस्तीयुली ॥ उं कीं प्रोक्तीं उं श्रीकृष्ण
 विष्णुयेनमः ॥ वाम हस्तीयुलिनख ॥ उं कीं प्रो
 क्तीं तं मूकदायविनदायेनमः ॥ दक्षालो ॥
 उं कीं प्रोक्तीं ॐ नन्दाय गुरुदायेनमः ॥ दक्ष
 जं ध ॥ उं कीं प्रोक्तीं उं नन्दिनस्मृतेनमः ॥ द
 क्ष जानो ॥ उं कीं प्रोक्तीं तं नवायसंधेनमः

शक्तिमा २

न तापना न्याम ॥ ॐ क्लीं नमः ४ परायणी वात्म
ननमः ॥ ॐ क्लीं नमः ४ परायणी वात्मननमः
४ ॥ जगद्द्वयं सत्त्वादि ॥ ॐ क्लीं नमः
४ परायणी वात्मननमः ॥ ॐ क्लीं नमः ४ परायणी

[illegible]

ॐ कं खं गं घं ङं पृथिव्या फ जा वा या का शत
न आ ह द या य न म ॥ ॐ ॐ वं चूं जं झं ङं द
स्य इ नि प य स ग ल्हा तान न म ॥ गि न स स्वा हा
ॐ उं टं ठं डं ढं णं । श्री गत्वक्क द्रु जि क्षा ध्या ए
त्मने डं लिखाय वोषट् ॥ ॐ पुं तं थं दं धं नं वा
वमलि पादपा यू प स्तु त्तनत्रै कववा यद्ग ॥
ॐ डां पै रुं वं रुं मे व कु था दान ग मन वि स र्ज



ASHA ARCHIVES
3458

225 00 522

नन्दात्मनो ननु ग्याय वोषट् ॥ ॐ श्री
 यैर्नलैर्वेदं संप्रदत्तं ननु मन्त्रां वृद्धाहं
 कालचिन्तात्मनश्चुत्वा यदुह ॥ ॐ तिष्ठ
 लोष उ गन्यास ॥

तता जीव न्यास ॥ आदिना वा योऽस्य मूल
 मन्त्रोऽलं गीवा मरुर्वा कृत्वा ॥ जीव प्रव
 ला कृति ॥ ॐ यना कुवस्य विमृथा विवर्षि
 नदादाय पृथिवी जीवदानी ॥ यामेव यैश्च
 दुमसि स्वधारि साम दिवा सा अनदिग्ध
 यन्ता ॥ प्राकृतीना सादयै द्विघता दध
 सिन्वादा ॥ जीव प्रतिष्ठा पूज्ज्वा ॥ तथेव दि
 ग्वताका यश्च वामन ध्वज दधु चन्द्रम
 उलादीन् प्रतिष्ठा कावथ ॥ ॐ ति जीव न्यास

तता देवा चर्चने ॥ सौ गभर्षी गन ॥ आवाहन
 ॥ ध्यान ॥ गिया अलि ३ ॥ धूप दीप आपसा
 य ॥ ॥ देवा चर्चन कर्म लक्ष्मी कृति ॥ ॐ ॐ देवि श्रू
 ॐ ध्यायत ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ सय ॥ ॐ सिग
 नृत्मी ॥ ॐ ति देवा चर्चने ॥

ततः सैख्या कृति ॥ दक्ष भ्याति ॥ दक्षवर्ति ॥
 गभर्षी कपोलिक यवधन्यादि पूर्ववदि
 धिनाना लिकली शक्या ॥

वाक्कलपूजा॥ अन्नमीकल्या॥ घृतहर्तिका
 हार्मि॥ ॐ सर्ववाचप (०१)॥ वलिहर्तिका॥
 दक्षिणदानी॥ वाचनीकलसम (यनिधाय)
 गतादिनपूजा॥ आसीमाप (०१)॥ वाचन
 जलनयजमानाभिषेक॥ चन्दनागार्वादि
 दद॥ ॥ पुनन्यामादिर्मखाकृति ॥
 यजमाननवगुर्वदिमूलावायनिपूषीदाप
 थ॥ वाक्कलपूजा॥ स्वस्तिवाचनीप (०१)॥ व्रीहि
 पात्रव्रीहि, नालिकल, आरुलीपूवथ॥ ॥
 वायो कर्माचार्यन आगमाकन विधिनाव
 लिदद्या॥ ॥ ॐ तिलकहामविधानह
 तीयदिनस्य विधि ॥ ७ ॥

गतामत्र इहनि प्रातस्नानादि नित्यकर्म क
 त्वा॥ अर्घ्यदावा (ययजमानन, अथादिमु
 र्यार्थ)॥ पूषाकाजनी॥ वगुर्वदिमूलावाया
 दय॥ पादपदाला॥ वलि यदत्तामगुर्प
 यवि (०१)॥ पूर्ववित्यकात्रलमा (झापा) न
 दिद्यालकलसमर्चनी॥ मिहामनायविस्ति
 त्वा॥ पुनर्न्यामादि, या (०१) यामी॥ अर्घ्य
 पात्रपूजात्मानधर, कलसमर्चनकर्मसमर्च
 य॥ आकृति॥ स्वस्तिमधु (०१)॥ ७ ॥

गितवन आकृति मूवर्गकलसंघवनप
 (०१)॥ गतायथकर्मसमथ, यामाददंग
 वावा मुदर्वस्वपयगा ॐ कौ कौ कौ वा स्वा
 धिपतयवक्कल (०१) नमः॥ कलसमध्या॥ तयः
 न्यामा मूलघर्त (०१) न॥ आवाहनी॥ अत्यः
 कथकाष्टविवरतस्मर्वनिधाय॥ अष्टदि
 शिमध्या॥ नवननधधु लाह व्रीहि डाषधी
 कलसकतइवा पूषीनिधाय॥ नत्तगर्ग ॥
 यावर्जसूर्यकानिश्च, ॐ दुनीलश्रयाः
 मयगी॥ नेत्रायातुमहानीली, वानुधमोकिर्क
 यम॥ पूषावागनुवायशी, पद्मवागनुध
 रुव॥ वेद्व्यामीगदिरा (०१) म (०१) सर्वातिथा
 जय॥ ॥ लाहगर्ग॥ काश्चनश्चतथा मू
 ल, लाहगुपूतथेवव॥ अनीतितीर्थयाघा
 थकासीसीपूर्वतः क्रमात्॥ ॥ धातु॥ हनि
 तालश्रकासीसी, मादिकीसेनेकीतथा॥ वस
 थविश्रमत्पुर्वान्कथामोवर्गुगेविकी॥ गन्ध
 पाषानर्कथेव, मत्रर्कविश्रमत्क्रमात्॥ ॥
 डाषधी॥ डगालीविष्णु, कान्कथ, तथायडक
 वन्दनी॥ कृष्णायुवश्चमलय, मलिवाकृष्टम
 वव॥ सीखपूषीतिपूर्वादि, त्राषधीगतामः
 यत॥ ॥ व्रीहिगर्ग॥ व्रीहिगधूमध्याया
 निसाधार्म गान्यवागिलानानीवाल (०१) व

सामाका. कमात्पूर्वोदिविचयः ॥ ॥ मन्त्रा
दीनामलाश्रय. यमदक. यथावर्त. ॥ धातुसा
वयंमलादी. वी. जालाधतथयव. ॥ उषधाना
मलावतु. यमदक. वन्दन. ॥ ॥ मन्त्रम
वर्णवजतयदी. ॥ यमवर्त. ॥ नववर्त. ॥ स्वर्ण
विकवा. रुजयववा. दवस्यमूलमर्चलिखा
(गमवायमन. ॥ तद्वर्धस्वर्णविकाली. ॥ तद्वर्ध
स्वर्णवजतपादका. ॥ नर्तयासादिपूर्वदक्षि
ण. पश्चिमडक. नार्कयश्चयश्च. ॥ पूर्वोदिन
वकाश्च. ॥ ॐ. दादिलाकपालवीडीलिख. ॥
पीतवृ. (धुनिषट्कवन्दविन्दनादार्कलिख
॥ ॐ. डी. म०. यन्दमधुलादिपूजा. ॥ ॐ. डी. म०
आधायश्चपाषाणकामर्त. कल. (मूलमर्च. ॐ. ग
न. ॥ न्यास. ॥ मन्त्रात्मलीनी. ॥ इकूलवन्निनकृश
॥ ॥ ततायजमाननसूवर्णकलर्णित्वा. या
सादयकमधुप. दक्षिणपत्रिकमण. अयता
वाक्. ॐ. यमला. जादियनपासादार्कगः
कृ. यश्चस्मिवाचनीपठित्वा. ॥ मन्त्रलायी. ॥
तद्वर्धयन्दमधुलीकृपथ. ॥ तद्वर्धयष्ठाका
लादिकलसीकृपथ. ॥ तताविह. ॐ. दिहृषणी. ॥
वृटा. (मकवटा. यदलमालाविहृषिता. यः
धमालासकृ. गादि. दक्षिणकपताकिका. ॥
पश्चिमयसका. गलक. मन्त्रलीकितका. चिता. ॥

दिक्कटाका. यष्ठा. वामलममलीकता. ॥
ततागिलाहवका. ॥ मधुला. ॥ वन्दन. मिहृव
जलापवीत. पथ. दक्षिणयु. ॐ. गी. वी. ॥
तत० यमसू. ग. व. व. य. ॥ यश्चसू. ०. म०
यक. मधुप. ग. त. (यवकम. ॐ. म०. ॥
ॐ. डी. म०. आत्मतत्वा. यत्वा. ॥ ॐ. व. क. य. ॥
ॐ. डी. म०. विद्यातत्वा. यत्वा. ॥ ॐ. ॐ. द. वि. ॥
ॐ. डी. म०. शिवतत्वा. यत्वा. ॥ ॐ. न. म०. ॥ म०
वा. या. ॥ ॐ. ॥ मन्त्रासक. त. द. वि. गिला
मन्त्रा. नि. वाल. य. ॥ यमादा. व. न. य. म. ॥ ना. म. र. ग
विनिर्दि. ॥ ॥ ॥ तता. ॥ य. पा. ॥ ग. ॥ ही. त्वा. या
सा. दा. र्क. ग. ॥ ॥ न्यास. का. य. ॥ कल. र्ण. न्या. म
वी. ॥ गितत्वा. दि. ॥ क. (न. वा. ह. म. न. वा. अ. य. न
व. य. व. ली. पूर्व. वि. ष. दि. ग. त. त. ॥ ॥ मन्त्रि
क. कल. म. र्ण. र्ण. ॥ ॥ तत०. पू. ज. न. ॥ ॐ. डी.
म०. आत्मतत्वा. धि. य. त. य. न. म०. ॥ अ. (ध. र. ॥ ग. ॥
ॐ. डी. म०. मा. या. त. र्ण. त. व. क. या. प. का. य. व
क. (न. म०. ॥ म. (ध. र्ण. म०. ॥ ॐ. डी. म०. म. दा.
शिवान्. वा. य. क. वि. द्या. त. त्वा. य. न. म०. ॥ ॐ. डी.
म०. वि. द्या. त. त्वा. धि. य. त. य. वि. श्रु. व. न. म०. ॥ ॐ. र्क.
का. य. ॥ ॐ. डी. शिवतत्वा. य. न. म०. ॥ ॐ. डी. शिवतत्वा
या. य. का. य. शिव. य. न. म०. ॥ ॥ अ. र्ण. व. ला. क. या
ली. र्ण. म०. ॥ अ. र्ण. व. ला. क. या. ॥ रु. म. वि. की. र्ण. म०.

उं॥ तद्वदि नमुजक कृष्णनुविकीर्य॥
 तमावदि॥ कवचजफतिलानुविकीर्य॥
 वलिर्नका॥ पूर्ववत्तत्त्व्याम॥ विगत्वादि
 पञ्चविंशतितत्वा॥ पृथिव्यादि॥ पञ्चतत्त्व॥
 पूर्ववत्त्वकावत्॥ प्रविसर्वयमीनिर्ध॥
 तता जीवयति॥ सर्वज्ञसंपूर्ण॥ समस्त
 लवलायावद॥ उं॥ सुमित्रावर्ष॥ ०॥
 दय्यरुदीर्गवमागधदिधारिहत्वा॥
 मूलवार्थ॥ पञ्चासत्तत्त्व॥ सकलीकृत्याम
 पूत॥ पवनगुर्दि संपाद्य॥ उं॥ पद॥ क्रम
 जीवत्याम॥ ॥ यथादवत्तथाद्वाभावाव
 वज्रलिकारुव॥ वलिकेवत्तथावत्तत्त्व
 लक्ष्मजसर्वज्ञ॥ ॥ पाण्डकिध्यान॥ वका
 म्॥ धिस्त्रपालसदन॥ सभाजाधिपूलाक
 नाग्र॥ पाणिकादधुमिद्रुवमथगुणमयी
 कृष्णयध॥ वाधन॥ विद्यालक्ष्मकयालीपि
 नयनगितापीनवक्तावृहा॥ दवीवालाक
 वधुर्गुरुवतिसुखकरी॥ पाण्डकि॥ यनान॥
 उं॥ आदिनावाय॥ तस्यपाण्यतिष्ठामन्त्रस्य
 वक्रविष्णुवृदासयश॥ सामधर्वास्था॥ च
 न्दान्निमृतिचुन्दावाक्चुन्दाकृपामयव
 प॥ पाण्यदवतापाण्यतिष्ठार्थजप
 द्विनिआग॥ उं॥ ओं॥ क्रीं॥ यैर्नलीवैर्गैर्गैर्

हेलीर्दं॥ म॥ ओं॥ आदिनावाय॥ तस्यपाण्य॥
 सर्वद्विआनि॥ हागत्यसुखविनिष्ठदुः
 स्वाहा॥ १०॥ पाण्यस्यविधिमूर्ति॥ प्रतिमा
 मीनिवर्णय॥ मूर्ति॥ नव॥ क॥ पु॥ नागि
 कार्या॥ वक्र॥ गल॥ नाश॥ धा॥ धा॥ धा॥
 नस्तुनविधिकावय॥ पू॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥
 वस्यविष्ट॥ ॥ पतिष्ठान्निवत्याम॥
 अलिकानध॥ पाण्य॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥
 मि॥ नगथा॥ यतथावत्त॥ ॥ यथाददिवी
 नथा॥ आधा॥ नवौ॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥
 जवास्तथापुन॥ नाशक॥ दी॥ यमदीर्ग॥ पु॥
 न॥ क॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥ पु॥
 व्यापितेवविधिमर्त॥ मूलमन्त्र॥ यम
 जीवपार्थय॥ पाण्यदवता॥ जीव॥ आय
 द्दहिमर्तधनी॥ विद्यालक्ष्मसुखदहि॥ दहि
 भलघसीयति॥ ततादव॥ उं॥ सुमित्राव
 भयायनम॥ उं॥ अनादयनम॥ उं॥ वाधाय
 नम॥ उं॥ नियस्त्रसर्मायनम॥ उं॥ अविना
 शितनम॥ उं॥ सदादयनम॥ व्यासपू
 जावलि॥ आदृति॥ ॥ उं॥ क्रीं॥ म॥ नावाय॥
 सुमित्रावत्ताहा॥ उं॥ ३॥ नाथ॥ व्यायका॥ रुवत्ता
 हा॥ उं॥ ३॥ नाथ॥ अपमया॥ रुवत्ताहा॥ उं॥ ३॥
 नाथ॥ अनादिवाध॥ रुवत्ताहा॥ उं॥ नाथ॥ नित्या

रुवस्वाहा॥ ॐ ३ नाथ अविनम्य रुवस्वाहा॥
 ॐ ३ नाथ हफा रुवस्वाहा॥ ॐ ३ नमाना नाः
 यना यविश्वत्मन अजस्रपि ननि त्यायन
 मानम॥ ला आ सहस्रधुमिन् ॥ ॐ सिं बारु
 वविष्टं गश्रा गुह्यं ववाश्च वना पृथुर्हवसूख
 दस्तु मन्त्रपूनी पवाहन स्वाहा॥ ॥
 तना दवाचने॥ सीं गार्पा गन॥ तना धजाव
 धयगा वक्रतव धजावा॥ धजावनाहनेका
 वयगा॥ तद्वद्ध आसनयव॥ ॥
 यथाकव धुमिर्यक मूलवीज समन्विता ॥
 तदायनिष्कपिर्तद्वं विधियुक्तनकर्मणा
 ॥ निष्ठां समुद्रदवाचने॥ तथेवकमला ॥
 पञ्चसूत्रावयवयगा॥ सर्वस्य ४ आदूर्तिद
 यागा॥ ॐ ॐ देविश्रु विरिपू ॥ ७ ॥

अथविश्वकर्मापूजने॥ कवमिमावकस्व
 स्मि कामनयावर्क अरुणि हवनतयका
 वपूजायाय अरुणि यश्च मृतादि स्नानव
 दनादिपूजने॥ दक्षिणार्क॥ ॥ विश्वक
 र्मापूजने॥ विश्वकर्मा ॐ दमा मननम॥
 पूषन्म॥ रुस्मार्थ चन्दन यक्षापवीत पू
 षी॥ विश्वकर्मा ८ रुस्मत्तलचन्दननस्वस्मि
 कीलिख॥ ततः पूजने॥ ध्यान॥ दिशुर्जयी

नदहसु जटाधनी कजामनः विश्वक
 र्मागिदा गेय्या स्नानमदाकस्यपद ॥
 मूलमन्त्र॥ ॐ वां वीं वूं वूं विश्वकर्मा ८ न
 म॥ ॐ गनपूजयं ॥ वद॥ ॐ विश्व
 कर्माविमता आदिहा याधता
 यत्रमासदक्रा तर्था विनिममिषामदनि
 यगासक सषीनपवचकमादृ॥ ॥
 आदूर्ति॥ धूप दीप जप स्नान ॥ विश्व
 कर्मानिमसुखी येलाक सृष्टिकानका
 यथायुधक नासीव विश्वकर्मानमास्तु
 त॥ दक्षिण सह अरुणि लाय ॥ ॐ तिवि
 श्वकर्मापूजा॥ ॥ अथार्क गच्छ ॥
 दयावायवदि दवरु कवमि यजमन
 मीधिसीत ध्रुवानकायासीत अरुणि न
 धिसीत॥ ॥ अथस्त्री वहात्र ॥ ॐ अथवा
 नाहकल्पयादि॥ ॐ अथादि॥ यजमनस्या
 दिनावायव यामादायवि सुवर्षुकलगाध
 जावनाहनसिंभारुवगु॥ ॐ यतिष्ठिता सि
 दवग सपतिष्ठा रुवत्तयी मानिध्वपति
 पयन् यजमाना सुवद्वयगा॥ मन्नामुदि
 पदनित्ये गन्नामुवचगुष्यद गन्नामुसर्व
 लाकार्ता गन्नावाहीतिथेवच॥ यजमानस्य
 रुथार्य पशुप गमवाधवा॥ नदनुसर्वद

वानां दशम्यनमाश्नुता ॥ ॐ रुगव
 न्दवदवश, यासादयनिनिर्मितं । तस्याश्च
 प्रसमानाय सूवधुकलशधर्ज ॥ यवमान
 न्दवपल, यद्वापुतनवतसा । टीकयामिद
 धीकश, गृह्यतीविदलश्ववश ॥ यावदुतया
 तसूया, धर्जषवववधुनि । तावद्वर्षमह
 मालि, विष्णुलाकमहीयत ॥ नाह्मनिर्जयी
 नाजा, मुखिनः मुख्यामथा ॥ मस्वक्रिया
 वधर्म्मष, मूक्रिदाभायभवव ॥ रुमलक
 यदानन, पृथकाटिगुलीधर्ज ॥ ॥ यवर्ज
 न्ददिवाकवपरुतयाव्यामीगलनित्य ॥
 यावत्तनूदिमाववपरुतयमिष्ठनिरुथी
 तलकिंलागिगिजायतिः ॥ सूवमनयाव
 नदीसागवाः ॥ स्वर्णमकलशधर्जनिनूप
 मीतावच्चिरीतिष्ठयु ॥ ॥ धर्जादानकलश
 दानवाच्य ॥ यवत्यतिमालिगवदीयावत्य
 नममानवश ॥ तावद्युगसूहमालिकर्णवि
 श्रुपुत्रवसः ॥ ॥ वद ॥ ॐ स्मिन्नारुवदीर्ग
 ॥ ॐ यावतीयावापृथिवीयावच्चसफसिन्ध
 वावितस्मिन् ॥ तावत्तुमिदतयहं मूकागृह्णा
 मर्क ॥ ॐ मयिर्यादिर्यदृहन्मयिदक्षामयि
 कृणु ॥ घर्म्मस्त्रिषुविवाजतिविवाजातिषा
 मरुवक्त्रलभतजसासह ॥ धूर्वलापृल ॥

लाजाकपनी ॥ ॥ अग्निलाहवका ॥ वन्दन
 सिद्धन, सयुलभगीर्वाद ॥ ॥ ततः ॥ पंचा
 रिषर्क ॥ यतिषाकलभरिर्क ॥ ॥ उर्कवाच
 उष्टयैवा ॥ ॐ दवस्यत्वाविदि ॥ ॐ वीहय
 धर्म ॥ पृथारिः ॥ काटकप्रसादी ॥ ॐ प
 नस्वादिह्या ॥ रुलारिषर्क ॥ ॐ याः ॥ रुलि
 ना ॥ अकताटक ॥ ॐ दीर्घायस्वा ॥ पूपा
 टक ॥ ॐ स्माकानामिदं यतिशूलं ॥ ॐ द
 षायमानादृषरुमुनाषाट ॥ दृतसूषाम
 नमाभादमाना स्वाहादवाग्मृताभादय
 नी ॥ लाजाटक ॥ ॐ ॐ ॐ वरुहवकाः
 भ्या ॥ पुनर्मूलमनुलकलभरिषर्क ॥ ॐ अ
 यमग्निः ॥ पूनीश्वावयिमानपृष्टिवर्द्धनः
 अत्यपुनीश्वाविश्रुममरिः सहजायवृत्ता
 हा ॥ ॥ आवरि ॥ ॐ नजासि ॥ आकृतिप
 तियतिषा ॥ ॐ मनाहूति ॥ जाप, स्माग ॥
 ॐ तिर्पयारिषर्क ॥ ॥ ॥
 धर्जदलुसमावाय, मन्त्रलभनवृद्धिमान् ॥
 लक्ष्मीधर्जसिद्धय, गजदृषमथापिवा ॥ ध
 जावायमहास्वर्त, गतमहर्कवर्कनी ॥ अथ
 वादवालयामार्त, विगुलधर्जदवर्क ॥ ॥
 वधर्जसमावाय, पातयच्चन्द्रमधुल ॥ य
 लघाउलकी ॥ गति, वन्दविश्वसमायत ।

सूत्रं मुक्ति कागर्हं पूजयामूलयस्य
व॥ पूजयामूलयस्य वायापश्चिमपात
नी। रुद्ररुलमवाप्राति। (गर्हं रुद्रनवीविदुः।
अरुद्रभानिर्कहामि कशिप्रमूलविशया॥
ननभानिर्कहवद्वी नवर्गहाममायव॥ ॥
व॥ ४ समनकी शरुजनवन्दमधुलीविलिः
श्रुतचन्द्रमधुलीयजमाननधृत्वा तपुचन्द्र
मधुलमूलाचार्यनिधजीयातय॥ ॥ नाना
मंगली पञ्चशदादिकी कावय॥ ॥ धजयय
यीवायेकीवायासादवद्वनी॥ ततायजाननध
जाधृत्वादवसमयर्णीवाक् ॥ ६ अश्ववावाहः
कल्पति॥ ७ अश्यादि॥ ८ रुगवन्दवद्वनी
जैलाअशययुर्जुज॥ यथाश्रद्धाधर्जदया
० प्रीयतीमधुसूदन॥ स्वतमहाधर्जदया॥
कन्वावाययवैगिकी। किंकिनीनवसमाना
मयुवकु गुरुषिर्त॥ वतनेवविधानन सर्व
दवापविस्तिर्त॥ सैवत्समसहस्रकं भादतदि
विविष्नुव॥ धजमालाकूलीदिश्यं यथायाः
सादमानतः। यथाधजाहर्कीवापि दिष्टिदिह
निवलय॥ सविमानसहस्रला दिष्टिधज
सु। शरुनी॥ कल्यायतसहस्रायं भादतदि
विविष्नुव॥ पूजयामूलयस्य वायापश्चिम
मकशक। अश्ववर्कहविद्याय याभानेस
यकशकी॥ आय४ कामिप्रियं शुकी पीतयेव
धनपद॥ नाजपायैतथावश्यं वकवर्धुध

अश्व॥ कवली दधिधर्जयसा॥ रुद्रगय
विनाशनं॥ सर्वकामविधिषु ८ धजादानम
रुद्रली॥ यहादिवस्वतन्वनी यनिसेखायुया
वती॥ तावद्वर्षमरुसादि विष्नुलाकमहीय
ता॥ ॥ दक्षिण॥ काय॥ साय॥

ततः ४ सीखा कृति ॥ दशपाति ॥ दशवलि
 ॥ शान्ति कपोलिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्व
 द्विधनानालिकली श्रुत्या ॥ ॥
 वाक्कलपूजा ॥ अन्नसंकल्प ॥ चतुर्दीपव
 लि काहाम ॥ ॐ सर्ववाच्य ॥ ०१॥ वलिः
 हनली ॥ दक्षिणदान ॥ वाचनकलशाय
 निधाय ॥ ततः दिनपूजा ॥ आसीमाप ॥ ०
 ॥ वाचनजलनयजमानादिषु ॥ चन्द
 ने आशा चोदद ॥ पूतन्यासादि सीखा
 कृति यजमाननचतुर्ध्वदिमूलावायान्
 यषीदापथ ॥ वाक्कल ॥ ४ स्वस्तिवाचन
 प ॥ ०४॥ वाहिपात्रवाहिनालिकलश
 रुलीपूत्रथ ॥ वागोकर्मावायानवलिः
 दापथ ॥ ॥ ॐ तिलकहामविधानचतु
 र्थदिनस्यविधिः ॥ ॥

ततः ४ यत्र ३ कृतिपातस्नानादिनित्यकर्म
 कृत्वा ॥ अर्द्धदाना ॥ ययजमानन ॥ सुया
 र्थ ॥ पूषाजने ॥ चतुर्ध्वदिमूलावायान्

य ४ पादप्रक्षाल्य ॥ वलिद्वयंदत्तामंशपेष
 वि ॥ १॥ पूर्ववित्तुकात्रलमांशपेषां गन
 दिद्यानकलशमर्चन ॥ सिंहासनापविस्ति
 त्वा ॥ यवधन्यासादिपूजायाम् ॥ पूर्वव
 त्तुकात्रलमांशपेषां गनदिद्यालकमंश
 मर्चन ४ आकृति ॥ मूलधन्यादिपूतिषाः
 कुमंश आकृति ॥ दवपूने आकृति ॥ ॥
 ततः ४ सीखा कृति ॥ दशपाति ॥ दशवलि ॥
 शान्ति कपोलिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्व
 वद्विधनानालिकली श्रुत्या ॥ वाक्क
 लपूजा ॥ अन्नसंकल्प ॥ चतुर्दीपकाहा
 म ॥ ॐ सर्ववाच्य ॥ ०१॥ वलिहनली दक्षि
 णदान ॥ वाचनकलशायनिधाय ॥ ततः
 दिनपूजा ॥ आसीमाप ॥ ०१॥ वाचनजल
 यजमानादिषु ॥ चन्दन आशा चोदद
 द ॥ पूतन्यासादि सीखा कृति ॥ यजमा
 ननचतुर्ध्वदिमूलावायान् यषीदापथ ॥
 वाक्कल ॥ ४ स्वस्तिवाचन प ॥ ०४॥ वाहिपा
 त्रवाहिनालिकलश रुलीपूत्रथ ॥ वागो
 कर्मावायान् आगमाकविधिनावलिदाप
 थ ॥ ॥ ॐ तिलकहामविधानपंचमदिनस्य ॥

ततः ४ यत्र ३ कृतिपातस्नानादिनित्यकर्म कृ
 त्वा ॥ अर्द्धदाना ॥ ययजमानन ॥ सुयादि ॥

सूर्यार्ध॥ पूष्यराजने॥ चतुर्विंशदिमूलावा
 याथ॥ यादयकाल्या॥ वलिद्वयदत्तामधु
 यैषवि॥ १॥ पूर्ववत्पुकावलासी॥ गायत्री
 नदिद्यावकल॥ भवने॥ सिंहासनायविस्मि
 त्वा॥ पुनर्वासादिपा॥ यामी॥ अर्धपाय
 पुजात्मान॥ कल॥ भवनकमल॥ सर्वस्य
 आकृति॥ मूलधजादिप्रतिष्ठाकमल॥ कृति॥
 दवस्त्रानादि॥ आकृति॥ ॥ ततः॥ सीखाकृ
 ति॥ द॥ पाटि॥ द॥ वलि॥ भक्तिकयोष्टिः
 क॥ यवधन्यादि॥ पूर्वद्विधनानालिकलीकृ
 द्या॥ वाक्क॥ पुजा॥ अन्नसंकल्प॥ दृष्ट
 दापय॥ काहमी॥ ॐ॥ सर्ववाचप॥ ०१ ॥
 वलिद्वय॥ दद्वि॥ भवने॥ वाचनेकल॥ भ
 यनिक्षय॥ ततादिनपुष्प॥ आसीमा॥ वा
 वनजलनयजमा॥ अरिषर्क॥ वन्दन॥ आसी
 र्वादिदद॥ पुनर्वासादि॥ सीखाकृति॥ ॥
 यजमानतचतुर्विंशदिमूलावा॥ यानिपुष्प
 यथ॥ वाक्क॥ ॥ स्वस्तिवाचनेप॥ ०२ ॥ वा
 हिपायवीहिनालिकल॥ रूलीपुवथ॥ ॥
 नाशोकमावाथन॥ आगमाकविधिनावलि
 दापय॥ ॥ ॐ॥ तिलहामविधानमफमदिनस्य
 मदिनस्यविधानं॥ ॥
 ततायव॥ रुनिपातस्नानादिनित्यकर्मकृ
 त्वा॥ अर्धद्वावा॥ ययजमानत॥ ॐ॥ अथादिसूर्या
 र्ध॥ पूष्यराजने॥ चतुर्विंशदिमूलावा॥ यादय
 ३ यादयकाल्या॥ वलिद्वयदत्तामधु
 वि॥ १॥ पूर्ववत्पुकावलासी॥ गायत्रीगनदि

दय॥ यादयकाल्या॥ वलिद्वयदत्तामधु
 ३ यादयवि॥ १॥ पूर्ववत्पुकावलासी॥ गायत्री
 गनदिद्यालकल॥ भवने॥ सिंहासनाय
 विस्मिता॥ पुनर्वासादिपा॥ यामी॥ अर्धपाय
 पुजात्मान॥ कल॥ भवनकमल॥ सर्वस्य
 कृति॥ मूलधजादिप्रतिष्ठाकमल॥ कृति॥ ॥
 दवाचने॥ आकृति॥ ततः॥ सीखाकृति॥ द
 ॥ पाटि॥ द॥ वलि॥ भक्तिकयोष्टिक॥ ॥
 यवधन्यादि॥ पूर्वद्विधिनानालिकलीकृ
 द्या॥ वाक्क॥ पुजा॥ अन्नसंकल्प॥ दृष्ट
 पृथिविकाहमी॥ ॐ॥ सर्ववाचप॥ ०१ ॥ वलि
 द्वय॥ दद्वि॥ भवने॥ वाचनेकल॥ भ
 निक्षय॥ ततादिनपुष्प॥ आसीमाय॥ ०१ ॥
 वाचनजलनयजमाना॥ अरिषर्क॥ वन्दना॥
 र्वादिदद॥ ॥ पुनर्वासादि॥ सीखाकृ
 ति॥ यजमानतचतुर्विंशदिमूलावा॥ यानिपुष्प
 : यथ॥ वाक्क॥ ॥ स्वस्तिवाचनेप॥ ०२ ॥ वा
 नाशोकमावाथन॥ आगमाकविधिनावलि
 दापय॥ ॥ ॐ॥ तिलहामविधानमफमदिनस्य

ततायव॥ रुनिपातस्नानादिनित्यकर्मकृ
 त्वा॥ अर्धद्वावा॥ ययजमानत॥ ॐ॥ अथादिसूर्या
 र्ध॥ पूष्यराजने॥ चतुर्विंशदिमूलावा॥ यादय
 ३ यादयकाल्या॥ वलिद्वयदत्तामधु
 वि॥ १॥ पूर्ववत्पुकावलासी॥ गायत्रीगनदि

द्वावकलः श्रवणं ॥ सिंहसभायविस्मिता ॥
 मुनूषां न्यासादिप्राप्तयाम् ॥ अथपिपिता
 नश्चपूजय ॥ कलः श्रवणं कुमलः कृति ॥
 दवाचनं ॥ आकृति ॥ मूलधजाप्रतिष्ठाक्रम
 नाकृति ॥ ॥ ततः संख्याकृति ॥ दशपाः
 टि ॥ दशवलि ॥ शान्ति कपोष्टि कं ॥ यवध
 न्यादि ॥ पूर्ववदिधिनानालिकलीशकृया ॥
 वाक्कलपूजा ॥ अन्नमीकल्पयुतवृत्ति काहा
 मं ॥ ॐ सर्ववाचप ॥ ० ॥ वलिहवर्ग ॥ दक्षि
 णदानी ॥ वाचनं कला ॥ यनिधाय ॥ तता
 दिनपू ॥ आसीमाप ॥ ० ॥ वाचनजल
 नयजमानाविषकं ॥ वन्दन आसीर्वादीद
 द ॥ ॥ पुनन्यासादि संख्याकृति ॥ यज
 माननवदुर्धदिमूला वा यान्पूषीदापय
 ॥ वाक्कलः ॥ स्वस्ति वाचनं प ॥ ० ॥ वायो
 कर्मा वा यान् आगमा कविधिनावलिदद ॥
 ॐ तिलकहामविधान अष्टमदिनस्थविधि ॥

ततापवः ॥ हनिपातस्नानादिनित्यकर्म कृ
 त्वा ॥ अर्धवाचा ययजमानन ॥ ॐ अथादि
 सुयार्थ ॥ पूषराजनी ॥ वदुर्धदिमूला वा
 योदय ॥ पादपकाल्या ॥ वलिदयदत्वा यरू
 मधुपेयवि ॥ ० ॥ पूर्ववत्पुकावसा ॥ अथा
 ॥ अतदिद्वावकलः श्रवणं ॥ सिंहसभायवि
 स्मिता ॥ मुनूषां न्यासादि ॥ प्राप्तायाम् ॥

स्मिता ॥ मुनूषां न्यासा ॥ प्राप्तायाम् ॥ अथ
 पातपूजात्मानं ॥ कलः श्रवणं कुमलः कृति ॥
 कृति ॥ मूलधजादिप्रतिष्ठाक्रमलः कृति ॥
 दवाचनं तथेवाकृति ॥ ततः संख्याकृति ॥
 शान्ति कपोष्टि कं ॥ दशवलि ॥ दशपाति ॥
 यवधन्यादि ॥ पूर्ववदिधिनानालिकलीश
 कृया ॥ वाक्कलपूजा ॥ अन्नमीकल्प ॥
 दत्तदीपवृत्ति काहामं ॥ ॐ सर्ववाचप ॥
 ० ॥ वलिहवर्ग ॥ दक्षिणदानी ॥ वाचनज
 लकलः ॥ यनिधाय ॥ ततादिनपू ॥
 आसीमाप ॥ ० ॥ वाचनजलनयजमानाः
 विषकं ॥ वन्दन आसीर्वादीदद ॥ पुनन्या
 सादि संख्याकृति ॥ यजमाननवदुर्धदिमू
 ला वा यान्पूषीदापय ॥ वाक्कलः ॥ स्वस्ति
 वाचनं प ॥ ० ॥ वायो कर्मा वा यान् आगमा
 कविधिनावलिदापय ॥ ॥ ॐ तिलक
 हामविधाननवमदिनस्थविधि ॥ ॥
 ततापवः ॥ हनिपातस्नानादिनित्यकर्म कृ
 त्वा ॥ अर्धवाचा ययजमानन ॥ ॐ अथादि
 सुयार्थ ॥ पूषराजनी ॥ वदुर्धदिमूला वा
 योदिपादपकाल्या ॥ वलिदयदत्वा यरू
 मधुपेयवि ॥ ० ॥ पूर्ववत्पुकावसा ॥ अथा
 ॥ अतदिद्वावकलः श्रवणं ॥ सिंहसभायवि
 स्मिता ॥ मुनूषां न्यासादि ॥ प्राप्तायाम् ॥

अथप्राग्वृत्तात्मानश्च॥ कलशमर्चनकर्म
 कर्मकृति॥ मूलधजादिप्रतिष्ठाकर्मकर्मकृति
 ॥ दवाचर्चन॥ गृथेवाकृति॥ गत४सीखाः
 कृति॥ दशमपाटि॥ दशवर्लि॥ शान्तिकेपो
 शिक॥ यवधन्यादि॥ पूर्ववदिधिनानालिक
 लीशकृया॥ वाक्कलापूजा॥ अन्नसीकल्प
 ॥ दृष्ट॥ त्रिकाहारी॥ सर्ववर्चप०॥
 वलिद्वय॥ दक्षिणद्वार॥ गतादिनपूः
 धु॥ आसीमाप०॥ वाचनजलनयज
 मानाशिक॥ वन्दना॥ चोददद॥ पुन
 न्यामादिमीखाकृति॥ यजमाननवपुर्व
 दिमूलाचार्यान्पूष्यदापथ॥ वाक्कला४
 स्वस्तिवाचनप०॥ य॥ वाचकर्मार्था
 न आगमाकविधिनावलिदद्या॥
 ॐ तिलकहामविधिना दशमदिनस्य विधिः॥

तत्रापि ३ रुनिपातस्नानादिनित्यकर्मकृ
 त्वा॥ अर्चद्वारा॥ ययजमानन॥ ॐ अथादि
 स्तुत्यार्थ॥ वपुर्वदिमूलाचार्यादय४ पा
 दपदाल्प॥ वलिद्वयदेत्वा यरुमधुपीय
 वि०॥ यजमाननपूष्यराजनदेत्वा॥
 वाक्कलापूजा॥ पूर्ववत्पूजाकालन
 सी॥ गपी॥ गनदिद्यावकलशमर्चन॥ मि
 हासनापनि॥ स्तुत्वा पुनर्वासादि॥ या

५
 चयामि॥ अथप्राग्वृत्तात्मानश्च॥
 कलशमर्चनकर्मकर्मकृति॥ मूलधजादि
 प्रतिष्ठाकर्मकर्मकृति॥ दवाचर्चन॥ आकृति॥

तत्रापि ४ कर्मसमय॥ लक्ष्म्यातलीवि
 धि॥ लक्ष्म्यव॥ लक्ष्म्यादत॥ लक्ष्म्यातली॥
 क०॥ यमाने॥ एतत्सर्वं न कथातवस्तुः
 लक्ष्म्यातलीकृत्य॥ धातल्यात्यकननवव
 त्नस्वधुनजतयमपथननदीनादि
 सर्वनिधाय॥ दक्षिणितय यक्षायवीत
 च०॥ ययमातादिहृषथ॥ लक्ष्म्यात
 लीमानीय॥ यरुमधुपस्यने सत्यद्वाराः
 यनिर्मकताग्निलाहवकासयु०॥ वा
 द०॥ यजमाननविचिन्नजलधनयाददि
 लयविक्रम०॥ आनीय लक्ष्म्यातलीमावा
 र्यसमर्थ०॥ आचार्यन मूलमधु०॥ गता
 हवालीजय॥ मूलमधु०॥ कृत्वा॥ ॥ गधने॥
 लक्ष्म्यातलीकृत्य॥ आरुमधु०॥ आकृति
 १०८॥ ॐ सकलशुभिलक्ष्म्यातलीकापूष्य॥

गत४सीखाकृति॥ दशमपाटि॥ दशवर्लि॥
 शान्तिकेपोशिक॥ यवधन्यादि॥ पूर्ववदि
 धिनानालिकलीशकृया॥ वाक्कलापूजा॥
 अन्नसीकल्प॥ दृष्ट॥ त्रिकाहारी॥ ॐ सर्वव

ॐ द्वादशकपालसर्वद्वयतानेवद्यादिद
र्शनी॥ ॐ अन्नपतयथायथावदनदवादी
नपूजय॥ वस्त्राद्यन्नसंकल्प॥ ॥ महा

गरीयुववामजबदजातमदीना॥ अमग
 द॥ गरीयुववामजबद॥ गरीयुववामजबद॥ २४॥ ॐ तिज
 चैवाचै॥ ॥ अक्षरुवगरीयुववामजबद
 जदुया॥ तत॥ प्रायश्चित्तहामी॥ ॐ दवा
 दिवमगन्यरु सुतामादविनमस्तु मनूदा
 ननविदमगन्यरु सुतामादविनमस्तु पि
 दन्युधिवािमगन्यरु सुतामादविनमस्तु
 यकचरुताकमगन्यरु सुतामरुदमस्तुः
 स्वाहा॥ ॐ दृष्टादिवि॥ ॐ दृष्टवतीउवेना
 नीमरुधियावीरुल्यीमधुदयमपयसा
 । द्यावापृथिवीवनूलास्यधर्मगविद्वरित
 अजप्ररुविनतसा॥ ॐ आवकन॥ ॐ ॐ
 दविष्मर्चिवा॥ ॥ अर्थन॥ ॐ ह॥ स्वाहा
 ॥ ॐ यमनकृष्ण॥ ॐ यमन॥ ॐ उव॥ स्वा
 हा॥ ॐ स्व॥ स्वाहा॥ ॐ ह॥ उव॥ स्वस्वाहा॥
 तत॥ यश्चरुवावली॥ ॐ त्वन्नाश्रुमववली
 स्यविद्वति॥ ॐ सत्वन्नाश्रुमववली
 ॐ अयाश्च॥ ॐ अर्थन॥ ॥ ॐ यशरीव
 व॥ ॐ ॐ दूरुमीववली॥ ॐ पादिनाश्रुमथन
 ॐ तिज॥ ॐ दृष्टवती॥ ॐ पादिनाश्रुमथन
 ॐ स्वाहा॥ ॐ पादिनाश्रुमथन॥ स्वाहा॥ ॐ स
 र्वपादिनाश्रुमथन॥ स्वाहा॥ ॐ स
 र्वपादिनाश्रुमथन॥ स्वाहा॥ ॐ नूतन्य॥ स्वा
 हा॥ ॐ नूतनतिविकीशहामिस्वाहा॥ ॐ अ

तिनिकं रुद्रामिस्वाहा॥ॐ अनाहूतं यदा
हूतं तत्सर्वं क्रियते मम॥ सर्वं तदग्नौ
कल्पति विहितं तथैव हि न॥ स्वाहा ॥
गमय श्री॥ॐ वैश्वानराय वि अनेकाभि
नाय धामहि तन्नावद्भिः॥ प्रयादयात् ॥
ॐ देवस्येन मावय जनमसि स्वाहा॥ॐ म
नूष्य शकृतस्येन मावय जनमसि स्वाहा ॥
ॐ पितृकृतस्येन मावय जनमसि स्वाहा
ॐ आत्मकृतस्येन मावय जनमसि स्वाहा॥
जनमा जनमावय जनमसि स्वाहा॥ यच्चा
हमना विद्वांश्च कानयच्चा विद्वांसु स्य सर्व
स्येन मावय जनमसि स्वाहा॥ॐ रुद्रवय
वयुधिषो वमह तस्वाहा॥ॐ रुद्रवावायव
वानुविद्रायमह तस्वाहा॥ॐ स्व॥ सुययि
दिवमह तस्वाहा॥ॐ रुद्रुव॥ स्ववन्दुम
सनक्षयस्य दिशुः प्रजापतयमह त
स्येव स्वाहा॥ ॥ॐ नूयवर्षुक्ष्म आग्नि
वग्निदेवतपाः॥ यस्वाहा॥ॐ रुद्रुव॥ गय
वर्षुजिह्वाग्निवपाः॥ यस्वाहा॥ॐ विष्कृति
अश्ववर्षुपरायाग्नि सामदेवतवानायः
स्वाहा॥ॐ यद्वकि अश्ववर्षुष्टुतकाग्नि
वीयुदवतउदानायस्वाहा॥ॐ गमदीव
वर्षुप्रवाग्निर्वृणदेवतसमानायस्वाहा॥
ॐ अय्याति अय्यकनिर्वं जनपर्ववक्त्रं अ

प्राञ्जला विनाजति ॥ ययः पृथिव्या ॥ दवस्य
 त्वासविदुः ॥ अग्निना जेष्ठाननगजसवकः
 वच्चसाया रिषिधमि सवस्यथनरुचज
 नवी योयानायाया रिषिधमि वन्द्यः
 न्दुथनववाययिथयगसः रिषिधमि ॥
 इपदादिवमूक्षन ॥ उदयनमसः ॥ श्रीशतल
 की ॥ ॥ नभावकः ॥ नमस्तु नथनमः पृथि
 येनमः अषधीत्यनभावो यनवायस्यतय
 नमा विष्णु वमहतकनामि ॥ अग्निविदुः
 सा मस्यथवानीवदुतिव्ययः ॥ कविश्वर्कच
 सा मि कविश्वामि वगवत ॥ यदवासादिशः
 काशस्तु पृथिव्या मध्यकादगस्तु अस्तु दिता
 महिनकादगस्तु गदवासायस्तु मिमंरुषधं ॥
 यनस्तु दित्यावूडावसवः समिधतापूनर्द्धका
 ॥ वसन्तीथयः ॥ एतनत्वेनत्वेवद्वयस्वस
 त्याः ॥ मनुयजमानस्य कामाः ॥ आ वृक्षन्वाः
 क्र ॥ प्रथमाद्वितीयेद्वितीयास्तृतीयेस्तृति
 यमस्यनस्यनस्ययस्तुनयस्तुनयस्तुनयस्तु
 ० वि सामरिः ॥ सामान्द्रिः सविद्यप्रवानवाका
 रिः प्रवानवाकायाकारियाकावर्षदावे
 र्षदावा आकृतिरिवाकृतथाभकामीसम
 र्धयमुहः स्वाहा ॥ ॐ सर्वदिवका ० हविषाः
 एतनसमादित्येवस्तु रिः समस्तु रिः समिध
 विश्वदवहिवकादिवीतशागक्तुयस्तुहा ॥

अदवातनकृपापविस्मनकृपाउपयम
 नकृपायायस्तुतानसर्वानशया ॥ ॥
 तगाहिमस्यत्वा ॥ ॐ हिमस्यत्वाजलायना
 लपविश्यामसिउतकदादिनाहुवाग्निदा
 धावुरुषजं ॥ सीतकदाहुवाग्निर्दधावुरुषजं
 अन्ति कादग्निवजानयद्वादिदलिगिवागम
 ॥ अजातपदयुगीश्वरदयममधुयत ॥ वि
 पूर्ववनीवदकाशीवनजातवदकामय ॥ मा
 श्वरदयुगीश्वरसर्वलमूलीतव ॥ यिमादका
 हितयावदकस्तुवर्धुनमाश्नुत ॥ अविश्वरुहिन
 आसानत्मागवस्थामयुयथा ॥ ॐ दुर्ध्वगदध
 उवर्धुलमरिषिर्विषु ॥ गवधानिधनेयानुधुः
 ऊयत्वेवकृतजसा ॥ कपिलजरीसर्वरुक्षा
 यार्मियत्यद्वदेवरी ॥ वनर्धुववसाकर्मिमम
 युगांश्वरदासि ॥ यवदादित्यस्तुपति यावः
 दुजश्वरदमाः ॥ यावदातस्तुवाजतितावका
 वत्वयासहायनकनयकावत्तमाहमानान
 जीवति ॥ यवशामयकावा ॥ यः जीवतिमः
 जीवति ॥ एकसरुहाहस्तनद ॥ नत्वेविपुल
 नापृथिवीत्वेदिउश्वरनकक्तुर्गदधुः
 न ॥ ॐ हिमस्यत्वा ॥ ॥ आयमनवन्दन ॥
 गन्धर्वकवसुताम्बुलनेवद्यसर्वधुददि
 ॥ वेधनवायदद ॥ ॥ तगः पूषदा
 नी ॥ हारवर्गृहीत्वा ॥ ॥ आसीसाय ॥ ॥

३ मन्त्रार्थः सन्तु कलशस्तु छिल्ले श्वान
 नादि। यवताः सूपीतावनदारुवन्तु। गुन
 (ग) वाक्कृत्यः शुभं रुवन्तु। जाधमो विजयी
 रुवन्तु। यजोः सखिनः सन्तु। दशगुणद
 थाः सन्तु। अस्मद्यजमानस्य सगलपविवावा
 लामायनावाथमेश्वर्यजनधनलक्ष्मी सन्तु
 तिसन्तानवृद्धिस्तु ॥ द्विपदश्चतुष्पदश्च ४
 शुभं रुवन्तु। सर्वसत्त्वाः सखिनः सन्तु। य
 र्थाश्च ४ कालवर्षी रुवन्तु। अमकनाहू ४ खः
 असिद्धिस्तु। सर्वविधियविपूर्वमस्तु ॥ ॥
 जाय ॥ मधुलीयातचू (धुनप) अथपुष्पावकी
 र्णुके ॥ जानूमधुलके रुमोगतः ४ स्मार्त्युका
 नथग ॥ ३ अ (युदायस्य पादाय शनपनमदः
 सामवदाथरुस ॥ काथर्वादिगी र्येतायथ
 वदने द्यादते वक्रथायी। गायत्रीयस्य गार्ज
 नयनमयनिषक्कुगम (श्वेवर्दक्ष) विष्णुय
 क्कन मूर्ति सव श्रुतिवदन यरुन्पीवनाह ॥
 १॥ नकाशु क्कानि रुष्मा पिपथपदगता म्नीलि
 दद्यापि मागो ली मुत्वाथयल वाविवृधपद
 गता म्नीलिवन्ता ४ पुसिद्धा ॥ तान् अवालेरु
 दारुवतिरुवतनाशीलिकालप्रवाध वदामा
 तासगर्जा जयजयपदानित्यनूपागिवा ॥
 २॥ अथयरुषसीस्तु दिशि विदिशि निवासीस्तु

तादवताया। क (धुवावक्रिमधु) सकलय
 विगतामधुलस्तु छिल्ले। तसर्वसन्तुदवा
 अरिमतवनदामन्तु सन्नाषन्तु। म्नाम
 नाविहीनाय जनपनिविधि की। दाघाद
 मस्तु ॥ ३ ॥ यद (अथवनत्वं) सतिधियुति
 कापादका रुवनत्वं पातालदिशसिद्धिः
 शिबुवनसहितादिशयिनामलिश्व। सिद्धि
 दिश्व। प्रधानीयनयनविनी गान् ३ मन्त्रवा
 दं यैतयस्य प्रसादात्सरुवन्तु रुवता मन्त्रि
 दवः ४ पुसन्नः ॥ ४ ॥ हुं द्यायाला कपालाः
 स्त्रगदिशिवसिताः ४ स्वस्वमदाः ४ स्वयुक्ताः
 आदित्यादिग्रहः ४ वसतिशुविमदा जन्मद
 वाः ४ स्वयुक्ताः ४ अक्षायागः ४ स्वतिष्ठागल
 गुन्वदकस्तु छिल्ले माह काच सिद्धि (अ
 थाददाशुरुवन्तु वसमगी यरुन्पुष्पसूरा
 मु ॥ ५ ॥ यावद्दीवीतनः शिवहतिमवनदी
 जाकवीयुष्मा या यावदागमा (गर्गगल
 गलयन) गर्गपतिर्वाग (दाश) ४ यवद्वक्ता
 पिता कीरुनिविमलजली वदसिद्धान्तवा
 लाः तावत्तु पूजयोगा सजनपनिवृतावर्द्ध
 तनाजलक्षी ॥ ६ ॥ अदवायकनागयदग
 लसकलाहूतनदः ४ पिशवा यवर्षाथ
 वमासास्मिधिगलसकलाथवनद्वयथा

गम॥ थलनाक धु वलाः क वटतययः
 वधुसुग्राववडा॥ मू पीतीसनुनित्यतिनू
 जसखपदसनुभनाजलक्ष्मी॥ १॥ वक्रावि
 श्रुष्टगकक्षलनयमवलद्वद॥ पाणीसमीन
 ॥ ग्रायकभानदूर्गयदगलवसुरि॥ म
 यता॥ सर्वनाग॥ ॥ हलवा॥ मिद्विवाः
 इवितरयदवाश्रुदसूयादिदवा आगि
 न्यायस्यमाना॥ मूववनमिता॥ पनुव॥ स
 र्वदवा॥ ॥ ॥ कालीरुद्रमूलीकामपदक
 िनेकन्दविस्मीधुसाखा अथयसामप
 यीयज्ञवखिलरुलेगन्धध्वं वदने आग
 श्रुयासुग्रातीमलकवपदेनीयतयस्य
 नित्यीयातसेकल्पशुद्धिगुविगलमनिरि
 ॥ यादुवावदवृद्ध॥ ॥ य॥ सुसुगर्क
 मानागुगुन गुलावालवदारुद्वेष्टो
 लीहावामासबाधेसमटसुटसटासटमा
 नसुटासैती॥ दन्तानीखाशमनीयकटक
 टकटासैकटायापदृष्टि निष्क्रान्ताहास्य
 मानासकरुकरुकरुपायुयुष्मानुसिद्धि॥
 ॥ १०॥ कृतार्थनामसिद्धिपुकरिगवमूखेन
 कनयाधवाष्टीतजारी॥ पुक्षलनकद्रव
 रुसदृष्टीदूर्निनीकस्वभन्दा॥ निरुिनाय
 कुगमयमथजगमदिर्गदानवन्दाहिवन्ध

सायं॥ उस्वयंवेयविदुवनमहासिन्धुपद
 विष्णु॥ ११॥ पी० यस्याधविगीजलधनकल
 ॥ लिंगमाकाशरूपे नक्षत्रपयमाताग्रह
 गलकसमीनवचदाकवद्वि॥ कन्दोसफ
 समडादुजगिविलिखवा॥ सफपालयादो
 वदश्रुवाविवावेदशदिशवदनपायुवादिश
 लिङ्ग॥ १२॥ कालवधनुदवा॥ कितियपि
 सदाशस्यसंपूर्णरुता वदह्ना॥ सनुविषा॥
 सकवचयतिजाधसुवेविषजाध सत्वानी
 पालनचपरुवउसुदनाकावाश्रुमार्थय
 का नित्यासाहयमादनित्यसुसुगर्गसः
 पुजायुष्मन्तु॥ १३॥ गमयलिंग॥ य
 दासी॥ श्रुतवर्धुवधरुतनगर्गदक्षि॥ एनी
 लवर्धुवामवर्कविनयकनकसमकन
 यश्रुमहर्द्धुर्द्धुनेमूलीपाशमधुवर्धु
 वज्रवर्गकिशदीजिजायीस्वर्द्धेष्टीः
 निखाग्रनिवपवमकनश्रीमिखदाभरुसै
 ॥ १४॥ कोदिपूर्वत्वमवत्वमसिचपवमीपः
 विमूर्द्धनमूर्तिद्रुवावेधायमानं गलतल
 वितलोदक्षि॥ एनीवमूर्तिद्रुवावेधायमानं गलतल
 खीसकवर्धुवदयंकोनरावश्चडर्द्धेष्ट
 र्द्धेष्टवार्द्धनार्थखवतवितर्धमलवाजैनमा
 मि॥

[illegible]

खिलाया वसत्याया पृथिवीतथा। यदि
दाघासि यद्गुण्यमूयायस्यवि। षतश
मनुमूदाविहीनः ॥ मनुष्य ० नदाघतशामा
गद्वयादिहीनत्वा ॥ वर्णापिववि। षतश
पुत्रिणा ॥ दिरुंगत यज्यप ० नकर्मसु। व
द ॥ मनुष्यपुत्रनक्रियाहीननदहिनी। द
नुमर्हसितत्सर्वं कर्षन्नुगिवमङ्गली ॥ ॥
जिह्वादाघात्यवनवनाकुष्मा ॥ विन्दपा
गान् लखापुर्द्धलितनयतिर्गेलफयद्यद
वन्तु ॥ मागहीनं यदि क्यठिर्गयश्चमानवि
नष्टः भगत्सर्वतदपि वमयास्मागुभगत्स
मर्ध ॥ ॥ अरुहानाङ्गनगावापि यत्तयासा
हिर्गद्वर्ग। दनुमर्हं सिद्धवज्जन्ममायुर्मर्ह
तां प्रका ॥ गुरुमनुसर्वजगतीं पनहितक
नू ॥ हतग ॥ ॥ दाघा ॥ ययानुसानि स
र्वयसूखीरुवडुलाका ॥ त्वगति ॥ सर्वह
तानीं संहितत्वेयवायव। अन्तश्चब्रह्म
तानीं दृष्टत्वेयवभम्भ ॥ ॥ कर्म ॥ मनसा
वायात्वलानायागतिर्मम ॥ मनुहीनक्रिया
हीनं रुकिहीनं वयत्कृती। अपदा। मायनाः
हीनं दृष्टीनित्यमयातव। अरुर्तवायहीनः
स्य तत्पुत्रयद्वतासन ॥ ॥ ॥ रुगवने य
थत्वे मया कर्मनिवर्तनी। नूनाधिकमिदं क
र्म दाम्यतीपुर्धुतीकृत् ॥ यजमानस्यादिना

नायकाया सादायनिसुवर्णकलशध्वजात्
 भादनलद्वादितियरूरीपुष्पनिमित्तधर्म
 उगन्धपुष्पधूपदीपमूर्धनविधेः सर्वेषां
 विधिपरिपूर्वमस्तु॥ कनकश्लिनाहमभ
 शुल्लग्निसानमस्त्वानि॥ मधुलसूपुष्पशि
 वमिरूपर्षा॥ (गयाधार्वा विमर्जनी॥ श्रावम
 नी॥ ॥ ॥ ॥

आदधुमध्वं दवी सवसुती आदधु
 भध्वमधिनादवावाधनीयस्व नम्रजावि
 त्यंगनिचमआयायती वाकुलश्वद्व०
 र्ययःभवती॥ॐ ग्रायर्षजमदः० कश्च
 पस्य ग्रायर्षी यद्वधूया यर्षतना असु
 ग्रायर्ष॥ अगस्त्य रुस्मानलला ४ ग्रावाया
 दक्षिणवाक्यमूल दक्षितिलकैकानथ० ॥
 कलःभदिविमर्जनी॥ॐ उदयतमम
 यमकलःयमानि कवाःभःभवा समः
 त्यलीकावथ० ॥ नागयदादिसुस्वस्व
 ननथ० ॥ यरुसिंहसभाकवःस्वसिक
 यजमाननिर्मर्जनी॥ॐ उदकाहनी॥ वलि॥
 ॐ अधुवावदधि॥ॐ दवस्यत्वनि॥ अर्ध
 पायादकनाच्यन्तली॥ अग्निः लाहवदा॥
 तगावस्येदायथ० ॥ॐ वसापविगमसि॥
 तगाःरिषकै॥ॐ अरिषकसमूहकर्म
 सु॥ अ० योऽप्यायदर्यानीनिधाय॥ गिवःकि
 कलःशनःअरिषकै॥ॐ दवस्यत्वासवि ॥
 ॐ यालाः रुरुवन्तु॥ॐ अग्निनोऽर्षज ॥
 ॐ आयादिसामथा॥ॐ योऽभक्ति॥ॐ यरि
 षकै॥ वन्दतेदद० ॥ॐ यददकध॥ सिद्धव॥
 ॐ त्वः अविषदा॥ कममधुलसुभाहनीदद
 ० ॥ॐ समिद्धाः अतः कदवमतीनी दृगमल
 मधुमत्यन्तमान० ॥ वाजीवर्हन्वाजिनेवाजिनेः
 जातवदादवातीवन्दि प्रियमासधस्व॥ यः

सुर्गवाहलतामूलपेष्ठीदद॥ ॐ या४ रु
 लिनी ॥ सगुहा ॥ ॐ दधिकाया ॥ अदात ॥
 ॐ दीर्घायस्त्रायवया ॥ आशावर्दिदद० ॥
 ॐ धुवासिध ॥ सिंधुर्महा ॥ ॐ श्रीधनलक्ष्मी
 ॐ दीर्घायस्त्रा ॥ ॐ ॐ द० हवि४ ॥ सर्वेषां ॥
 दय्यं भवलाकनी ॥ ॐ पूषुचन्द्रनिरुंयस्य
 दय्यं लंगुदय्यहा ॥ आत्मविभु कवेयस्य
 पदायजयव ॥ ॥ मधुलनमस्कारे ॥ म
 धुलविमर्जनी ॥ ॐ यातुदवग६४४ सर्वेषुजा
 मादोयजोहिका ॥ ॥ ॥ ॥ कामपदातायपूज
 नागमनायव ॥ ॐ ॐ दीविष्णु ॥ मधुलनदा
 रिषकी ॥ वज्रपदाने ॥ ॥ मधुलशुद्धन
 वक कर्षादिनानानावर्षु कर्षाटनयावह
 षण ॥ अग्निवद्वादिनाय ॥ ॥ ॐ नआसीति
 आबर्हि ॥ ॐ या४ रुलिनी ॥ रुलपूषारिष
 की ॥ ॐ मनाईति ॥ लाजामृष्टिकेयायतिष्ठा
 ॥ गत४ सर्वकलशममर्यथ ॥ सुधुलिकल
 शदवर्म ॥ अग्नि कलश अग्निर्म ॥ वज्रवर्दि
 कलश वादियात ॥ उर्ध्वकलश हातायात ॥
 अर्धकलश क्रियातायायात ॥ गलकलश
 यितायर्म ॥ गुणकलश दय्यविर्म ॥ यागिनि
 कलश कममधुलयात ॥ क्रयकलश कुमा
 वार्ययात ॥ वज्रकलश नागयात ॥ ॐ ॐ
 नशिवर्म ॥ ॥ शिवशक्ति कलश यजमा
 नसमर्पण ॥ ॐ श्रीवत्समाया ॥ ॥ ॐ उरि

छन्ना जसा सह पातीं मिय अम धय ॥ सा
 ममिन्दु नमः सती ॥ सर्ववियर्जन ॥ वलि रुं जा
 वन स्व स्व स्मृ ननय ॥ ॥ अग्नि नमः स्कार
 ॥ उं नमः अग्नि वलामह गं उं यहाय गं उं
 ॥ यहाय यदविस्वस्मि नमुन ॥ स्वस्मि मथ
 त्य ॥ दुर्द्ध जिग उरु यर्ज सना सुद्विय
 दर्शनं दुष्यद ॥ ॥ यहा विमर्जन ॥ उं य
 हा यर्ज गच्छ यहा यर्ज गच्छ स्वीथानि गच्छ
 स्वाहा ॥ यषत यहा यहा यहा सह सुकवा
 क ॥ सर्ववीर्य यष स्व ॥ स्वाहा ॥ यहा वि
 मर्जन ॥ न्यासी कृत्वा ॥ हृदात्मलीनी ॥ येन ॥
 मम हामी ॥ उं हं हं व ॥ स्व ॥ स्वाहा ॥ वेष्म वा
 मय स्वाहा ॥ मस्त्रिययी ॥ गच्छ गच्छ सन ॥
 छ अत्मा सीमा वदाहन ॥ यय वक्तालयी
 दव ताग गच्छ कृता सन ॥ उं क ॥ अस्त्राय
 रुढ ॥ आयमन ॥ उयस्य गनि ॥ अर्घ्या
 गग्नि कृतायाम्ना ॥ धाम्नी कृत्य ॥ सुय
 ग्निदि ॥ उं कृत कर्मणि ॥ सादि ॥ सुय
 य अर्धनिम ॥ यष्यनिम ॥ तत ॥ सर्व वा
 क्क लन रिवाय ॥ वाक्क वदायक ॥ का
 मारी दुजय ॥ वाक्क लन रुजय ॥ ॥
 ॐ त्यादिता वा यल मभवैष्म वाग्नि यहा
 सा ॥ यप विमर्ज कल ल धाव वाहन
 ल दी कृति यहा विधन समाप ॥ ॥
 नित्या चर्न नित्य दीयान्नीदद ॥ वदुर्थाप

र्यनयाव॥ ॥
 ततः पूज्यं न च उच्यते विधिः
 वद॥ ॥ कर्मलागलकलसहितयिनाः
 ययुजा॥ कर्मलागलकलसहितदयुनि
 पूजा॥ ॥ कलुषाचारवरागवयुयहम
 वथ॥ पूर्वोक्तवर्गेषु शेषोक्तार्थं धन
 सम्यदाददि॥ न पश्चिमयेव मृत्युदाविदः
 तारुली॥ विमर्जनीविवायमदिद्वाभामः
 एपायय॥ गलसंगुवर्गद्वयदवाल
 क्षीप्राचारव॥ अर्चनादिविधिं कृत्वा नि
 मालीप्रभुपूजय॥ नदीसमर्पणं कृत्वा
 पश्चिमीमाविमर्जनीवयुथयनकृत्वा नि
 तस्ययहस्यनिरुत॥ वाक्मलदिचउर्व
 नजघनीनीमननववी॥ ॥ मधुपवाक
 पादपुत्राल्या॥ मधुप्रीयविश्व॥ यजमान
 नउं अद्यादियमराजन॥ गिरगकि क
 लसन्तानकलसगलपतिः कृष्णालद
 र्मममालकोसयुलवदिद्वाभामः
 दिपूजनी॥ ॥ ततः श्रितिकार्य॥ पूजनक
 मलसर्वेष्टाद्यताकृति॥ तथेवतिलोदृति॥
 अग्निनामगिरी॥ ॥
 ततः यथाकर्मसमथ॥ ॥ उदालकपा
 ल१० गलसुवथागिनीकृष्णवयुर्वदीधा
 उलसैरु॥ कीलककाष्ट॥ ययुद्वि ॥
 अग्निपू॥ नदादि॥ कर्ममधुल॥ स्व

स्वमन्त्रादृति॥ ॥ दवस्त्रानि॥ दध्म
 तादिस्त्रानकलसगलधनक॥ पूजन॥
 दवाचनकर्मलमृति॥ १०८॥ धजा ॥
 ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॐ मना इति॥ ॐ तिदव
 पूजनी॥ ॥ यजानावाश्चनमधुपेवृ॥ ग॥
 वाक्म॥ ॐ मया पूर्वेषु संस्तुम्या नन्दाद्यापः
 अदवता॥ सुधीर्गसुखदायानि मया अ
 यविसर्जय॥ पूजितयहनिमालीरुदि
 तयवकलया॥ च॥ पुष्पवायदवायपीय
 तारुगवानहवि॥ गान्निपूष्टि कर्तव्यं
 ययुयोजविवर्द्धनी॥ वाजाविजयमाप्नाति
 सर्वसिद्धिरुतयदीमयिस्तुत्यतिस्तुत्यनि
 मयितिष्ठति तिष्ठति॥ विस्तुत्यनविस्तुत्यन
 मयिगच्छति गच्छति॥ उदुनदीकायकृ
 अस्वायकृ॥ विमर्जनी॥ यासावम्या ॥
 मधुपादिसर्वविमर्जनी॥ ॥ पीतवृक्ष
 नवकखर्जिलिख॥ मधुलतामयावद्वय
 स्तुय॥ एकपावदगदिगताकायागसुव
 कागवशालकापालपल्लवमालाकीलः
 काष्टकदालरुकायनिधाय॥ एकपाव
 नेवद्यादिनिमाल्यनिधाय॥ ॥ पूर्वमुख
 नाय॥ पूजनी॥ वंदनमिद्वज्जहायवी
 तपुष्यनेवद्यादिना॥ पुनर्मन्त्रावासा
 र्थपावपूजा॥ ॐ आधवादि॥ ॐ यद्रामः
 नायनम॥ आवाहनादि॥ ध्यान॥ ॐ विस्

नमो नैवधारितसर्वविष्णुसम्यावैश्वर्य
 सखिभूमिस्तुतकैव नदवः कापालवामिद
 धा। उल्लोकोव नययनि प्रतिवर्तवाथाएक
 (पुष्टुत) कथयदसूपविषकीपनप्रशान्तनाः
 धिकैकामुता॥ मूलमनु॥ उं डीस० वीं वीं
 वृं वं वां व०॥ षष्ठं॥ उं डीस० वीं वीं वृं वीं
 व० (पुष्टु) वायनम०॥ ३॥ आदृति १० ८
 वद॥ उं दिवावाविष्णु॥ पुष्टु॥ ध्रुवनपु
 (१०॥ धूप दीप दीप जाप स्मरण॥ उं वं
 मुक्तिं कर्तुं निर्यं चमवामसदापिथी गजच
 मधवा दवा च पुनाथनमोऽस्तु॥ अरु
 गंधादिविसर्जने॥ कमलावतुलकल
 स्वयानागवियाव पल्लवमालादिस्वासा
 यकनकाय॥ ॥ नैवशादिनिर्माल्यधन
 सवाय॥ ॥ ततः संख्याकृति॥ दशम्याः
 रि॥ लानि कपोहिका॥ यवधन्यादि॥ ॥
 दीपशुक्ति काहामी॥ दक्षिण दाने॥ पुष्टु॥
 आसीमा स्माय॥ यजमाना शिषकादि॥ य
 रुविसर्जने॥ यश्चकोमाविका र्जने॥ उं ड
 कल गङ्गाया॥ धजा काकाया॥ उं नायक
 काया॥ ॥ उं तिलकहामस्यवपुथीहामविधि॥

षट्मासाः ॥ तीर्थाग्नि कुं विमर्जने॥ चणुपू
 जाविधिवद०॥ देवस्याह्नापार्थय०॥ ॥
 सूर्याय पादार्घ्यं पूजयित्वा जनं यासादि

दगवलि॥ पुनत्या सादि॥ अर्घ्याय पूजा
 सपूजा॥ साग्न्याय गनकलशार्जने॥
 कपु वदक गलायति वलिपूजने॥ नाग
 पूजने॥ ॥ ततः शिवाय कोवथ०॥
 धवन्नानादिपूजने॥ आदृति॥ कृष्णानि
 कंगत्वा॥ नावायस्य मूलषडं न्यास॥ पत
 त्यासनमग्नि कुं न्यसं॥ पश्चामनादि
 स्नानं॥ अग्निकुं न्यस्य दक्षिण स्नानवलि
 पूजने॥ उकि वदन सिद्धं पश्य॥ आदृ
 ति॥ अग्न्यादि॥ ॥
 आवाथान यजमानन रुक्षनाग्नि कुं न्य
 (१०॥ उं मयापूवति॥ उं हनदीप्ताय रुद्र
 अस्त्राय रुद्र॥ सीहावमूदया विसर्जने॥ नामे
 याय अष्टपदाऽर्चयदुलिख०॥ म० (ध्वजः
 इं लिख०॥ पृथिवीय दीलिखा०॥ सिकन
 ॥ तामयाय निर्माल्यपूजने॥ चणुमंत्रं स
 वपुगर्भं॥ वसुधायै कृणुत कुरु मला
 यथा॥ योतवु॥ पुनवष्टमपुली॥ अन्नयान
 तामूल गन्धवन्दनरुलभतन पूजने॥ या
 स॥ उं डीस० वीं वीं वृं वीं वृं वीं
 ० वीं निवसंवाहा॥ उं डीस० वृं निखाय
 वीषट॥ उं डीस० वीं वीं वृं वीं वृं वीं
 डीस० व० अस्त्राय रुद्र॥ कवचन्यास॥
 उं डीस० व० अस्त्राय रुद्र॥ उं डीस० व
 पुष्टुमर्थनम०॥ उं डीस० वीं वीं वृं वीं वृं वीं

ॐ ह्रीं स० वां वीं वूं वं थं थं वं वां धनि वं श्रीं
नायनम० ॥ आ वीरुनादि वूं ॥ ध्यान ॥ ॐ वि
श्वं नमः स० रुववा रुवितसे ॥ विष्णुस्तथा
वे श्रीं वं ह० स० स्व० स० रुववै ववदव० काया
लवामेदध्यागुल्लो वीववदधर्मे पतिवर्
वायास्तक (ॐ) नै ह० थ० दे० स० पवि० व० क० प०
य० रु० न० ना० धि० के० द० म० गी ॥ ॐ ह्रीं स० वां वीं वूं
थं थं वं वं वां निमाल्य व (ॐ) व० वायनम० ॥
वलि ॥ वधु वूं व० उ० रु० धूप दीप जाप स्था
प ॥ पूजितं य० ह० ति ॥ व० धु० मूलमनु० णा० आ० द
ति १०८ ॥ पूनन्नावाय० णा० स्यामनु० णा० पू० धु० ॥
आवाय० य० ज० माना० यी० निमाल्य व० धु० पृ० णा० ती
वा० द ॥ ल० रु० वा० ध्या० न० पा० ना० नि० ता० मू० ली० ग० न्ध
ल० पि० तं ॥ निमाल्य० रु० ज० नी० उ० री० प० द० रु० ह० व० या
रू० या ॥ पू० जि० तं० उ० रु० निमाल्य० ति ॥ न० नि० क० प०
हि० क० व० मि० ति ॥ अ० ग० ग० न्ध० दि ॥ ॥
य० व० ध० न्या० दि ॥ व० लि० वि० स० र्ज० नं ॥ द० दि० णा० दा
नं ॥ ना० वा० य० णा० स्या० मूल० म० नु० णा० पू० धु० ॥ अ० मि० ति
स० र्ज० नं ॥ वि० श्व० सु० म० नु० णा० निमाल्य० वि० स० र्ज० नं
॥ वा० द ॥ ॐ ल० रु० वा० ध्या० न० पा० ना० दि० ता० मू० ली० ग० न्ध
ल० पि० तं ॥ निमाल्य० रु० ज० नी० उ० री० प० द० रु० ह० व० या
रू० या ॥ सर्व० भ० ता० त्वा० या० का० ॐ म० या० य
उ० रु० वा० रु० या० न० ना० धि० के० ह० री० भा० दा० प० वि० पू०
धु० स० दा० नु० भ० ॥ पू० र्वा० मि० क० ॐ अ० य० पू० र्व० व० लि

विसर्जने॥ यथायदद॥ ॥ द्वायसंग
 भननदीगच्छ॥ निर्माल्यपूजनरूपोऽग्नौ
 मथनलयित॥ निर्माल्यनदीतटस्थाय
 न्यासादिवलिपूजा॥ यथुमूलप्रउत्थना
 यथुमूलमन्त्रेणपूजने॥ विसर्जनवाक्य॥
 लहवायान्तरि॥ सर्वभक्तियाकांक्षति॥
 निर्माल्यनद्याप्यवाहय॥ वाक्य॥ सौमित्र
 स्थिप्रदति॥ सर्वजनस्नानेकावय॥ ॥
 अथवाभूवाचार्यकर्माचार्ययजमानरु
 दवाहजन॥ स्नानेकावय॥ नद्याद्वय
 शर्गकावय॥ निर्माल्यपात्रतीर्थदक
 नपूर्व॥ मृत्युञ्जयमन्त्रेणपूजने॥ ॥
 ततः पूर्वयत्नमधुपमागत्य॥ यत्नविस
 र्जनमयासीत्यथकर्मसम्यगुपूजायादा
 व, चालवनमर्थद॥ लिहावयावेत्यवध
 न्यादियादावहामभाव॥ कलशलीखडा
 तीर्थदकडानश्रुषिकादियाहामर्थद
 यत्नविसर्जनयादावचालवहावतीर्थ
 लीखडा, कलशलीखडानश्रुषिक, चन्द
 न, सिद्ध, सगुण, आशीर्वाद॥ पञ्चाङ्को
 मावीपूजने॥ ततोवाङ्मलशुद्धन ॥ ॥
 ॐ तिलहामस्याग्निं कथुपवाहनविधिस
 मार्फ॥ ॥ ॥ ॥



[illegible]

क० न० य० न० २२ द० २ वि० न० य० २ दं० रू० द० ॥ ॐ ध्या० पु० प्र० य० दं० रू० द० ॥ त्रि० ४ स० र्घ० पा० द० त०
क० न० वी० न० पू० षे० द० ग० व० लि० च० यु० दि० द० धृ० प० दी० पा० दि० धि० म्भ० नै० द० त्वा० व० दि० ४ पु० स्फु० य० ॥ त० त० नि० वि० धि० प० वि० रु० श्र० ॥
द्वा० प्र० प० श्र० ध० अ० न० र्क० ॥ अ० न० ॥ त० व० ॥ मा० ष० ॥ मृ० ग० ध० भा० का० दि० कं० धृ० त्वा० ॥ स्व० की० या० आ० स० न० पू० ज्ञा० ॥ ॐ आ० ध० न० श० कि०
क० म० त्वा० स० न० य० न० म० ॥ ॐ क० र्मा० स० न० य० न० म० ॥ ॐ ति० स्व० की० या० स० न० पू० ज्ञ० ॥ द० व० स्य० द० ति० (ल० रा०) ग० दं०
म० कि० क० ध० न० या० प० नि० क० न० क० र्म० क० र्म० स्फु० प० य० ॥ क० र्म० य० द० क० र्द० भ० न० वी० ना० व० या० प० वि० लि० श्र० ॥ त० य० प० व० ध० न० य०
श्र० ग० य० प० श्र० प० ल० व० प० श्र० न० त० प० श्र० प० य० ध० ध० गी० रू० ल० प० श्र० ग० य० तु० ल० गी० द० ल० वि० ज्ञ०
कु० ना० य० ष० यु० दि० य० ॥ ध० ना० व० म० र्खी० द० त्वा० च० यु० दि० द० दी० य० च० यु० स्य० र्थ० द० त्वा० को० (ध०) यी० व० न० य० र्ग० भ० न० प० वि० ध० र्थ० ग० य०
मा० तु० ल० गी० रू० ली० त० ग० या० प० नि० धृ० त्वा० ॥ पु० ध० मी० त० त्या० द० ली० य० क० ल० गी० पू० ज्ञ० य० ॥ ॐ आ० ध० न० श० कि० क० म० त्वा० स० न० य० न० म० ॥
ॐ न० व० कि० म० तु० ला० य० द० श० क० ला० त्म० न० म० ॥ ॐ द्वा० द० श० क० ला० त्म० न० मा० म० म० तु० ला० य० न० म० ॥ ॐ सी० धा० उ० श० क० ला० त्म०
न० भा० म० म० तु० ला० य० न० म० ॥ ॐ गै० ग० ग० दा० व० ली० वे० वा० का० सि० दी० नि० र्म० दा० शि० वा० ॥ (ल० म० गी०) व० नु० रु० ग० भ० व० स० न० य० स० फ० स०
ग० त्रा० ॥ का० य० वी० श्र० वि० का० शि० प्रा० म० द० न० द्या० नु० य० स्मृ० ता० ॥ सा० ग० वा० स० फ० म० र्खा० श्र० ॥ अ० ली० सि० र्मी० नि० धि० क० न० ॥ त० त० ४ स० फ०

अमुञ्जय धेनमूढया ऽं शंस ॥ अमृती कृत्वा ऽं वी अमृत अमृती रुवञ्ज मृगमालिनस
 धदवमं तु लायमी ऽं शंस ॥ मृदक्षन विद्याया मृदक्षनमनु ऽं मृदक्षनमदीपदक्षय ॥ तताया
 द्यादिनाघातुः क्षयवायवः विस्त्रवृद्धाय वृद्ध ॥ मूलमं नु ऽं अथा मृहिं चानागाय ऽं गय विनाय ॥ आया
 नानं ०० ति प्राक्षा अथा देन व मृनव ॥ अयनीत स्याता पृच्छं तननागाय ऽं स्मृग ॥ धूपदीपने वद्यादिना वद्ध
 नीकवर्णीयित्वा मूलमनु १०८ ॥ अपि त्वा लक्ष्मी सवस्वती गन्जदीना मनु दक्ष भजत्वा ॥ स्मर्त्तय ०१ ॥ इत
 मा स्तुनताय सहस्रमूर्त्तयति ॥ नभा सु सवर्षमृक्षीना मादिका व ऽं मर्त्तमं ॥ आय ४ सवर्ष गयीय स्तु जीवन्नय
 नभा स्तुत ॥ तता जीवत्यायार्थं यतिमी ऽं धय ॥ तया पित्रा क्षव हृत्वा ॥ प्रथमी पित्रिको ऽं धय ॥
 तया धि अस्या पृथिव्यादिमनु स्याम नृपृक्षति सपिङ्गु भो दवता सतर्पेच्छन्दय च्चताया विनिथाग ॥ पुद्गारा
 यपुन अग्नि तार्या अमीय द्यामन स्तु द्विष्टु जां प्रकव कुोनी लात्य लक्ष वि ऽं क्षमर्षं शुकाय विधनी सवर्षाने
 कावमं छिती आक्षव शिला क्षत्वा तस्याम ह स्रद क्षात्रिका ऽं विराद्या ॥ ग्रामी कर्त्तव्या ॥ ॥ इमं शुकाय न
 नमः ॥ स्वाधि स्तुत ॥ ० ककु पाय नमः ॥ नारो ॥ ० आक्षव क्षी नमः ॥ ददथ ॥ ० धर्मो य ॥ दक्ष स्व

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ सं श्रुथर्विवदा ननमः॥ ॐ पनायवा आत्मननमः॥ ॐ पनायतजात्मननमः॥ ॐ नपना
यनागत्मननमः॥ ॐ वेपनायपृथिव्यात्मननमः॥ ॐ डोपनायमनआत्मननमः॥ ॐ डोपनाय
अग्नात्मननमः॥ ॐ मीपनायत्वर्गित्मननमः॥ ॐ अ४पनायवक्रात्मननमः॥ ॐ कीपना
नायजिह्वात्मननमः॥ ॐ रंवेपनायद्यात्मननमः॥ ॐ गपनायद्वात्मननमः॥ ॐ यंपनाय
उववात्मननमः॥ ॐ ढपनायउववात्मननमः॥ ॐ वंपनायस्त्रवात्मननमः॥ ॐ कूपनायमद
वात्मननमः॥ ॐ ऊपनायऊनवात्मननमः॥ ॐ मंपनायतपओत्मननमः॥ ॐ णंपनायस्यन्मा
त्मननमः॥ ॐ टंपनायडकुत्मननमः॥ ॐ ङंपनायग्रिधामात्मननमः॥ ॐ तंपनायायग्रिधामा
त्मननमः॥ ॐ टंपनायायात्मननमः॥ ॐ लंपनायधाउशकलात्मननमः॥ ॐ तंपनायवाङ्मया
त्मननमः॥ ॐ थंपनातिनगात्मननमः॥ ॐ दंपनायाक्षार्यात्मननमः॥ ॐ धंपनायवृद्धात्मनन
मः॥ ॐ नंपनायादेकात्मननमः॥ ॐ घंपनायामनआत्मननमः॥ ॐ रुंपनायषट्तत्मात्म
ननमः॥ ॐ वंपनायषट्तत्मात्मननमः॥ ॐ हंपनायब्रूतत्मात्मननमः॥ ॐ संपनाय

नमस्तस्मात्प्राप्तमननमः॥ॐ यं पवाय जीवात्मनमः॥ॐ नं पवाय वृद्धितन्माग्रात्मननमः॥
 ॐ लेपवाया देवात्मनमः॥ॐ नं पवाय मन्तन्माग्रात्मननमः॥ॐ नं पवाय गङ्गतन्माग्रात्म
 ननमः॥ॐ नं पवाय सूर्यतन्माग्रात्मननमः॥ॐ नं पवाय चन्द्रतन्माग्रात्मननमः॥ॐ नं पवाय यम
 न्माग्रात्मननमः॥ॐ लेपवाय गन्धतन्माग्रात्मननमः॥ॐ नं पवाय सुर्वजीवात्मननमः॥ॐ नं प
 वाय सर्वजीवोत्तन्माग्रात्मननमः॥ नमस्तस्मात्प्राप्तमननमः॥ॐ नं पवाय आग्निः॥ॐ नं पवाय
 ज्यमात्मननमः॥ॐ नं पवाय नैऋत्यः॥ॐ नं पवाय वायव्यः॥ॐ नं पवाय दक्षिणः॥ॐ नं पवाय
 मः॥ॐ नं पवाय उत्तरः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥
 ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥
 ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥
 ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥ॐ नं पवाय अक्षयः॥

[illegible]

अथविनिर्वाण॥ॐ आं द्रां कों ग्रां यं यं रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 लेषकां यं यं धूमवर्षं विन्दतां श्रुतिं वायव्यं स्वरावर्तं दद्यात्तुमध्वर्यं वायस्कनं वायम
 र्णं एवमदिने आकाशमदनामि॥ आकाश॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 युक्तं पनमात्मादवता आकाशमदशुद्धा र्थविनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 खात्मनः गिवायनम॥ तत्राकाशमध्वर्यं नालवर्षं स्वयस्वरावर्तं दद्यात्तुमध्वर्यं वायस्कनं वायम
 र्णं आकाशमदशुद्धा र्थविनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 वरासं द्रुद्धां मनावाक्कायकर्मद॥ धर्मवर्षं र्थविनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 शवायमावर्कं आत्मानं असृगवी अनयन॥ शवायमावर्कं र्थविनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 आवर्कं यिष्या॥ अर्द्धवक्तादमस्मि॥ ॥ वनपुत्री अमनुस्य दिनध्वर्यं सवि अन्तर्हृदयवन्
 एवदवतां शुद्धकर्म विनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ ॥ अथ पथं रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ ॥
 आकाशस्य॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल

डत्पथ र्थं अथ विनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ आकाशम
 ध्वर्यं वदुने यदीनालवर्षं दद्यात्तुमध्वर्यं वायस्कनं वायमल र्णं एवमदिने आकाशमदनामि॥ आकाश॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 र्णं एवमदिने आकाशमदनामि॥ आकाश॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 डत्पथ र्थं विनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 र्णं एवमदिने आकाशमदनामि॥ आकाश॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 थडत्पथ र्थं अथ विनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 कवर्षं स्वस्ति कलीं चितीं दुष्मन्वरावर्तं दद्यात्तुमध्वर्यं वायस्कनं वायमल र्णं एवमदिने आकाशमदनामि॥ आकाश॥ अस्य आकाशमध्वर्यस्य सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 जारो॥ ॥ अस्य असृगवी अमनुस्य दिनध्वर्यं सवि अन्तर्हृदयवन्
 थविनिर्वाण॥ॐ द्रां कों रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल
 यद्वलां श्रुतिं स्वस्तिं रूट्वा यत्वात्मनः सदा गिवायनम॥ तत्र वायमल

[illegible][illegible]

दिक्पिङ्गदयताविदिक्प्रसप्तानुच्चासार्द्धमित्यालित्थ॥सूर्येक्षप्रवतुर्षेवदमितिरि०
 स्याद्ददकाक्षंमती॥१८॥आसच्चिउषन् दानपा॥८॥कृत्वाकथयदिमान्॥आसार्द्धंमानक्षं
 र्थं सार्द्धस्मिन्कर्ष॥१९॥याच्यन्क्षंक्षोस्त्रयासो कृत्वावाकर्षकर्ष॥८॥क्षंक्षोवाक्॥८॥
 लिभवमदग्नायत्यर्वासकी॥२०॥दशत्रविकनयासावत्योमध्यमोत्रविमन् कानयामो॥८॥क्षो
 ध्रियासोकोविततित्रययाकायामोमितवदिमगुपनखकवमपिपाद्० कयि० गुलापूनपा
 र्थ॥८॥२१॥दिक्कनायतिर्कीदिगकनारुवतिदालयतुष्टयैकम॥यतुष्टयसितीगुलेधर्नकथिती
 मध्यमयूक्षथावपि॥२२॥त्रिधामध्वसूर्यविरुक्षसुमध्वि०रागनवदीष्टकारिर्द्वि०धया॥समा
 यदकादिस्त्रदकुयदसन्निवदषसफयदक्षंक्षो॥२३॥सानद्रज्ञासुदनमगुपवदि०कोक्ष
 स्त्रमाध्यपीचकवत०सुदृक्कुतुल्या०॥द्यानालिरितडरात्रयैनिखेयो०स्मी०राध्ययश्मल
 नेष्टुविषाउ०गति॥२४॥वदिका०क्षप्रथर्म्स०रा०धृत्वाभामध्यमास्त्रिता०॥८॥मगुपविस्त्रावद
 याद्याभमता०गु०रा॥२५॥सम्यमाधमथाष्टदस्त्रासैवान्नाकि०त०॥वलि०का०ष्वविनयस्यमध्य

रागद्विर्गिष्टज॥२७॥वदिस्म सुचतुष्टयचूणसंसवधुदात्रुलि॥तिथ्येकसमानिदध्मा०कु
 य०पवितामेधुपाथकट०॥२८॥अगृह्णदन्वनडाटिवट०॥२९॥यवषत्सफहस्माकुया०रुफाय
 गत्तयगर्लद्वार्षत्वातिथ्या०तिथ्येयस्मद्वितयरुत्तर्कहस्मपादार्द्धद्वेद्वा०यमञ्जुगस्त्रयिनिज
 विलेगल्पमध्मरुभष॥३०॥वदार्द्धले०साद्वर्धैयग्नेयवालेस्मन्मुद्रिकीलाविनिगनीया०
 भवेन्नवर्ककुनिवज्जदाक्ववत्सस्मसूलनिरासुलेवा॥३१॥देश्येनवाहुलमिर्तेश्वरुनीयरा
 गविस्माविष्टलसृजामध्ममष्टममूर्कवक्रगनद्वयमूर्कोविलर्मगुलेतन्मध्मस्त्रिर्विगतिहा
 नकमधुर्पथ०॥३२॥द्विष्टाहुलेत्वपनथाविहमूनतर्वैवद्वितवगतमय्यातगुलभकभर्क॥
 नभखाग्रभात्रलकावातिजपश्चर्मालेभवादिगाववटकथनयाविर्गति॥पश्चलस्यगितसगाद
 नगुलप्याकाटिदाभकुमा०कर्णनलननतिहस्मविगतद्विगर्तगे०कर्वे०॥आकल्लदद्वगाय
 हस्ममितमद्येकेकहस्मधरीयाव०पकिचलदद्विगतवृन्दकातोउपद्राकर्वे॥३३॥सम
 क्ताद्युदहस्मप्राद्याषाउहाहस्मकीकान्द॥काटिक्रतोकर्णुपार्कतक्कुलकल्लति०॥३४॥

वधुनभ्रष्टिलसिद्धिर्थातोपूजा॥३३॥ दत्तन्दारु॥ अस्त्रीयनविरुद्ध॥ निषक्का॥ एकं मुनि
कृदो॥३३॥ पद्मपद्मिनागमसुकोलकं कृद्युग्ममन्यच्च॥ आदिचवन्नाभरुहोक्तदय
प्रश्नकनमृदिष्ट॥३४॥ यदुनमयन्दुतद्वोरुगुञ्जुषिचक्रमलत॥ मत्वा निविद्यनाजवि
उन्हासविलम्बवावदान्ति॥३५॥ स्मरुगगमृकिप्रवधनि काच्चाटपृष्टिपवनिटुरुषपिण
कदिक्पुहृतिदिक्वादितामस्रकृशुषिषणाननरुव॥३६॥ अस्त्रनदिशतीं गमृययचतु
ष्का॥ लोपुनस्तादथ अस्त्रिंशतमधयत्त्वथलवान्नामविमानद्वग॥ अगमृययलग्निका
लमिति तन्नामस्रद्वयमावृकाद्वदिनालियदितीरवक्त्रुक्रमीयानिव॥३७॥ यदु३८
लद्वयं दिनलवकमध्यास्यतन्नामविद्विनामपवितावच्चमतिमान्नामलीलानीं
स्थानिरमूपमिति र्थककनयुलं उमाद्वतन्नामादपि गन्धवलीकृद्युक्तिमिति॥३९॥ दिवस्यमध
मयुलं दिनरुगकं धमध्यामृधकदावत्त्वान्पवित्रद्वाधोमान्नाम अयतिनाम लवनदक्ष
रुहये अम्बिन्विर्द्ववति कृद्युविरुपयके॥४०॥ षाठधकतमधममृयपन॥ यपिव

द्वितीयां । ए क क व व न ता न न वि द्वा ग म पु ल क पु मि ति तु व ना ७ स्या ७ ॥ ४१ ॥ अक्षान गता
 ण क त्व न गु (७) क्ष य स्य ति श्र्य क स्मिती ॥ त स्तु या रु य ता रु व र्द्ध त क र्वा का द्वा ध य वि द्वा थ ७ त त्वा भ प
 नू षे ४ य ना य क न ता क र्द य षट् द्वो ष ड दा द्वि तु (७) द्वि पा नू गु लि ता न स्मि न्ना ४ ष उ मी नि री ॥ ४२ ॥
 क शान् न प्र पु न स्त क वि त ति च स्तृ भ न वृ र्क री व्या मा र्द्ध न तु क ष्टि का प न नि य दृ द्वा ज मा र्क ण ला ४ ।
 त दृ द्वा द ल म ध्य दृ ४ य न नि य दृ द्वा द भ ष र्द्ध दृ ४ क य द्वा म जि र्ना म क स्य वि णि षे यून क ली (७) ४
 पु न ४ ॥ ४३ ॥ त त्सी व र्द्ध क द ला य का लि न थ य ७ क य र्द्ध म ष न वि ता स्या र्द्धि ण न व वि स्तृ वा क्मि य
 ता द्वि ध्व न र्क व र्दि ४ । स्तृ व्या म पु मि ता च्चा ता मि द न म थ र्क र ता क र्णु र्क । क र्द्ध न क ण न वि द्वा म दृ
 द ल र्क य द्वा व पु र्द्धि र्द्ध त ४ ॥ ४४ ॥ क्ष य स्या म जि र्ना ण क ष च पु न ४ मी व द्वा मा र्क न दी ॥ जो न क स्य
 गु (७) द्वि र्द्धि र्द्ध क न गु व्या र्द्धि ता त्या व र्द ७ ॥ य दी म न य व् दान दि च्छ ल य र्दी दि क्षा ल मा ल ण ता र्द्धि क ष
 ष्ट गु (७) ४ स्तृ ती य मि लि ते न द्वा म क र्णु र्क ७ ॥ ४५ ॥ दि क स्तृ गु य र्म म थ य च्छ पु न स्त य र्म मा य
 त द य प वि मा च्छ म (७) ष भ व । सी या त ता पु न ग र्ता य त थ ७ ॥ स्तृ य र्म षा ष र्क त्व प न थ दि ति कृ णु नू प ॥

४६॥ प्राग्मदिकृष्णाय मरुताय याय स्वा यातीतन कर्तुं न वै । प्रागग्रिकाय मिमथा निदयया
कृष्णवर्णमरुतमय कर्तुं ॥४॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥

दग्भूनिवमानाद्यष्टपर्वता॥१२॥क्षयमखार्गिगुरुलीयअस्थीद्विधादिखातकृतनवमूवृ४।
द्विधादिकक्षयविविधैर्भिर्गोत्रैर्नमस्तुर्गखननैर्नवृद्धै॥१३॥विभग्धनार्क०युजाविनातिक्रय
स्यदृष्टिर्गुल्लभदिकक्षा।खातयथर्कखल्लभखलायिक०अपिकृष्णगमवादिदृष्टो॥१४॥यम्
ईयस्यविभगुमुखीक्षयसूतार्थकक्षतप्रकारागुल्लेखावायीतनपक्षकानीसर्गकयथैवईनम
विरस्य॥१५॥वदिर्वेदनयाकायिदक्षदक्षपदानीतिवीक्षाकृतीयनाश्चैकल्यकात्रादक्षवद
रुलीगतनयल्लक्षणाभि॥कुरुंवेदद्विदस्मायततमदिरुपात्तयद्यथादि।याथायवदहस्रसमन्निः
गिर्विद्वत्तरातिरुयात्यसाद॥१६॥सुपनसर्वकृष्णनीरुताय४सर्वमिद्विद४०००यक
सुमुतिगोवर्धेक्षीतयथयय॥१७॥विस्मादगुलीसममाद्यमखलान्नयावृष्टि४खातमवानिहवि
दि४।आन्यादिनील्लयगुनस्रहृति४कविहृतीभूखयाविनादिती॥१८॥क्षयद्यासस्यचयुर्वि
क्षानाथनकुरुवायगल४॥रुवतिममन्नास्रवत४केशिर्वांसस्यसुय्योक्ष॥१९॥आभययुर्वि
क्षतिधाविरुक्तिमयगुनमीदलरागविहृता४।आद्याद्यताकोपयथासुनागवदानीमाना

। त्रिदधः कुमलः ॥ ३० ॥ ईद्वयवदनुः ॥ यद्वत्तवेचुर्पचस्यर्भोखलाः ०० तनयप्रथपद
 ०० ॥ ३१ ॥ शुभमिमीकलवतः ॥ तदिष्टलवाथशुभः ॥ पनात्रुथवाविसृतिमिमीता ॥ ३२ ॥
 प्रउगविष्टुतान्नाथवेकिंकवलभखलाः ॥ शुभमिदिकः ॥ शुभिमरुजनितादृगमकृतिः ॥ ३३ ॥ क
 शुभ्यासदवायताथवितार्मीजनशुभवशुर्विर्भोजनवतापविधिनाथानिःसमन्नायताः ॥ तावन्मा
 ननिद्रमकनविगतीकुभुनभतर्षितासाः ॥ अष्टकदलद्वयतनूविवावाधत्कपयकृतिः ॥ ३४ ॥
 मधवनिखिद्रतान्दिकस्तुसंस्तुधियमधिभखलभवमधराः ॥ यमदिशिगणिदिकमन
 वीतिवग्मवन्तुदिशितनेकुपुववक्ताः ॥ ३५ ॥ आनिर्मुलनालमूर्ध्वीतलान् ॥ ३६ ॥ आर्ककेष्टिल
 यमन्तः ॥ मन्धुः ॥ आनीकुः ॥ पुनैवयानिस्तथस्मैः ॥ ३७ ॥ नाः ॥ ३८ ॥ नाः ॥ ३९ ॥ नाः ॥
 यद्गाराविः ॥ ४० ॥ कुः ॥ पुमः ॥ अतः ॥ कुः ॥ अकारकयारुमानाः ॥ कुः ॥ अर्कोः ॥ गतः ॥ धिनिष्टः ॥ सवाभा
 स्याधीमतीकलानीयः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 विद्याः ॥ यन्त्रैः ॥ नवाः ॥ यनः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

तादृशिरुदः ॥ यद्वकुभरुदगनुदनेपुष्टमधः ॥ दिवद्वागामोः ॥ नाननलवपूः ३४ ॥ यतीयरु
 राकाः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 कटामपनारितार्थः ॥ शुभानुगतुसुधियः ॥ कुमतिस्तुः ॥ आथनतत्वमवधायिमायमशेः ॥ शुभानिष्ट
 पुमः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 याहिक्कः ॥ ख्यातिमान् ॥ वन्धूनीयविपालकात्यपगतोः ॥ मितवानोः ॥ मिखतनाम्नायविभयदनगवि
 तावाभलकुभकृतिः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 द्दलीसमाफः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 गतिदुयः ॥ यवागालगुः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 गामिकः ॥ समामेधनवकीर्तः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 त्वयः ॥ पिशुनः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

टववय। कृदितादवलीग्रनी, पुक्कादिप्रविकर्षोव॥ ॥ अमस्तुदवगवका, कुक्षिना
 नाय॥ ८ स्मृत॥ ॥ समिधं नूददेवली, पृथानिजयस्मृता॥ अस्तुभामदेवली, ध्रुवैश्च
 पुक्कादि॥ ८ स्मृत॥ ॥ अस्तुलीगधलक्ष्मी॥ ८ प्रकुदवीध्रुवदवका॥ ८ अस्तुवन्॥ ८ अस्तुया, पुक्का
 भविष्णुजायति॥ ८ पविर्गदवतावद, वृक्षद्वयसमरुमः॥ ८ द्रुवदवका॥ ८ अस्तुवन्॥ ८ अस्तुया, पुक्का
 स्तुका॥ ८ वृक्षाविष्णुस्त्वधमन, स्त्रीसीवीर्यकुक्षिस्थान्, गृप्यवायस्त्वधयति, वृक्षासीमाङ्कन
 क॥ ८ पुजायति यन्स्त्वली, वीक्षस्त्वदिस्त्वस्मृत॥ ८ दक्षायमद्वस्त्व, पृथराणुसदवता
 । वीदिपायप्रजगन्ध, धूमस्तुयमदवता । द्वाताविनायकाङ्कय, ज्ञानस्त्वद्वदवता॥ ८ रुधम
 द्धुवर्द्धय, पर्यवक्कादिदवता । कृणुमध्वधृतिस्त्व, ति॥ ८ सीपूष्णं गणिमधुली॥ ८ अथनीलायलारु
 से, तन्मध्वतत्वमीश्वरी, र्णखकुन्दन्दीकाङ्कगदीवदिमसन्निरी । सवर्तमसृतीदिष्टी, आयनक
 वमध्वतः॥ ८ आयायनपव॥ ८ प्रामान्दी, कर्णयवमादने॥ ८ अग्निवविजानीया, वृक्षासीययगमूद
 ॥ दातायेवमूमादवी, काकायेवपव॥ ८ शिव॥ ८ प्रवर्तदेवता, स्त्वात्राग्निकार्यं समानक॥ ८ अह्ना

ननुथादवी, कामयत्सूटधगसा । गतवर्षसदस्त्रालि, सकवद्वृक्षवादस॥ ॥ आदृति
 विविधविद्या, स्मृगादेसीयस्त्वकी । सर्वयस्त्वपुक्काद्वीत, कामरुदयथाजय॥ ८ कनिष्ठतर्कनी
 यार्द्ध, सध्वमानामिकाद्वी । अंगुष्ठयाजिरीगलि, मायर्णं भक्तिदेमृगा॥ ८ अंगुष्ठतर्कनीमध्व
 नामिकायागुथाजिरी॥ ८ कनिष्ठानरी, देसीवध्वभादनमाददे॥ ८ सर्वकुली, रुमीथाईस्त्वक
 नीस्त्वकवानन॥ ८ गच्छद्वुकिदेकामे, पृष्टिकामीयस्त्वकी॥ ॥ दृतस्त्वकार्षिकारुमि॥
 दीवध्वमध्वनस्त्वध । पुक्किमागद्वृतिद्व॥ ८ पुस्त॥ ८ पायसस्यल॥ ८ मयुगोणुपुमाननद॥ ८ अ
 दनगुठादने॥ ८ पध्वमवस्त्वर्द्धरुक्षाङ्कं गजानीमृष्टिमीमिरी॥ ८ अस्त्वकी, कृतिथेव, मृष्टिम्
 स्त्ववतामथ॥ ८ खणुययीगुमूलानी, रूतानीस्त्वपुमानत॥ ८ गमार्द्धमावृज्जनी, स्त्वस्त्र
 नियध्वदामथ॥ ८ आदृतिमा, कर्षिगनी, स्त्वदस्त्वतलसीरुदी॥ ८ क्षायावर्षिकामनी, ल
 गानामीगुलद्वयी॥ ८ पृष्ठीपर्यस्त्वमानन, समिधनादनीगुली॥ ८ वृद्ववन्दनकाभिलि, कस्तुरी
 यद्वकदर्दमी । बलावसमितामतान्, गुगुर्नूवदवास्त्विव॥ ८ स्क्वातानामध्वमीरागी, शङ्काया

द्विधिनायनी ॥ ॥

गगः ॥ धजादिमलयदान ॥ ॥ उं अद्य वा नो ह ॥ उं अद्य दि ॥ उं रु
 गवदवदवधते लो वध ल कुरु कुरु यथ गच्छे च जाद का ली यता
 मय सुद ना (ष्य गं महा धंडं दया लु त्वा वायं च न किं गं किं किनी नव
 संपन्न मयु म कु गु गृ षि गं न गे न व वि धन नं सवे य चा य नि स्मि
 तं न गे न व वि धन न सवे द वा य नि स्मि तं स वे त्स न स रु मे कं भा द
 नं दि वि ना ज च त् ॥ धजा मा ल कुरु ते दि वं य थ प्रा सा द मा न गः ॥ य थ जा
 छ नं वा पि दि गि दि कू नि व भ य त् ॥ स वि मा न स ह्यि ण दि वं ध ज स

(समरु न । क ल्या य ग स रु म्ना गं भा द नं दि वि वि भू व त् ॥ धूर्वा रु त्र च यी
 ग तु रु क्तै यो धि म कं ण कं ॥ आ (ग्ने त्र कं ह त्रि द्वा यो याम्य ने त्रि स क्तै पू
 का भा य क्ता म भि र्गं रु क्तै पी त वे व ध न प्र दं ॥ ना छ प्रा र्थ ग था व
 ष्ठ न क व रुं ध रुं ष वा के व ल्या क षि धं रु स्या त्क ष्णः ण प्र वि ना ण न
 स र्व का म वि वि रु म धं रु दान म ह रु ली प दा दि व स ग रु नी पा नि र्म
 ख्या गु था व गी ॥ गा व रु र्म स रु म्ना नि वि भू भो कं म ही य त ॥ य रु मा न स
 शी य रु म वी रु त् मा न स हि तः धं रु म गं का म रु म पी म रु व दा ध्ये य न
 आ न ण मे य शी रु भ म रु क रु ति ना ना य ध प्रा सा दी पा नि स व र्ण क ल स व

कुरुणादिवाला

दिगवर्जुय गाय. आयात्र गायन. सिवदिगम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

214015E

इति यावत्
तस्मिन्मग्न
॥ २७ ॥

[illegible]

218. 火火火火火火火火火火

ᠡᠭᠦᠨᠢᠯᠤᠰ

122 212

203

नि, ध्याकास लाक्यालवृषी ॥

वदि ॥ श्रयाजवखव, वद यूग

वदियारुससचरुका

यतिवतिश्रासन॥

॥ ५३ ॥

Handwritten text in two columns, likely a list or index, written in a script that appears to be a form of Tamil or a related South Asian script. The text is arranged in two columns, with the left column containing more text than the right.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ ॐ

五 五

५३५५ ८१

244
124

1574

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१२॥१॥३

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यम नाना
दाल्याख्, कायति सउं वति

二五

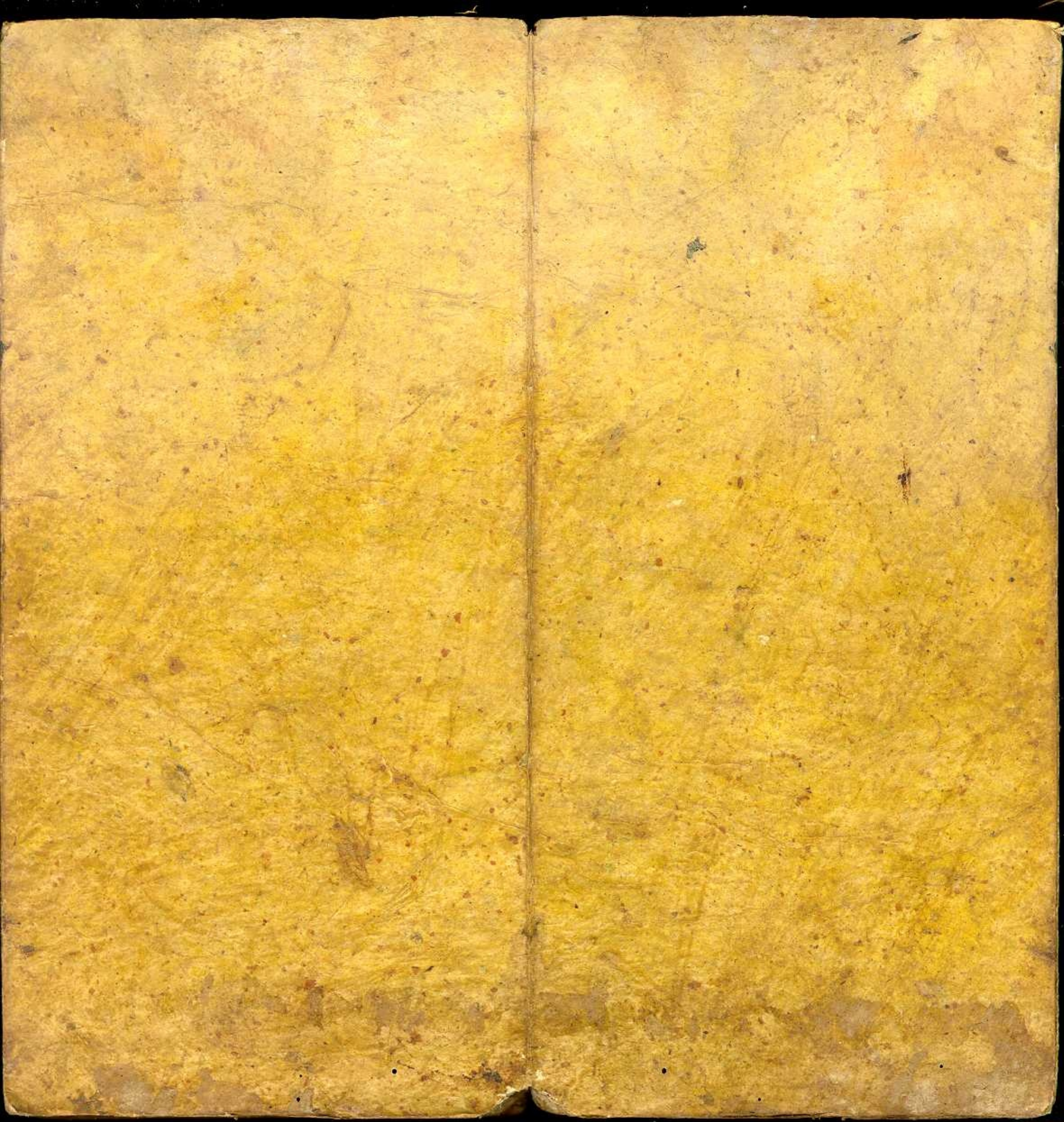
五

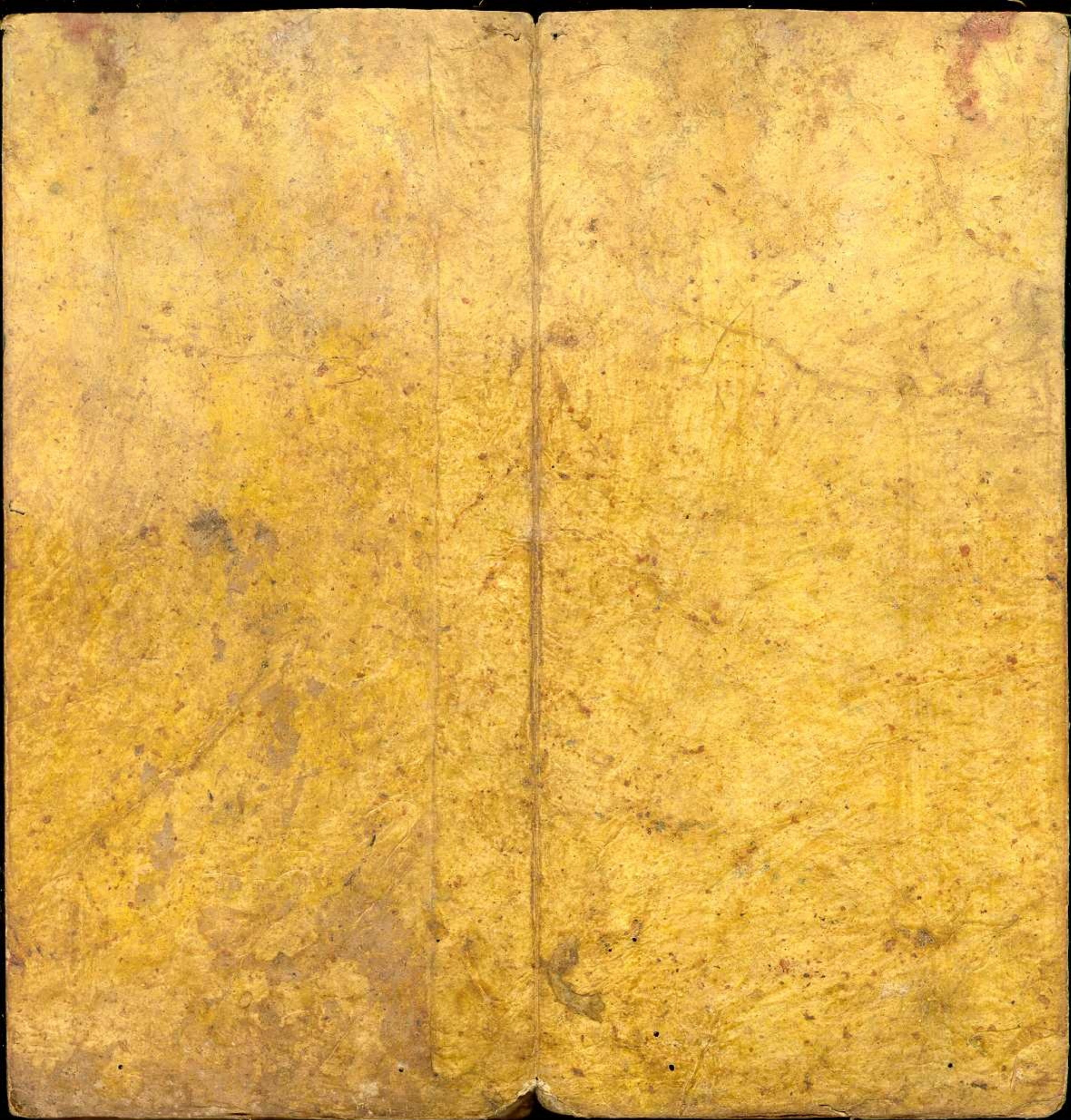
अदि

अथ नट्टपरायनकं लक्ष्मिस्तव

॥ यादवमच्छपतककृ॥



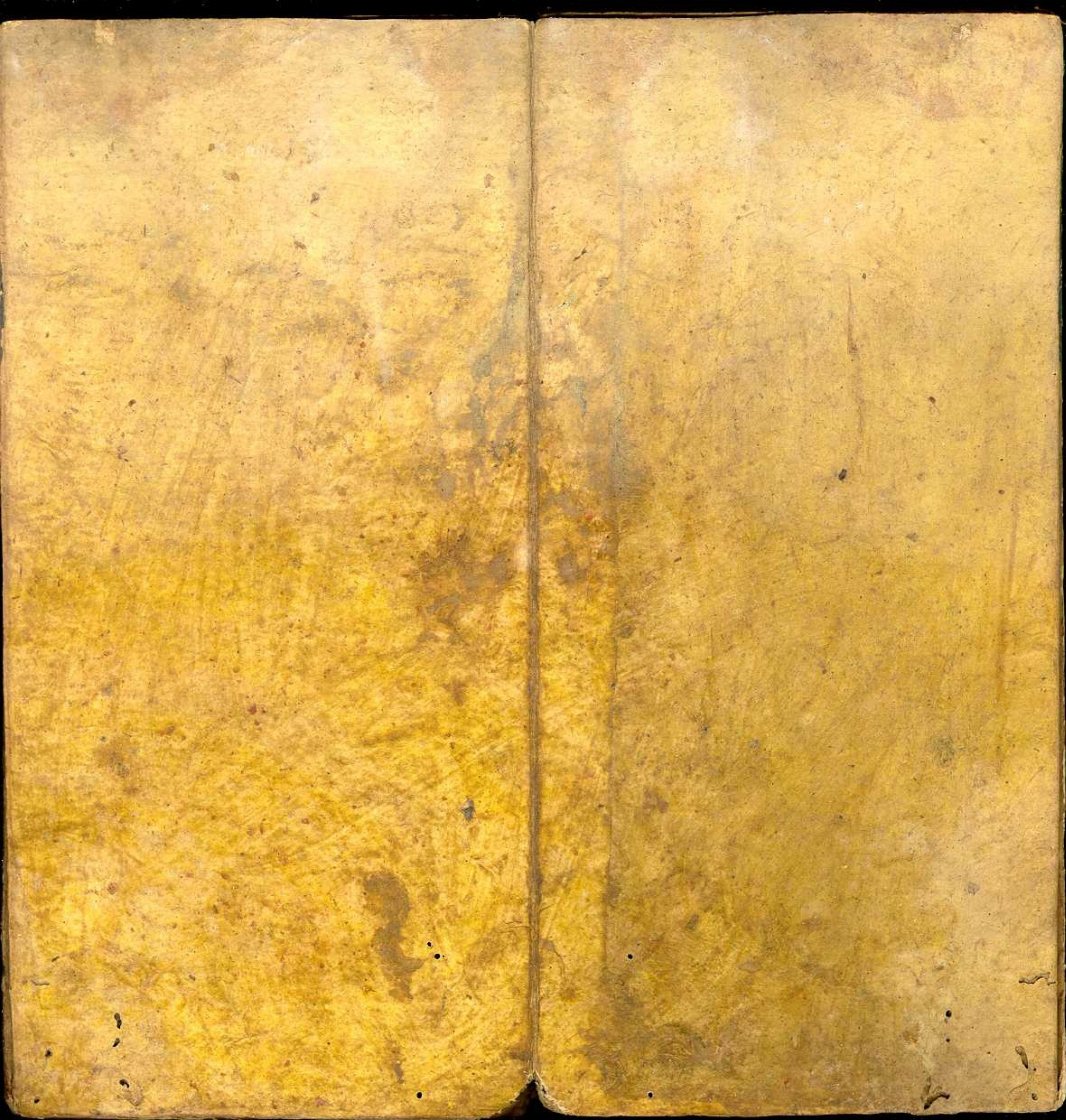
















[illegible]

मानसं न कथं न स कुम्भं न च छिन्ना विद्या धना ११ ज्ञा पय कुल नी यक न ११
नरु ॥ ३७ ॥ सनका दकं न ज्ञानं ॥ तर्जना पय कु ११ को यो सो क पा ला ११ स मा ग ना ११
सा ग ना द क प्र ११ कु ने कु यो ने क ल ११ न पु ११ ३८ ॥ प म न भ मि छि न ड न न ज्ञानं ॥ वा मि
ध मि प्र ११ कु न प म न भ मि ना वि ना प म न ना वि छि ११ कु न ना ग म स्त्री क ल ११ न कु ११ ३९ ॥
नि ११ ना द क क ल ११ न ज्ञानं ॥ रि म द न म न के ना ११ ज रि वि ११ कु प व ना ११ नि ११ ना द
क प्र ११ कु ने व कु ने क ल ११ ना रि ॥ ३९ ॥ अ भ स व ना र्थ ड न ज्ञानं ॥ स व ना भ म प्र ११ कु ने क ल
११ न स न भ मि ना स प म ना रि वि ११ कु न म प्र ११ स क व ना ११ ४० ॥ स ना व न ड न न स
ना ॥ य स व स्त्री रि वि ११ कु न क ल ११ ना य म न ड ॥ स ना स न व ना र्थ न ड ११ ना द वि ना भ ११
न ॥ ४० ॥ ४१ ११ कु न न ज्ञानं ॥ ध भो न ना न व ना र्थ न प ११ स र्थ ना म धु नि ११ य मा वि द को
नि ग मा व क व र्थि द या द म ११ ४१ ॥ नि भो ने ग थ ११ ना क स क ॥ ना मि न ना वि ना ११ य ११
व ११ ना प नि म द ११ के व र्थि य नि पा दि का ११ क्ता व न ड ड म ११ पि ११ ना र्थ य त्य नि कि

नी य द क स द्वा व र्थ न म र्थि म द व ११ म प्र ११ म ना वि य व ड ११ य स न ड नि ११ ज व
न म स न ज्ञा पि य द्वा द य म ना द य ११ ४१ ॥ स व ज्ञा प य कु र्वा न व म न व ट न रि ॥ ४१ ॥
४१ ॥ नि म ना ना न वि य ११ ॥ ग ना ११ ग थ ११ ना व नि द या य ११ ४२ ॥ कु नि म ना न म द ११ ना वि न व
लि ११ कु ना व कु मा न म कु र्वा म र्थि म ११ य ११ ४३ ॥ र ना ११ पु ना ११ पि ११ म ना ११ य ११ व स कु र्वा
र ना ११ ४४ ११ कु न म ना द न व लि म न प सा धि र्ग ११ म डि ना ग थ प ना ११ य ११ लि रि मि
कि ना स ११ ४५ ११ म द सा दि नि ११ र थ पु र्वा पि य ११ कु म क ना ११ ४६ ११ कु र्वा र ना र्थ
११ व लि न म ना न म ११ ४७ ११ नि व लि द वा व नि द ११ कु प ११ ४८ ११ ग ना ना ११ ना व न न मि द्वा
११ र्थि म द्वा द्वा द्वा ना नि ११ कु ना द ना दि कु वि कि र्थ ११ ४९ ११ म कु य ११ ५० ११ कु र्वा र ना र्थ
११ य स कु र्वा र ना र्थि द ना सु र ना ११ वि र्म कि ना ११ र ना ना म वि ना ११ व न द वा पु र्वा कि ना ना
र ॥ व ना ना ११ पि ११ म वा ११ ना द सा ११ स ना स पा ११ म प स र्थ कु र्वा स र्थ म र्थ न पा ११

[illegible][illegible]

शिवकर्मदीपिका नमो निरुपपन्नकर्मकथान १ ज्ञानिष्ठापनगत कर्मकर्मकथान १ अवस्थापन
कर्मकर्मकथान १ नायककर्मकर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १

धर्मनाम

१ कर्मनामः श्रीगणेशाय नमः ॥ सु १४ धी पदकर्मकथान १ पदकर्मकथान १ पदकर्मकथान १ पदकर्मकथान १
जामिकाप नमो लोकात्मकसमस्तवशानात्मनो विष्णवे नमः ॥ धर्मनाम ॥ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १
मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १
मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १
मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १ मायककर्मकथान १

शिवकर्मदीपिका ३६८